सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत - 1

कक्षा 6 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

मार्च 2006 चैत्र 1927

PD 200T SC

ISBN 81-7450-522-9

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन सी ई आर टी कैंपस
श्री अरविद मार्ग
नई दिल्ली110 016

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन होस्डेकेरे
बनाशकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद380 014

सी डब्ल्यू.सी कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता700 114

सी.डब्ल्यू.सी कॉम्प्लैक्स
मालीगाव
गुवाहाटी 781021

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*पी.राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य सपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार अधिकारी	:	*गौतम गांगुली*
सहायक संपादक	:	*शशि चड्‌डा*
उत्पादन अधिकारी	:	*विकास ब. मेश्राम*

सज्जा, आवरण एव चित्राकन

आर्ट क्रियशन्स

एन सी ई आर.टी. वाटरमार्क 80 जी एस.एम पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग मे सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा मोडेस्ट प्रिन्ट एण्ड पैक, सी-53, डीडीए शेड, ओखला इडस्ट्रियल एरिया, फेस-I, ओखला, नई दिल्ली 100 020 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चो के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोडा जाना चाहिए। यह सिद्धात किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तके इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास मे हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) मे वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा मे काफी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलो के प्राचार्य और अध्यापक बच्चो को कल्पनाशील गतिविधियो और सवालो की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवो पर विचार करने का कितना अवसर देते है। हमे यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आजादी दी जाए तो बच्चे बड़ो द्वारा सौपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते है। शिक्षा के विविध साधनो एव स्रोतो की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चो को सीखने की प्रक्रिया मे पूरा भागीदार माने और बनाएँ, उन्हे ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दे।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिदगी और कार्यशैली मे काफ़ी फ़ेरबदल की माँग करते है। दैनिक समय-सारणी मे लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल मे चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनो की सख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्याकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल मे बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने मे कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणो में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चो के मनोविज्ञान एव अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न मे यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहो में बातचीत एव बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियो को प्राथमिकता देती है

एन.सी.ई.आर टी इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर नीलाद्री भट्टाचार्य की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास मे कई शिक्षकों ने योगदान किया। इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यो के आभारी है। हम उन सभी संस्थाओ और सगठनो के प्रति कृतज्ञ है जिन्होने अपने ससाधनो, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमे उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एव उच्च शिक्षा विभाग, मानव ससाधन विकास मत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी पी देशपाडे की अध्यक्षता मे गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते है। व्यवस्थागत सुधारो और अपने प्रकाशनों मे निरतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी ई.आर.टी. टिप्पणियो एव सुझावो का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनो में मदद ली जा सके।

निदेशक

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और
प्रशिक्षण परिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सलाहकार

कुमकुम रॉय, *एसोशिएट प्रोफेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य

जया मेनन, *रीडर*, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

पी.के. बसंत, *रीडर*, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, मानविकी व भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

रनबीर चक्रवर्ती, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विश्वमोहन झा, *रीडर*, इतिहास विभाग, आत्माराम सनातम धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

एन.पी. सिंह, *प्रधानाचार्य*, राष्ट्रीय प्रतिभा विकास विद्यालय, नई दिल्ली

शुचि बजाज, *पी.जी.टी.* (इतिहास), स्प्रिंगडेल्स स्कूल, नई दिल्ली

गौरी श्रीवास्तव, *रीडर*, महिला अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर*, सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

हिंदी अनुवाद

हीरामन तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

नूतन झा, *टीचर*, मीराम्बिका स्कूल, श्री अरविंदो आश्रम, नई दिल्ली

पी.के बसंत

सीमा एस. ओझा

सदस्य-समन्वयक

सीमा एस. ओझा, *लेक्चरार*, सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिको को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

क्यों पढ़ें हम इतिहास?

इस साल छठी कक्षा मे तुम इतिहास पढ़ोगे। कुछ और विषयो के साथ इतिहास समाज विज्ञान का हिस्सा माना जाता है। समाज विज्ञान हमे अपनी सामाजिक दुनिया की कार्यप्रणाली को समझने मे मदद करता है। समाज विज्ञान हमे जीवन के कई पहलुओ के बारे मे बताता है: भूगोल के बारे मे, अर्थव्यवस्था के चलने के बारे मे और सामाजिक व राजनीतिक जीवन की व्यवस्था के बारे मे। इतिहास के अतिरिक्त समाज विज्ञान के अन्य विषय प्राय: आज की दुनिया के बारे मे ही बताते है। इतिहास बताता है कि आज की दुनिया कैसे विकसित हुई। यह हमे वर्तमान के अतीत के बारे मे बताता है।

हम जिस समाज में रहते है उसके परिवेश की हमे आदत पड जाती है। हम यह मान लेते है कि दुनिया हमेशा ऐसी ही रही है। हम भूल जाते है कि जीवन हमेशा वैसा नही था जैसा हमे आज दिखता है। उदाहरण के लिए क्या तुम ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हो जहॉ आग न हो? कैसा रहा होगा एक ऐसी दुनिया मे रहना जहाँ खेती-बाड़ी का आविष्कार न हुआ हो? या उस ज़माने में जिदगी कैसी रही होगी जब लोग लबी यात्राएॅ तो कर लेते थे लेकिन न सड़के थी न रेलगाड़ियॉ? इतिहास हमें उन अतीतो की ओर ले जा सकता है।

इस रूप मे इतिहास एक रोमांचक यात्रा है। यह यात्रा तुम्हे समय और ससार के आर-पार ले जाती है। यह ले जाती है हमे एक दूसरी दुनिया में, एक दूसरे युग मे जब लोगों का जीवन अलग था। उनकी अर्थव्यवस्था और समाज उनकी मान्यताएँ और विश्वास, उनके भोजन और कपड़े, उनके घर और बस्तियाँ, उनकी कला और शिल्प-सब कुछ भिन्न था। इतिहास ऐसी दुनिया के झरोखे खोल सकता है।

तुम अपने कधे झटक कर कह सकते हो 'हम ऐसी बीती बातों को लेकर क्यो परेशान हो जो अब नही हैं, ऐसे अतीत जो गुजर चुके है।'

लेकिन इतिहास सिर्फ कल के बारे मे नही है। यह आज के बारे मे भी है। आज हम जिस दुनिया मे है उसे बनाया है हमसे पहले आए लोगो ने। उनके जीवन के सुख-दुख, अपने युग की समस्याओ से जूझने की उनकी कोशिशे, उनकी खोजे और आविष्कार, इन्ही के ताने-बाने मे तो मानव समाज बदला। प्राय: ये बदलाव इतने धीमे और मामूली होते थे कि उस युग के लोगो को इसका पता भी नही चलता था। बाद मे जब हम अतीत पर नजर डालते हैं, जब हम इतिहास पढ़ते है तब हमे अंदाजा लगता है कि ये बदलाव कैसे आए। तभी हम लबे अतराल मे धीमे-धीमे होने वाले परिवर्तनो का असर देख पाते है। इतिहास पढ कर हम समझ पाते है कि आधुनिक दुनिया अनेक सदियों से हो रहे बदलावों का परिणाम है।

इस साल तुम जो पुस्तक पढ़ोगे वह हमे सबसे प्राचीन अतीतो की ओर ले जाएगी। अगले दो वर्षो मे तुम्हारी यह यात्रा बाद के काल खंडो से गुज़रेगी। इस किताब मे तुम सिर्फ राजाओ-रानियो, उनकी विजयो और नीतियों के बारे मे ही नही पढ़ोगे। तुम पढ़ोगे शिकारियो और कृषको के बारे में, शिल्पकारो और व्यापारियों के बारे मे। तुम जान पाओगे आग के बारे मे, लोहे के आविष्कार के बारे में। गेहूँ तथा धान की खेती कैसे होने लगी, गाँव और शहर कब बसे? तीर्थयात्रियो और सतों, इमारतों तथा चित्रो, धर्मों और विश्वासों के बारे मे भी तुम पढ़ोगे। तुम पाओगे कि इतिहास सिर्फ महान लोगों की जीवनी नही है। इतिहास सामान्य स्त्रियों, पुरुषो और बच्चो के जीवन और क्रियाकलापो के बारे मे भी है। इतिहास सिर्फ राजनीतिक घटनाओ के विषय मे नहीं है, बल्कि वह समाज मे हो रही हर चीज के बारे में है।

इस किताब में तुम्हे यह समझने में मदद मिलेगी कि इतिहासकारो को अतीत के बारे मे कैसे पता चलता है। कुछ-कुछ जासूसो की तरह, इतिहासकार पुराने जमाने मे रहने वालो द्वारा छोड़े गए सुरागो और चिह्नों का अध्ययन करते है। अतीत का हर अवशेष-पत्थर के औजार, पौधों के अवशेष, हड्डियाँ, लिखित सामग्री और चित्र, आभूषण और उपकरण, अभिलेख और सिक्के, इमारते और मूर्तियाँ, बर्तन- हमे पुराने ज़माने के बारे मे बता सकता है। इतिहासकार और पुरातत्त्वविद् इन स्रोतों का अध्ययन कर इन्हें समझने की कोशिश करते हैं। इस किताब मे ऐसे कई स्रोत दिखाए जाएँगे और साथ-साथ तुम यह भी पता कर पाओगे कि इतिहासकार इनका मूल्याकन कैसे करते हैं।

लेकिन इतिहास का अध्ययन हम सिर्फ़ अतीत को समझने के लिए नहीं करते। इतिहास हमे कुछ योग्यताएँ और कौशल विकसित करने मे भी मदद करता है। अतीत की दुनिया मे समाने के लिए, एक ऐसी दुनिया के लोगो को समझने के लिए, जिनका जीवन हमसे भिन्न था, नए तरीके सीखने पड़ते हैं। जब हम यह करते है तो हमे अपना दिमाग खोलना पड़ता है और वर्तमान की छोटी-सी दुनिया से बाहर निकलना पड़ता है। यह एक शुरुआत होती है दूसरे लोगो के क्रियाकलाप और सोचने के तरीको को समझने की। हमारे लिए यह एक शिक्षाप्रद और संवर्धक अनुभव हो सकता है। इसलिए, अपने कंधे झटकने के पहले तुम स्वय से एक सवाल पूछो: क्या मै यह जानना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ? क्या मै यह समझना चाहता हूँ कि समाज कैसे चलता है? मै जिस दुनिया मे हूँ क्या उसे मैं जानना चाहता हूँ? अगर तुम चाहते हो तो तुम्हें जरूरत होगी यह जानने की कि हमारा समाज कैसे विकसित हुआ और कैसे हमारे अतीतो ने हमारे वर्तमान को रूप प्रदान किया।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार
इतिहास

आभार

यह पुस्तक कई महीनो से लिखी जा रही थी। कई स्कूल शिक्षक, कॉलेज और विश्वविद्यालयो के विशेषज्ञ और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद के सकाय सदस्य इस पुस्तक को तैयार करने वाले दल मे शामिल थे। चित्रो का चुनाव करने मे और अभ्यास के प्रश्न बनाने में इस दल के सभी सदस्यो ने सहयोग किया है। विभिन्न मुद्दो पर हमने आपस मे लंबी और गहन चर्चा की ।

हमे अपने नन्हे पाठकों - अपूर्व अवराम, मल्लिका विश्वनाथन और मीरा विश्वनाथन के सुझावों और टिप्पणियो से बहुत फ़ायदा हुआ। पुस्तक लिखने की प्रक्रिया मे इसके प्रारूपों पर कई लोगो ने सुझाव दिए। हमने उन्हे पुस्तक मे समाहित करने की कोशिश की है। खासकर हम राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यो के प्रति आभारी है। उन्होने कई सुझाव दिए। इस पुस्तक के प्रारूप पर आलोचनात्मक सुझावो के लिए हम प्रोफ़ेसर रोमिला थापर, उमा चक्रवर्ती, जायरस बानाजी, उपिन्दर सिह, एकलव्य के सी. एन. सुब्रह्मण्यम और मेरी जॉन के प्रति आभारी हैं। प्रोफ़ेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय, प्रोफेसर कुणाल चक्रवर्ती, प्रोफेसर विजया रामास्वामी, प्रोफ़ेसर एस. आर. वालिंबे और नैना दयाल ने पुस्तक के कुछ हिस्सो के बारे मे सलाह दी। प्रोफ़ेसर नारायणी गुप्ता हमे लगातार सहयोग देती रही।

अभिलेखों, सिक्कों, स्मारको और मूर्तियों के चित्रो, पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्थलो के रेखाचित्रो तथा खुदाई में मिले मिट्टी के बर्तनो, उपकरणो और अन्य चीजो के चित्रो के लिए हम निम्नलिखित के आभारी है– महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, सुरेन्द्र कौल, महानिदेशक, सांस्कृतिक स्रोत एव प्रशिक्षण केद्र, नई दिल्ली, पूर्णिमा मेहता और अमेरिकन इस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़, गुड़गाँव, हरियाणा के सहकर्मी, के. पी. राव, हैदराबाद विश्वविद्यालय और भारती जगन्नाथन। हम गीताजलि सुरेन्द्रन तथा नेशनल मैनुस्क्रिप्ट मिशन, दिल्ली के सहकर्मियो द्वारा पाण्डुलिपियो के चित्र देने के लिए उनके आभारी हैं। कैथरीन जारीज ने हमे मेहरगढ के रेखाचित्र उतारने की अनुमति दी। बच्चों के चित्रो के लिए हम यूनीसेफ नई दिल्ली के उमेश मत्ता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के आर. सी दास तथा स्प्रिंगडेल्स स्कूल के शुक्रगुजार है।

इस पुस्तक के मानचित्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के के. वर्गीज़ और जम्मू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के श्याम नारायण लाल ने बनाए हैं। वैज्ञानिक एव

तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के अवकाशप्राप्त अनुसधान अधिकारी (इतिहास एवं पुरातत्त्व) राजेन्द्र प्रसाद तिवारी ने पुस्तक में तकनीकी शब्दों को शुद्ध बनाने मे योगदान दिया। विजय कुमार शर्मा ने पुस्तक का कॉपी सपादन किया और पाण्डुलिपि की अशुद्धियाँ दूर कीं। अनिमेष रॉय तथा ऋतु टोपा, आर्ट क्रिएशन्स, नई दिल्ली ने इस किताब की बनावट, सज्जा और टाइप सेटिंग का काम किया। हिंदी टाइपिंग का काम विजय कम्प्यूटर ने किया। हम इन सबके कृतज्ञ हैं।

हमने प्रत्येक चित्र के मूल स्रोत का उल्लेख किया है, लेकिन अगर असावधानीवश कोई त्रुटि हुई है तो हम क्षमा प्रार्थी है। उम्मीद करते है कि इस पुस्तक के लिए ढेर सारे सुझाव आएँगे जो भविष्य मे इस किताब के बेहतर सस्करण निकालने में सहायक होगे।

इस पुस्तक को तैयार करने में सहयोग देने के लिए हम सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर* एव *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते है।

इस पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणो मे सहयोग के लिए ज्योति गोयल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; सुनयना तिवारी, *सीनियर प्रूफ रीडर* के विशेष आभारी है। प्रकाशन विभाग द्वारा हमे पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं। इसके लिए हम विशेष रूप से आभारी है।

विषय सूची

इस पुस्तक में

- प्रत्येक अध्याय मे तुम्हारा परिचय एक बालक या बालिका द्वारा कराया गया है।

परिभाषा

- प्रत्येक अध्याय को कई विभागो मे बाटा गया है।
  इन विभागो को पढने, इस पर आपस मे बातचीत करने और समझने के बाद ही अगले अध्याय की शुरूआत करो।
- कुछ अध्यायो मे कुछ परिभाषाएं दी गई है।

स्रोत

- कुछ अध्यायो में स्रोत से एक अश दिया गया है। इन्ही के आधार पर इतिहासकार इतिहास लिखते है। इन्हे ध्यान से पढकर, इनमे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करो।
- हमारे बहुत सारे स्रोत चित्रो के रूप मे है। प्रत्येक चित्र की अपनी एक कहानी है।

अतिरिक्त जानकारी

- तुम्हे कुछ अध्यायो मे मानचित्र भी मिलेगे। इन्हे ध्यानपूर्वक देखकर अपने अध्याय मे बताए स्थानो को ढूढो।
- कुछ अध्यायो मे बॉक्स के रूप मे कुछ जानकारी दी गई है। ये रोचक तथा अतिरिक्त सूचनाए है।

अन्यत्र

- प्रत्येक अध्याय के अंत में 'अन्यत्र' नाम का एक भाग है। तुम अपने पाठ मे जिन घटनाओं को पढ़ रहे हो, उन्ही दिनो दुनिया के अन्य भागो मे कौन सी घटनाए हो रही है, उसकी एक झलक दिखाने के लिए इसे दिया गया है। कही-कही 'अन्यत्र' का भाग किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के लिए भी दिया गया है।

उपयोगी शब्द

- प्रत्येक अध्याय के अत में तुम्हे उपयोगी शब्दो की एक सूची मिलेगी। ये तुम्हें पाठ मे आए महत्वपूर्ण विचारो/विषयो की फिर से याद दिलाएगी।

- प्रत्येक अध्याय के पीछे तिथियो की भी एक सूची है।
- प्रत्येक अध्याय मे पाठ के बीच-बीच मे भी कुछ प्रश्न तथा गतिविधियाँ दी गई है। पढ़ते समय इन पर भी थोड़ा वक्त लगाना।

कल्पना करो

- एक छोटा सा विभाग है 'कल्पना करो'। अब तुम्हारी बारी है अतीत मे जाकर उस समय मे जीवन का जायज़ा लेने की।
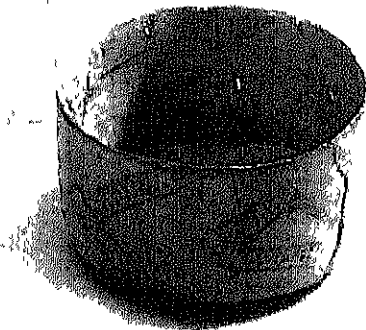
आओ याद करें

आओ चर्चा करें

आओ करके देखें

- प्रत्येक अध्याय के अत मे तीन तरह के कार्यो की सूची दी गई है - आओ याद करें, आओ चर्चा करे तथा आओ करके देखे।

इस तरह तुम्हारे पढ़ने, देखने, सोचने और करने के लिए बहुत कुछ है। हमें पूरी आशा है कि तुम्हे इसमे बहुत खुशी मिलेगी।

अध्याय 1

रशीदा का सवाल

रशीदा बैठी अख़बार पढ़ रही थी। अचानक उसकी निगाह एक सुर्ख़ी पर पड़ी "सौ साल पहले"। वह सोचने लगी कि यह कोई कैसे जान सकता है कि इतने वर्षों पहले क्या हुआ था?

कैसे पता लगाएँ?

यह जानने के लिए कि *कल क्या हुआ था,* तुम रेडियो सुन सकते हो, टेलीविजन देख सकते हो या फिर अख़बार पढ़ सकते हो।
साथ ही यह जानने के लिए कि *पिछले साल क्या हुआ था,* तुम किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर सकते हो जिसे उस समय की स्मृति हो।
लेकिन *बहुत पहले क्या हुआ था* यह कैसे जाना जा सकता है?

अतीत के बारे में हम क्या जान सकते हैं?

अतीत के बारे मे बहुत कुछ जाना जा सकता है-जैसे लोग क्या खाते थे, कैसे कपड़े पहनते थे, किस तरह के घरो में रहते थे? हम शिकारियों, पशुपालकों, कृषकों, शासको, व्यापारियो, पुरोहितों, शिल्पकारों, कलाकारों, संगीतकारो या फिर वैज्ञानिको के जीवन के बारे मे जानकारियाँ हासिल कर सकते है। यही नहीं हम यह भी पता कर सकते है कि उस समय बच्चे कौन-से खेल खेलते थे, कौन-सी कहानियाँ सुना करते थे, कौन-से नाटक देखा करते थे या फिर कौन-कौन से गीत गाते थे।

लोग कहाँ रहते थे?

मानचित्र 1 (पृष्ठ 2) में नर्मदा नदी का पता लगाओ। कई लाख वर्ष पहले से लोग इस नदी के तट पर रह रहे हैं। यहाँ रहने वाले आरंभिक लोगों में से कुछ कुशल *संग्राहक* थे जो आस-पास के जंगलों की विशाल संपदा से परिचित थे। अपने भोजन के लिए वे जड़ों, फलो तथा जगल के अन्य उत्पादों का यही से सग्रह किया करते थे। वे जानवरो का *शिकार* भी करते थे।

अब तुम उत्तर-पश्चिम की सुलेमान और किरथर पहाड़ियो का पता लगाओ। इसी क्षेत्र में कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ लगभग आठ हज़ार वर्ष पूर्व स्त्री-पुरुषों ने सबसे पहले गेहूँ तथा जौ जैसी फ़सलों को *उपजाना* आरंभ किया। उन्होंने भेड़, बकरी और गाय-बैल जैसे *पशुओं को पालतू बनाना* शुरू किया। ये लोग *गाँवों* में रहते थे। उत्तर-पूर्व में गारो तथा मध्य भारत में विंध्य पहाड़ियों का पता लगाओ। ये कुछ अन्य ऐसे क्षेत्र थे जहाँ कृषि का विकास हुआ। जहाँ सबसे पहले चावल उपजाया गया वे स्थान विंध्य के उत्तर में स्थित थे।
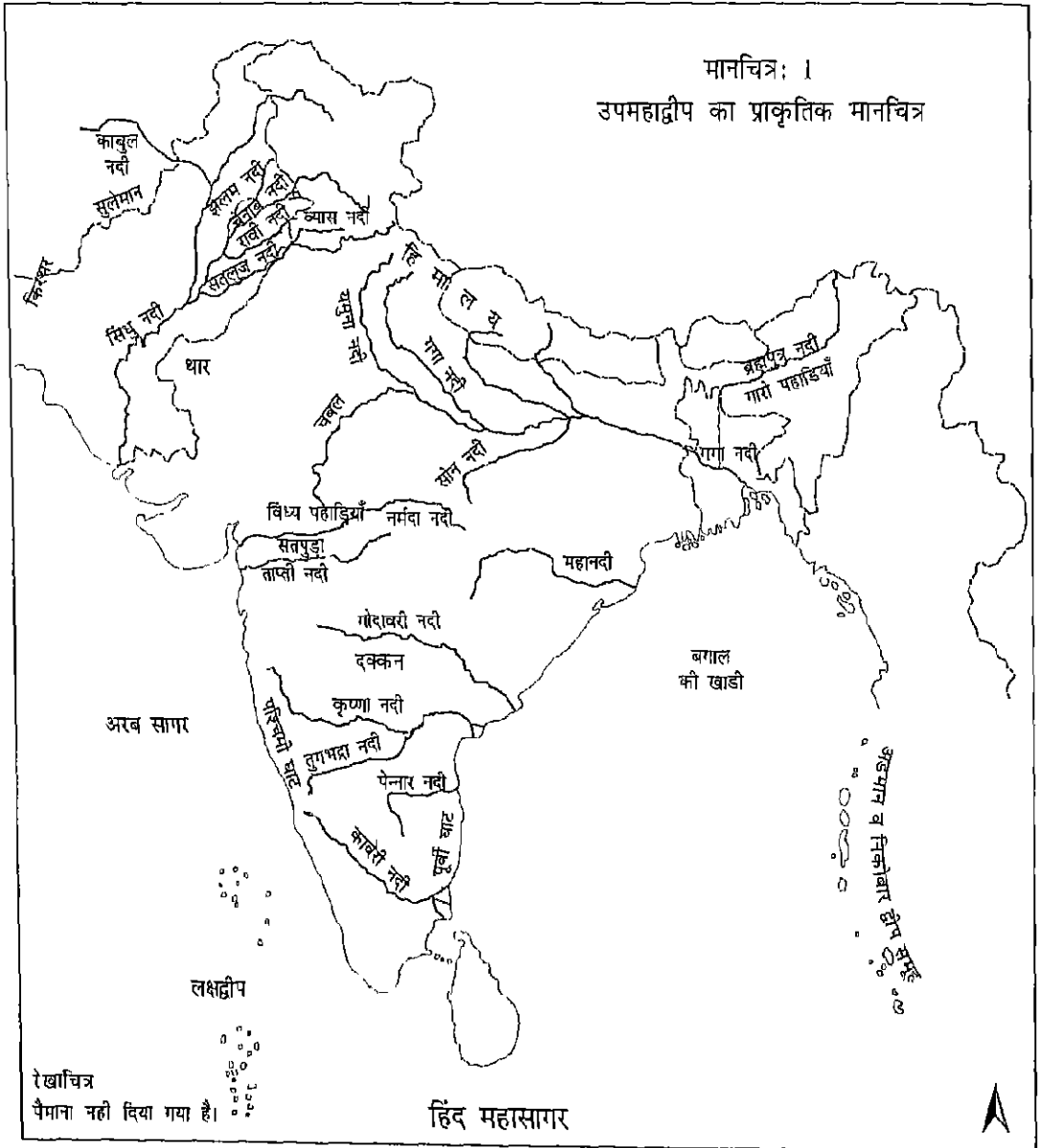
मानचित्र पर सिंधु तथा इसकी सहायक नदियो का पता लगाने का प्रयास करो। सहायक नदियाँ उन्हें कहते है जो एक बड़ी नदी में मिल जाती हैं। लगभग 4700 वर्ष पूर्व इन्ही नदियो के किनारे कुछ आरंभिक *नगर* फले-फूले। गगा व इसकी सहायक नदियों के किनारे तथा समुद्र तटवर्त्ती इलाको मे नगरों का विकास लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ।

गगा तथा इसकी सहायक नदी सोन का पता लगाओ। गगा के दक्षिण में इन नदियों के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल मे 'मगध' नाम से जाना जाता था। इसके शासक बहुत शक्तिशाली थे और उन्होंने एक *विशाल राज्य* स्थापित किया था। देश के अन्य हिस्सों मे भी ऐसे राज्यो की स्थापना की गई थी।

लोगों ने सदैव उपमहाद्वीप के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक *यात्रा* की। कभी-कभी हिमालय जैसे ऊँचे पर्वतों, पहाड़ियो, रेगिस्तान, नदियो तथा समुद्रों के कारण यात्रा जोखिम भरी होती थी, फिर भी ये यात्रा उनके लिए असंभव नही थी। अत: कभी लोग काम की तलाश मे तो कभी प्राकृतिक आपदाओ के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान जाया करते थे। कभी-कभी सेनाएँ दूसरे क्षेत्रो पर विजय हासिल करने के लिए जाती थीं। इसके अतिरिक्त व्यापारी कभी काफ़िले मे तो कभी जहाजो मे अपने साथ मूल्यवान वस्तुएँ लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहते थे। धार्मिक गुरू लोगों को शिक्षा और सलाह देते हुए एक गाँव से दूसरे गॉव तथा एक कसबे से दूसरे कसबे जाया करते थे। कुछ लोग नए और रोचक स्थानों को खोजने की चाह में उत्सुकतावश भी यात्रा किया करते थे। इन सभी यात्राओं से लोगों को एक-दूसरे के विचारों को जानने का अवसर मिला।

आज लोग यात्राएँ क्यो करते है?

एक बार फिर से मानचित्र 1 को देखो। पहाड़ियाँ, पर्वत और समुद्र इस उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमा का निर्माण करते हैं। हालाकि लोगो के लिए इन सीमाओं को पार करना आसान नहीं था, जिन्होंने ऐसा चाहा वे ऐसा कर सके, वे पर्वतों की ऊँचाई को छू सके तथा गहरे समुद्रों को पार कर सके। उपमहाद्वीप के बाहर से भी कुछ लोग यहाँ आए और यहीं बस गए। लोगों के इस आवागमन ने हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध

मानचित्र 1 दक्षिण एशिया (आधुनिक भारत, पाकिस्तान, बाग्लादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलका) और अफगानिस्तान, ईरान, चीन तथा म्यामार आदि पड़ोसी देशो को दर्शाता है। दक्षिण एशिया एक महाद्वीप से छोटा है, लेकिन विशालता तथा बाकी एशिया से समुद्रो, पहाड़ियों तथा पर्वतों से बँटे होने के कारण इसे प्राय: उपमहाद्वीप कहा जाता है।

किया। कई सौ वर्षो से लोग पत्थर को तराशने, संगीत रचने और यहाँ तक कि भोजन बनाने के नए तरीको के बारे में एक-दूसरे के विचारों को अपनाते रहे है।

देश के नाम

अपने देश के लिए हम प्राय: इण्डिया तथा भारत जैसे नामो का प्रयोग करते हैं। इण्डिया शब्द इण्डस से निकला है जिसे सस्कृत मे सिधु कहा जाता है। अपने एटलस मे ईरान और यूनान का पता लगाओ। लगभग 2500 वर्ष पूर्व उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाले ईरानियों और यूनानियों ने सिंधु को हिंदोस अथवा इदोस और इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को इण्डिया कहा। भरत नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिए किया जाता था। इस समूह का उल्लेख संस्कृत की आरभिक (लगभग 3500 वर्ष पुरानी) कृति *ऋग्वेद* में भी मिलता है। बाद मे इसका प्रयोग देश के लिए होने लगा।

ताड़पत्रों से बनी पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ

यह पाण्डुलिपि लगभग एक हजार वर्ष पहले लिखी गई थी। किताब बनाने के लिए ताड के पत्तो को काटकर उनके अलग-अलग हिस्सो को एक साथ बाँध दिया जाता था। भूर्ज पेड़ की छाल से बनी ऐसी ही एक पाण्डुलिपि को तुम यहाँ देख सकते हो।

अतीत के बारे में कैसे जानें?

अतीत की जानकारी हम कई तरह से प्राप्त कर सकते है। इनमे से एक तरीका अतीत मे लिखी गई पुस्तकों को ढूंढ़ना और पढ़ना है। ये पुस्तके हाथ से लिखी होने के कारण *पाण्डुलिपि* कही जाती हैं। अग्रेज़ी मे 'पाण्डुलिपि' के लिए प्रयुक्त होने वाला 'मैन्यूस्क्रिप्ट' शब्द लैटिन शब्द 'मेनू' जिसका अर्थ हाथ है, से निकला है। ये पाण्डुलिपियाँ प्राय: ताड़पत्रों अथवा हिमालय क्षेत्र में उगने वाले भूर्ज नामक पेड़ की छाल से विशेष तरीके से तैयार भोजपत्र पर लिखी मिलती हैं।
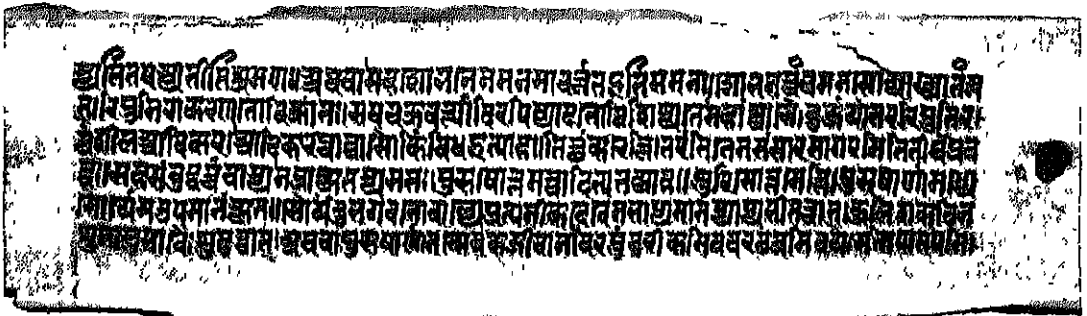
इतने वर्षों में इनमें से कई पाण्डुलिपियो को कीड़ों ने खा लिया तथा कुछ नष्ट कर दी गई। फिर भी ऐसी कई पाण्डुलिपियाँ आज भी उपलब्ध है। प्रायः ये पाण्डुलिपियाँ मंदिरों और विहारो मे प्राप्त होती हैं। इन पुस्तको में धार्मिक मान्यताओ व व्यवहारो, राजाओं के जीवन, औषधियों तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयो की चर्चा मिलती है। इनके अतिरिक्त हमारे यहाँ महाकाव्य, कविताएँ तथा नाटक भी हैं। इनमें से कई सस्कृत में लिखे हुए मिलते हैं जबकि अन्य प्राकृत और तमिल मे हैं। प्राकृत भाषा का प्रयोग आम लोग करते थे।

हम *अभिलेखों* का भी अध्ययन कर सकते हैं। ऐसे लेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहो पर उत्कीर्ण किए गए मिलते हैं। कभी-कभी शासक अथवा अन्य लोग अपने आदेशों को इस तरह उत्कीर्ण करवाते थे, ताकि लोग उन्हे देख सके, पढ़ सकें तथा उनका पालन कर सके। कुछ अन्य प्रकार के अभिलेख भी मिलते हैं जिनमे राजाओ तथा रानियो सहित अन्य स्त्री-पुरुषों ने भी अपने कार्यो के विवरण उत्कीर्ण करवाए हैं। उदाहरण के लिए प्रायः शासक लड़ाइयों में अर्जित विजयों का लेखा-जोखा रखा करते थे।

लगभग 2250 वर्ष पुराना यह अभिलेख वर्तमान अफ़गानिस्तान के कधार से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख अशोक नामक शासक के आदेश पर लिखा गया था। इस शासक के विषय मे तुम अध्याय 8 मे पढ़ोगी। जब हम कुछ लिखते है तब हम किसी लिपि का प्रयोग करते है। लिपियाँ अक्षरो अथवा सकेतो से बनी होती है। जब हम कुछ बोलते अथवा पढ़ते है तब हम एक भाषा का प्रयोग करते हैं।

यह अभिलेख इस क्षेत्र मे प्रयुक्त होने वाली यूनानी तथा अरामेइक नामक दो भिन्न लिपियो तथा भाषाओं में है।

क्या तुम बता सकती हो कि कठोर सतह पर लेख लिखवाने के क्या लाभ थे? ऐसा करवाने मे क्या-क्या कठिनाइयाँ आती थीं?

इसके अतिरिक्त अन्य कई वस्तुएँ अतीत में बनीं और प्रयोग में लाई जाती थीं। ऐसी वस्तुओं का अध्ययन करने वाला व्यक्ति *पुरातत्त्वविद्* कहलाता है। पुरातत्त्वविद् पत्थर और ईट से बनी इमारतों के अवशेषो, चित्रो तथा मूर्तियों का अध्ययन करते हैं। वे औज़ारों, हथियारो, बर्तनों, आभूषणों

बाएँ: एक प्राचीन नगर से प्राप्त पात्र।
इस तरह के पात्रो का प्रयोग 4700 वर्ष पूर्व होता था।
दाएँ: एक पुराना चाँदी का सिक्का।
इस तरह के सिक्को का प्रयोग लगभग 2500 वर्ष पूर्व होता था।
हमारे द्वारा आज प्रयोग मे आने वाले सिक्कों से यह सिक्का कैसे भिन्न है?
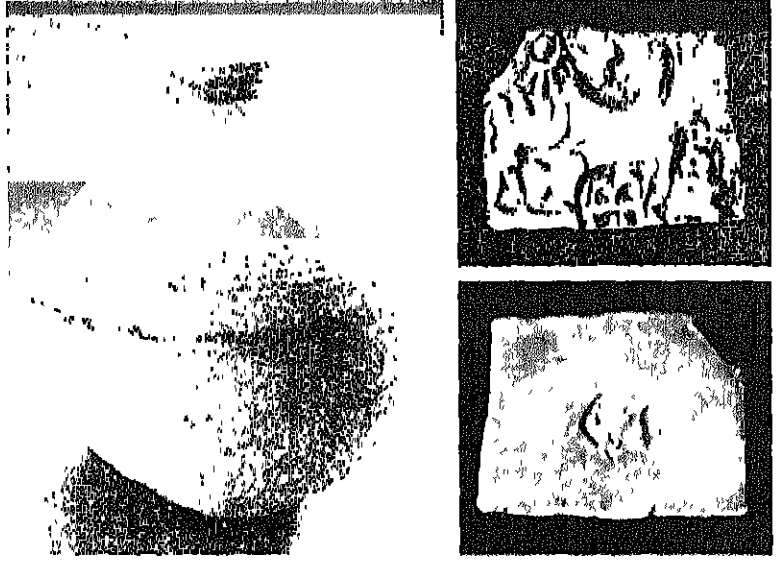
तथा सिक्को की प्राप्ति के लिए छान-बीन तथा खुदाई भी करते है। इनमे से कुछ वस्तुएँ पत्थर, पकी मिट्टी तथा कुछ धातु की बनी हो सकती हैं। ऐसे तत्त्व कठोर तथा जल्दी नष्ट न होने वाले होते हैं।

पुरातत्त्वविद् जानवरों, चिड़ियो तथा मछलियो की हड्डियाँ भी ढूँढ़ते हैं। इससे उन्हे यह जानने में भी मदद मिलती है कि अतीत में लोग क्या खाते थे। वनस्पतियों के अवशेष बहुत मुश्किल से बच पाते है। यदि अन्न के दाने अथवा लकड़ी के टुकड़े जल जाते हैं तो वे जले हुए रूप मे बचे रहते है। *क्या पुरातत्त्वविदो को बहुधा कपड़ों के अवशेष मिलते होंगे?*

पाण्डुलिपियो, अभिलेखों तथा पुरातत्त्व से ज्ञात जानकारियो के लिए *इतिहासकार* प्राय: *स्रोत* शब्द का प्रयोग करते हैं। इतिहासकार उन्हे कहते हैं जो अतीत का अध्ययन करते हैं। स्रोत के प्राप्त होते ही अतीत के बारे मे पढ़ना बहुत रोचक हो जाता है, क्योकि इन स्रोतो की सहायता से हम धीरे-धीरे अतीत का पुनर्निर्माण करते जाते हैं। अत: इतिहासकार तथा पुरातत्त्वविद् उन जासूसों की तरह है जो इन सभी स्रोतों का प्रयोग सुराग के रूप में कर अतीत को जानने का प्रयास करते हैं।

अतीत, एक या अनेक?

क्या तुमने इस पुस्तक के शीर्षक *हमारे अतीत* पर ध्यान दिया है? यहाँ 'अतीत' शब्द का प्रयोग बहुवचन के रूप मे किया गया है। ऐसा इस तथ्य

की ओर ध्यान दिलाने के लिए किया गया है कि अलग-अलग समूह के लोगो के लिए इस अतीत के अलग-अलग मायने थे। उदाहरण के लिए पशुपालको अथवा कृषको का जीवन राजाओ तथा रानियो के जीवन से तथा व्यापारियों का जीवन शिल्पकारो के जीवन से बहुत भिन्न था। जैसाकि हम आज भी देखते हैं, उस समय भी देश के अलग-अलग हिस्सों मे लोग अलग-अलग व्यवहारों और रीति-रिवाज़ों का पालन करते थे। उदाहरण के लिए आज अंडमान द्वीप के अधिकांश लोग अपना भोजन मछलियाँ पकड़ कर, शिकार करके तथा फल-फूल के सग्रह द्वारा प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत शहरो मे रहने वाले लोग खाद्य आपूर्ति के लिए अन्य व्यक्तियों पर निर्भर करते है। इस तरह के भेद अतीत मे भी विद्यमान थे।

इसके अतिरिक्त एक अन्य तरह का भेद है। उस समय शासक अपनी विजयो का लेखा-जोखा रखते थे। यही कारण है कि हम उन शासकों तथा उनके द्वारा लड़ी जाने वाली लड़ाइयो के बारे में काफी कुछ जानते हैं। जबकि शिकारी, मछुआरे, संग्राहक, कृषक अथवा पशुपालक जैसे आम आदमी प्राय: अपने कार्यो का लेखा-जोखा नही रखते थे। पुरातत्त्व की सहायता से हमें उनके जीवन को जानने मे मदद मिलती है। हालाकि अभी भी इनके बारे मे बहुत कुछ जानना शेष है।

तिथियों का मतलब

अगर कोई तुमसे तिथि के विषय मे पूछे तो तुम शायद उस दिन की तारीख, माह, वर्ष जैसे कि 2000 या इसी तरह का कोई और वर्ष बताओगी। वर्ष की यह गणना ईसाई धर्म-प्रवर्तक ईसा मसीह,के जन्म की तिथि से की जाती है। अत: 2000 वर्ष कहने का तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के 2000 वर्ष के बाद से है। ईसा मसीह के जन्म के पूर्व की सभी तिथियाँ ई.पू. (ईसा से पहले) के रूप में जानी जाती हैं। इस पुस्तक मे हम 2000 को अपना आरंभिक बिन्दु मानते हुए वर्तमान से पूर्व की तिथियो का उल्लेख करेंगे।

इतिहास और तिथियाँ

अंग्रेजी में बी.सी (हिंदी मे ई.पू.) का तात्पर्य 'बिफ़ोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व) होता है।

कभी-कभी तुम तिथियों से पहले ए.डी. (हिंदी में ई.) लिखा पाती हो। यह 'एनो डॉमिनी' नामक दो लैटिन शब्दो से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है।

कभी-कभी ए.डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का 'बिफ़ोर कॉमन एरा' के लिए होता है। हम इन शब्दो का प्रयोग इसलिए करते है क्योकि विश्व के अधिकांश देशो में अब 'क्रिस्चियन एरा' का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत मे तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था।

कभी-कभी अंग्रेज़ी के बी.पी. अक्षरो का प्रयोग होता है जिसका तात्पर्य 'बिफ़ोर प्रेजेन्ट' (वर्तमान से पहले) है।

पृष्ठ 3 पर दी तिथियाँ है, उनका पता लगाओ। इनके लिए तुम किस अक्षर समूह का प्रयोग करोगी?

अन्यत्र

जैसाकि हमने पहले पढा, अभिलेख कठोर सतहो पर उत्कीर्ण करवाए जाते है। इनमे से कई अभिलेख कई सौ वर्ष पूर्व लिखे गए थे। सभी अभिलेखो में लिपियों और भाषाओ का प्रयोग हुआ है। समय के साथ-साथ अभिलेखो मे प्रयुक्त भाषाओ तथा लिपियो मे बहुत बदलाव आ चुका है। विद्वान यह कैसे जान पाते हैं कि क्या लिखा था? इसका पता *अज्ञात लिपि का अर्थ निकालने की* एक प्रक्रिया द्वारा लगाया जा सकता है।

इस प्रकार से अज्ञात लिपि को जानने की एक प्रसिद्ध कहानी उत्तरी अफ्रीकी देश मिस्र से मिलती है। लगभग 5000 वर्ष पूर्व यहाँ राजा-रानी रहते थे।
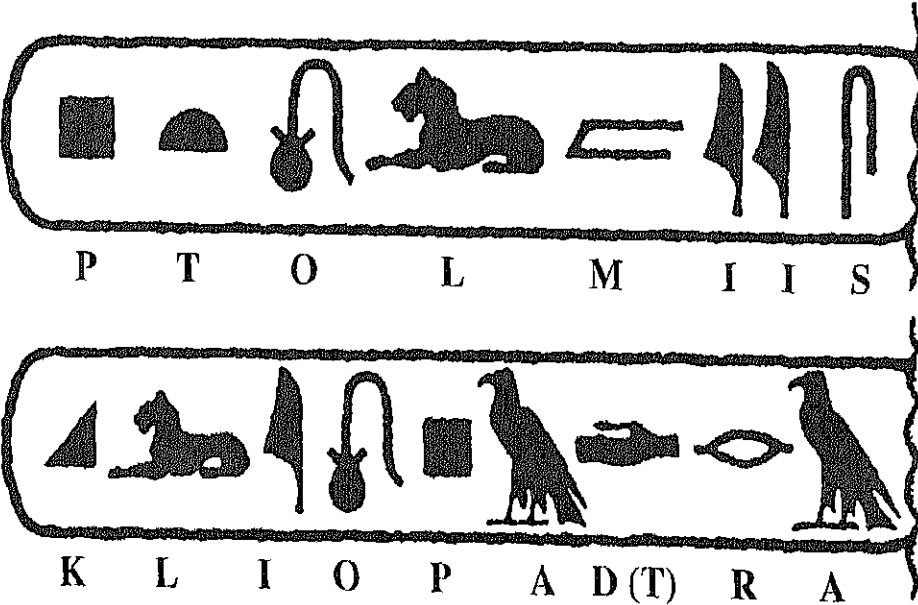
मिस्र के उत्तरी तट पर रोसेट्टा नाम का एक कसबा है। यहाॅ से एक ऐसा उत्कीर्णित पत्थर मिला है जिस पर एक ही लेख तीन भिन्न-भिन्न भाषाओं तथा लिपियो (यूनानी तथा मिस्री लिपि के दो प्रकारों) मे है। कुछ विद्वान यूनानी भाषा पढ़ सकते थे। उन्होने बताया कि यहाॅ राजाओ तथा रानियो के नाम एक छोटे से फ्रेम मे दिखाए गए है। इसे 'कारतूश' कहा जाता है। इसके बाद विद्वानो ने यूनानी तथा मिस्री सकेतों को अगल-बगल रखते हुए मिस्री अक्षरो की समानार्थक ध्वनियों की पहचान की। जैसाकि तुम देख सकते हो यहाँ एल अक्षर के लिए शेर तथा ए अक्षर के लिए चिड़िया के चित्र बने है। एक बार, जब उन्होंने यह जान लिया कि विभिन्न अक्षर किनके लिए प्रयुक्त हुए है, तो वे आसानी से अन्य अभिलेखो को भी पढ़ सके।

उपयोगी शब्द

यात्रा
पाण्डुलिपि
अभिलेख
पुरातत्त्व
इतिहासकार
स्रोत
अज्ञात लिपि का अर्थ निकालना

कल्पना करो

तुम्हें एक पुरातत्त्वविद् का साक्षात्कार लेना है। तुम उन पाँच प्रश्नों की एक सूची तैयार करो जिन्हे तुम पुरातत्त्वविद् से पूछना चाहोगी।

आओ याद करें

1. निम्नलिखित का सुमेल करो :

नर्मदा घाटी	पहला बड़ा राज्य
मगध	शिकार तथा सग्रहण
गारो पहाड़ियाँ	लगभग 2500 वर्ष पूर्व के नगर
सिधु तथा इसकी सहायक नदियाॅ	आरभिक कृषि
गंगा घाटी	प्रथम नगर

2. पाण्डुलिपियों तथा अभिलेखो मे एक प्रमुख अंतर बताओ।

- कृषि का आरभ (8000 वर्ष पूर्व)
- सिधु सभ्यता के प्रथम नगर (4700 वर्ष पूर्व)
- गगा घाटी के नगर, मगध का बड़ा राज्य (2500 वर्ष पूर्व)
- वर्तमान (लगभग 2000 वर्ष पूर्व)

आओ चर्चा करें

3. रशीदा के प्रश्न को फिर से पढ़ो। इसके क्या उत्तर हो सकते है?

4. पुरातत्त्वविदों द्वारा पाई जाने वाली सभी वस्तुओ की एक सूची बनाओ। इनमें से कौन-सी वस्तुएँ पत्थर की बनी हो सकती है?

5. साधारण स्त्री तथा पुरुष अपने कार्यो का विवरण क्यो नही रखते थे? इसके बारे मे तुम क्या सोचती हो?

6. कम से कम दो ऐसी बातो का उल्लेख करो जिनसे तुम्हारे अनुसार राजाओ और किसानो के जीवन मे भिन्नता का पता चलता है।

आओ करके देखें

7. पृष्ठ 1 पर शिल्पकार शब्द का पता लगाओ। आज प्रचलित कम से कम पाच भिन्न-भिन्न शिल्पो की सूची बनाओ। क्या ये शिल्पकार (क) स्त्री, (ख) पुरुष, (ग) स्त्री तथा पुरुष दोनो होते हैं?

8. अतीत में पुस्तके किन-किन विषयो पर लिखी गई थी? तुम इनमे से किन पुस्तकों को पढना पसद करोगी?

अध्याय 2

तुषार की रेलयात्रा

तुषार अपने एक रिश्तेदार की शादी मे दिल्ली से चेन्नई जा रहा था। रेल मे उसे खिड़की वाली सीट मिल गई, जहाँ से वह बाहर का नज़ारा देखने में मग्न हो गया। तेज दौड़ती गाड़ी से उसने देखा कि पेड़-पौधे, घर, खेत-खलिहान बड़ी तेजी से पीछे की ओर छूटते चले जा रहे थे। तभी उसके चाचा ने उसके कधे पर हाथ रख कर कहा, "पता है लोगों ने मात्र डेढ़ सौ साल पहले रेल से यात्रा करनी शुरू की थी? बस तो इसके कुछ दशक बाद आई।" तुषार सोचने लगा, कि जब लोगो के पास आने-जाने के लिए तेज रफ़्तार वाली सवारियॉ नही थी, तो क्या वे यात्रा ही नही करते थे। क्या वे अपनी सारी ज़िदगी एक ही जगह पर बिता दिया करते थे? नहीं, ऐसी बात नही थी।

आरंभिक मानव : आखिर वे इधर उधर क्यों घूमते थे?

हम उन लोगो के बारे मे जानते हैं, जो इस उपमहाद्वीप में बीस लाख साल पहले रहा करते थे। आज हम उन्हें *शिकारी-खाद्य संग्राहक* के नाम से जानते है। भोजन का इतजाम करने की विधि के आधार पर उन्हें इस नाम से पुकारा जाता है। आमतौर पर खाने के लिए वे जगली जानवरो का शिकार करते थे, मछलियाँ और चिड़िया पकड़ते थे, फल-मूल, दाने, पौधे-पत्तियाँ, अंडे इकट्ठा किया करते थे। हमारे उपमहाद्वीप जैसे गर्म देशो में पेड़-पौधों की अनगिनत प्रजातियाँ मिलती हैं। इसीलिए पेड़-पौधों से मिलने वाले खाद्य पदार्थ भोजन के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत थे।

लेकिन यह सब कर पाना बिल्कुल आसान नही था। ऐसे कई जानवर है, जो हमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकते हैं और बहुत-से जानवर हम से ज्यादा ताकतवर भी होते है। जानवरो के शिकार, चिड़िया या मछलियाँ पकड़ने के लिए बड़ा सतर्क, जागरूक और तेज़ होना पड़ता है। पेड़-पौधों से खाना जुटाने के लिए यह जानना जरूरी होता है, कि कौन-से पेड़-पौधे खाने योग्य होते हैं, क्योकि कई तरह के पौधे विषैले भी होते हैं। साथ ही फलों के पकने के समय की जानकारी भी ज़रूरी होती है।

ऐसे समुदायों मे रहने वाले बच्चो के ज्ञान और गुणो का वर्णन करो।

क्या तुममें ऐसे गुण और ज्ञान है?

शिकारी-खाद्य संग्राहक समुदाय के लोगो के एक जगह से दूसरी जगह पर घूमते रहने के पीछे कम से कम चार कारण हो सकते हैं।

पहला कारण यह कि अगर वे एक ही जगह पर ज़्यादा दिनो तक रहते तो आस-पास के पौधो, फलो और जानवरो को खाकर समाप्त कर देते थे। इसलिए और भोजन की तलाश मे इन्हे दूसरी जगहों पर जाना पड़ता था।

दूसरा कारण यह कि जानवर अपने शिकार के लिए या फिर हिरण और मवेशी अपना चारा ढूँढ़ने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाया करते हैं। इसीलिए, इन जानवरों का शिकार करने वाले लोग भी इनके पीछे-पीछे जाया करते होगे।

तीसरा कारण यह कि पेड़ों और पौधों मे फल-फूल अलग-अलग मौसम में आते है, इसीलिए लोग उनकी तलाश में उपयुक्त मौसम के अनुसार अन्य इलाको में घूमते होंगे।

और चौथा कारण यह है कि पानी के बिना किसी भी प्राणी या पेड़-पौधे का जीवित रहना संभव नहीं होता और पानी झीलों, झरनों तथा नदियों मे ही मिलता है। यद्यपि कई नदियों और झीलों का पानी कभी नहीं सूखता, कुछ झीलो और नदियों मे पानी बारिश के बाद ही मिल पाता है। इसीलिए ऐसी झीलो और नदियो के किनारे बसे लोगों को सूखे मौसम मे पानी की तलाश मे इधर-उधर जाना पड़ता होगा। इसके अलावा लोग अपने नाते-रिश्तेदारो या मित्रों से मिलने भी जाया करते होंगे। यहाँ यह स्मरण रखना ज़रूरी है, कि ये सभी लोग पैदल यात्रा किया करते थे।

तुम स्कूल कैसे जाते हो?

तुम्हें अपने घर से स्कूल पैदल जाने में कितना समय लगता है?

अगर तुम बस या साइकिल से जाओ तो स्कूल पहुँचने में कितना समय लगेगा?

आरंभिक मानव के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

पुरातत्त्वविदों को कुछ ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जिनका निर्माण और उपयोग शिकारी-खाद्य संग्राहक किया करते थे। यह सभव है कि लोगो ने अपने काम

पत्थर से बने औजार

(क) ये पत्थरो से बने प्राचीनतम औजार है।

(ख) इन्हे कई हजार साल बाद बनाया गया।

(ग) इन्हे और बाद मे बनाया गया।

(घ) इन्हे लगभग 10 हजार साल पहले बनाया गया था।

(ङ) और ये गुटिका (प्राकृतिक पत्थर) हैं।

के लिए पत्थरो, लकड़ियों और हड्डियो के औज़ार बनाए हों। इनमें से पत्थरो के औजार आज भी बचे हैं।

यहाँ पत्थरो के औजारो के कुछ उपयोग बताए गए है। ऐसे कामों की एक सूची बनाओ जिनमे इस तरह के औजार काम आते हैं। बताओ कि इनमे से कौन कौन से काम सामान्य पत्थरों से किए जा सकते हैं। कारण सहित उत्तर दो।

इनमें से कुछ औज़ारों का उपयोग फल-फूल काटने, हड्डियाँ और मांस काटने तथा पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल उतारने के लिए किया जाता था। कुछ के साथ हड्डियो या लकड़ियों के मुट्ठे लगा कर भाले और बाण जैसे हथियार बनाए जाते थे। कुछ औज़ारो से लकड़ियाँ काटी जाती थी। लकड़ियों का उपयोग ईंधन के साथ-साथ झोपड़ियाँ और औज़ार बनाने के लिए भी किया जाता था।

पत्थर के औज़ारो का उपयोग बाएँ : इसान के खाने योग्य जड़ो को खोदने के लिए किया जाता था, और दाएँ : जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

रहने की जगह निर्धारित करना

मानचित्र 2 को देखो। लाल त्रिकोण वाले स्थान वे *पुरास्थल* हैं जहाँ पर शिकारी-खाद्य संग्राहको के होने के प्रमाण मिले हैं। इनके अलावा भी और कई स्थानों पर शिकारी-खाद्य सग्राहक रहते थे। मानचित्र मे सिर्फ़ कुछ गिने-चुने स्थान ही चिह्नित किए गए हैं। कई पुरास्थल नदियों और झीलो के किनारे पाए गए हैं।
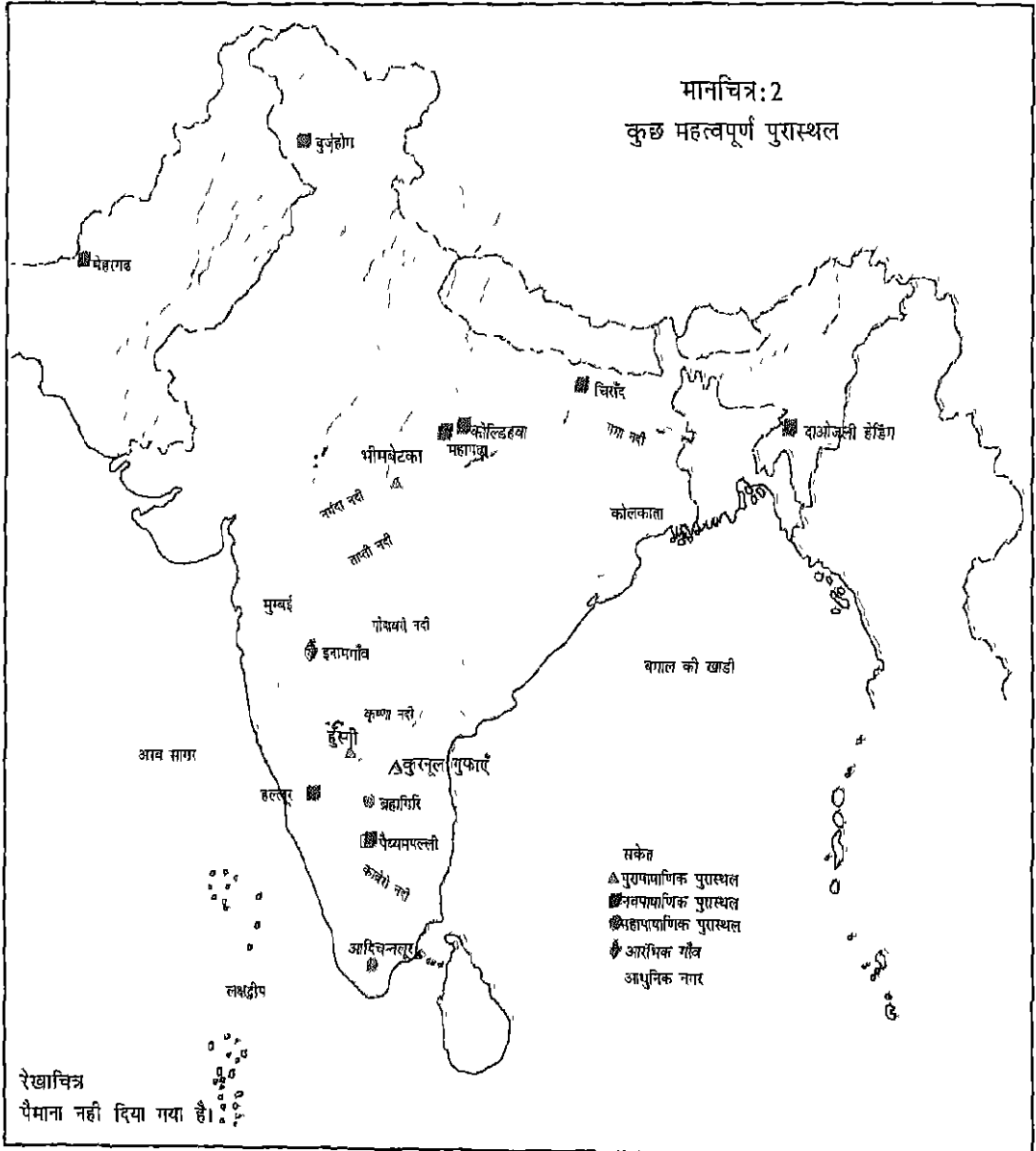
चूकि पत्थर के उपकरण बहुत महत्त्वपूर्ण थे इसलिए लोग ऐसी जगह ढूँढ़ते रहते थे, जहाँ अच्छे पत्थर मिल सके। जहाँ लोग पत्थरो से औज़ार बनाते थे, उन स्थलो को *उद्योग-स्थल* कहते है।

हमें इन उद्योग-स्थलो के बारे में जानकारी कैसे मिलती है? आमतौर पर हमे ऐसी जगहो पर पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े मिलते है, और ऐसे उपकरण मिलते है, जिन्हे लोग इन स्थलों पर छोड़ गए होगे क्योंकि वे ठीक नहीं बने होगे। साथ ही औज़ार बनाने के बाद पत्थरों के टूटे-फूटे टुकड़े भी इन स्थलों पर मिलते है। कभी-कभी लोग इन स्थलों पर कुछ ज़्यादा समय तक रहा करते थे। ऐसे स्थलो को *आवासीय और उद्योग-स्थल* कहते हैं।

भीमबेटका (आधुनिक मध्य प्रदेश)
आवासीय पुरास्थल उन्हे कहते है जहाँ लोग रहा करते थे। इनमे गुफाओ और कन्दराओ जैसे वे स्थल होते है, जिन्हे यहाँ दर्शाया गया है। लोग इन गुफाओ में इसलिए रहते थे, क्योकि यहाँ उन्हे बारिश, धूप और हवाओ से राहत मिलती थी। ऐसी प्राकृतिक गुफाएँ विंध्य और दक्कन के पर्वतीय इलाको मे मिलती है जो नर्मदा घाटी के पास है।
क्या तुम बता सकते हो कि रहने के लिए लोगों ने यह जगह क्यों चुनी होगी?

अगर तुम्हे अपने निवास स्थान के बारे मे बताना पड़े तो तुम इनमे से कौन-सा नाम चुनोगे?

(क) आवास

(ख) उद्योग-स्थल

(ग) आवास और उद्योग-स्थल

(घ) अन्य

पुरास्थल

पुरास्थल उस स्थान को कहते हैं जहाँ औज़ार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं। ऐसी वस्तुओं का निर्माण लोगों ने अपने काम के लिए किया था और बाद मे वे उन्हें वहीं छोड़ गए। ये ज़मीन के ऊपर, अन्दर, कभी-कभी समुद्र और नदी के तल मे भी पाए जाते हैं। इन पुरास्थलो के बारे में आपको अगले अध्यायों में बताया जाएगा।

पाषाण औज़ारों का निर्माण

पाषाण उपकरणों को प्रायः दो तरीको से बनाया जाता था।

1. पत्थर से पत्थर को टकराना। यानी जिस पत्थर से कोई औज़ार बनाना होता था, उसे एक हाथ में लिया जाता था, और दूसरे हाथ से एक पत्थर का हथौड़ी जैसा इस्तेमाल होता था। इस तरह आघात करने वाले पत्थर से दूसरे पत्थर पर तब तक शल्क निकाले जाते है जब तक वाछित आकार वाला उपकरण न बन जाए।

पाषाण उपकरण कैसे बनाए जाते थे। इसके लिए अपनाई गई दो तकनीको मे से एक यहाँ दर्शाई गई है। *बताओ यह कौन-सी तकनीक है।*

2. दूसरे तरीके को 'दबाव शल्क-तकनीक' कहा जाता है। इसमे क्रोड को एक स्थिर सतह पर टिकाया जाता है और इस क्रोड पर हड्डी या पत्थर रखकर उस पर हथौड़ीनुमा पत्थर से शल्क निकाले जाते हैं जिससे वाछित उपकरण बनाए जाते हैं।

आग की खोज

मानचित्र 2 में कुरनूल गुफा ढूँढ़ो (पृष्ठ 14)। यहाँ राख के अवशेष मिले हैं। इसका मतलब यह है कि आरभिक लोग आग जलाना सीख गए थे। आग का इस्तेमाल कई प्रकार से किया गया होगा जैसे कि प्रकाश के लिए, मास पकाने के लिए और खतरनाक जानवरों को दूर आदि भगाने के लिए।

आज हम आग का उपयोग किसलिए करते है?

बदलती जलवायु

लगभग 12,000 साल पहले दुनिया की जलवायु मे बड़े बदलाव आए और गर्मी बढ़ने लगी। इसके परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे। इससे हिरण, बारहसिंघा, भेड़, बकरी और गाय जैसे उन जानवरों की संख्या बढ़ी, जो घास खाकर जिन्दा रह सकते हैं।

जो लोग इन जानवरो का शिकार करते थे, वे भी इनके पीछे आए और इनके खाने-पीने की आदतों और प्रजनन के समय की जानकारी हासिल करने लगे। हो सकता है कि तब लोग इन जानवरों को पकड़ कर अपनी ज़रूरत के अनुसार पालने की बात सोचने लगे हो। साथ ही इस काल में मछली भी भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत बन गई।

इसी दौरान उपमहाद्वीप के भिन्न-भिन्न इलाकों मे गेहूँ, जौ और धान जैसे अनाज प्राकृतिक रूप से उगने लगे थे। शायद महिलाओं, पुरुषों और बच्चों ने इन अनाजों को भोजन के लिए बटोरना शुरू कर दिया होगा।

नाम और तिथियाँ

हम जिस काल के बारे में पढ़ रहे हैं, पुरातत्त्वविदों ने उनके बड़े-बड़े नाम रखे है। आरंभिक काल को वे *पुरापाषाण काल* कहते हैं। यह दो शब्दों पुरा यानी 'प्राचीन', और पाषाण यानी 'पत्थर' से बना है। यह नाम पुरास्थलो से प्राप्त पत्थर के औज़ारों के महत्त्व को बताता है। पुरापाषाण काल बीस लाख साल पहले से 12,000 साल पहले के दौरान माना जाता है। इस काल को भी तीन भागो मे विभाजित किया गया है : 'आरंभिक', 'मध्य' एवं 'उत्तर' पुरापाषाण युग। मानव इतिहास की लगभग 99 प्रतिशत कहानी इसी काल के दौरान घटित हुई।

जिस काल मे हमें पर्यावरणीय बदलाव मिलते है, उसे 'मेसोलिथ' यानी *मध्यपाषाण युग* कहते हैं। इसका समय लगभग 12,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले तक माना गया है। इस काल के पाषाण औज़ार आमतौर पर बहुत छोटे होते थे। इन्हें 'माइक्रोलिथ' यानी *लघुपाषाण* कहा जाता है। प्राय: इन औज़ारों में हड्डियों या लकड़ियों के मुट्ठे लगे हँसिया और आरी जैसे औज़ार मिलते थे। साथ-साथ पुरापाषाण युग वाले औज़ार भी इस दौरान बनाए जाते रहे।

पृष्ठ 13 पर बने चित्र देखो। इस दौरान बनाए गए औजारो मे तुम्हे कोई बदलाव दिखाई देता है?

अगले युग की शुरुआत लगभग 10,000 साल पहले से होती है। इसे *नवपाषाण युग* कहा जाता है। अगले अध्याय मे तुम नवपाषाण युग के बारे मे पढ़ोगे।

नवपाषाण का क्या मतलब होता होगा?

हमने कुछ स्थानों के नाम दिए हैं। अगले अध्यायों में तुम्हें ऐसे अनेक नाम मिलेंगे। अक्सर हम पुराने स्थानो के लिए उन नामों का प्रयोग करते हैं, जो आज प्रचलित हैं, क्योंकि हमें ज्ञात नहीं है कि उस काल में इनके क्या नाम रहे होंगे।

साथ ही वे यह भी सीखने लगे होगे कि यह अनाज कहाँ उगते थे और कब पककर तैयार होते थे। ऐसा करते-करते लोगो ने इन अनाजों को खुद पैदा करना सीख लिया होगा।

शैल चित्रकला : इनसे हमें क्या पता चलता है?

जिन गुफाओं मे लोग रहते थे, उनमे से कुछ की दीवारों पर चित्र मिले हैं। इनमें कुछ सुन्दर उदाहरण मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश की गुफाओं से मिले चित्र है। इनमे जंगली जानवरो का बड़ी कुशलता से सजीव चित्रण किया गया है।

एक शैल चित्र।
इस चित्र के बारे मे बताओ।

कौन क्या करता था?

हमने पढ़ा कि आरंभिक लोग शिकार तथा फल-मूल का संग्रह किया करते थे। वे पत्थरो के औज़ार और गुफाओ में चित्र बनाते थे। क्या हमें कोई ऐसे साक्ष्य मिलते हैं जिनसे पता चले कि महिलाएँ शिकार करती थी या पुरुष औज़ार बनाते थे या फिर महिलाएँ चित्रकारी करती थी और पुरुष फल-मूल इकट्ठा करते थे? वास्तव मे, हमे इसका ज्ञान नही है। लेकिन दो बातें हो सकती है। महिला और पुरुष दोनों ने मिलकर कई काम एक साथ किया होगा। यह भी संभव है, कि कुछ तरह के काम केवल महिलाएँ करती थीं और कुछ केवल पुरुष। इसके अलावा उपमहाद्वीप के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग परम्पराएँ भी रही होंगी।

भारत में शुतुरमुर्ग!

भारत में पुरापाषाण युग के दौरान शुतुरमुर्ग होते थे। महाराष्ट्र के पटने पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के अंडो के अवशेष मिले हैं। इनके कुछ छिलको पर चित्रांकन भी मिलता है। इन अडों से मनके भी बनाए जाते थे।

इन मनको का उपयोग किसलिए किया गया होगा?

आज हमें शुतुरमुर्ग कहाँ मिलते हैं?

हुँस्गी का सूक्ष्म-निरीक्षण

मानचित्र 2 पर हुँस्गी ढूँढ़िए (पृष्ठ 14)। यहाँ पर पुरापाषाण युग के कई पुरास्थल मिले थे। कुछ पुरास्थलों से अलग-अलग कार्यो मे लाए जाने वाले

कई प्रकार के औज़ार मिले थे। ये सभवतः आवास और उद्योग-स्थल रहे होगे। कुछ छोटे पुरास्थलो मे भी औज़ारो के बनाए जाने के प्रमाण मिले है। इनमे से कुछ पुरास्थल झरनो के निकट थे। अधिकाश औज़ार चूना-पत्थरों से बनाए जाते थे।

क्या तुम दूसरे प्रकार के पुरास्थलो के नाम बता सकते हो?

अन्यत्र

अपने एटलस मे फ्रास ढूँढो। यह चित्र [illegible] एक गुफा का है। इस पुरास्थल की खोज लगभग 100 साल पहले चार स्कूली छात्रो ने की थी। इ[illegible] चित्र लगभग 20,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले के बीच बनाए गए होगे। इनमे कई [illegible]वरो के चित्र है। इनमें जगली घोडे, गाय, भैस, गैडा, रेनडीयर, बारहसिंघा और सूअरो को गहरे-चमकीले रंगों से चित्रित किया गया है।

इन रगों को लौह-अयस्क और चारकोल जैसे खनिज पदार्थों से बनाया जाता था। यह सभव है कि इन चित्रों को उत्सवों के अवसर पर बनाया जाता था या फिर इन्हें शिकारियो द्वारा शिकार पर निकलने से पहले कुछ अनुष्ठानो के लिए बनाया गया होगा।

क्या तुम इन्हे बनाने का कोई और कारण बता सकते हो?

उपयोगी शब्द

शिकारी-खाद्य संग्राहक

पुरास्थल

उद्योग-स्थल

आवासीय-स्थल

पुरापाषाण

मध्यपाषाण

लघुपाषाण

कल्पना करो

तुम आज से 12,000 साल पहले पत्थर की एक गुफा में रहते थे। पृष्ठ 15 पर [illegible] तुम्हारा चाचा गुफा की एक भीतरी दीवार पर चित्र बना रहे हैं और तुम उनकी सहायता करना चाहते हो। तुम [illegible] लाओगे, [illegible] या फिर उनसे [illegible]? तुम्हारे चाचा तुम्हें कौन-कौन सी कहानियाँ सुनाएँगे?
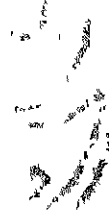
कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मध्यपाषाण युग (12,000-10,000 साल पहले)
- नवपाषाण युग का आरंभ (10,000 साल पहले)

आओ याद करें

1. इन वाक्यो को पूरा करो।

   (क) शिकारी-खाद्य सग्राहक गुफाओ मे इसलिए रहते थे क्योकि ——।

   (ख) घास वाले मैदानो का विकास ———— साल पहले हुआ।

   (ग) आरंभिक लोगों ने गुफाओं की ———— पर चित्र बनाए।

   (घ) हुँस्गी मे ————से औजार बनाए जाते थे।

2. उपमहाद्वीप के आधुनिक राजनीतिक मानचित्र को पृष्ठ 136 पर देखो। उन राज्यों को ढूँढ़ो जहाँ भीमबेटका, हुँस्गी और कुरनूल स्थित हैं। क्या तुषार की रेल इन जगहों के पास से होकर गई होगी?

आओ चर्चा करें

3. शिकारी-खाद्य सग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यो घूमते रहते थे? उनकी यात्रा और आज की हमारी यात्रा के कारणो में क्या समानताएँ या क्या भिन्नताएँ है?

4. आज तुम फल काटने के लिए कौन-से औज़ार चुनोगे? वह औज़ार किस चीज़ से बना होगा?

5. शिकारी-खाद्य सग्राहक आग का उपयोग किन-किन चीज़ो के लिए करते थे? क्या तुम आज आग का उपयोग इनमे से किसी चीज़ के लिए करोगे!

आओ करके देखें

6. अपनी पुस्तिका के पन्ने पर एक लाइन खीचकर इसके दो खाने बनाओ। बाएँ खाने मे, उन खाद्य पदार्थो की सूची बनाओ, जिन्हे शिकारी-खाद्य संग्राहक खाते थे (पृष्ठ 11 पर देखो) और दाएँ खाने मे तुम जो चीजे खाते हो उनमे से कुछ के नाम लिखो। क्या तुम्हे इन दोनो में कोई समानता या भेद दिखाई देता है?

7. यदि तुम्हारे पास कोई गुटिका (प्राकृतिक पत्थर का टुकडा, जैसे कि (पृष्ठ 13 पर दिखाया गया है) हो तो उसे किस काम के लिए इस्तेमाल करोगे?

8. ऐसे दो काम लिखो जिन्हें आज महिलाएँ और पुरुष दोनों करते है। दो ऐसे काम बताओ जिन्हे सिर्फ़ महिलाएँ ही करती है और दो वे जिन्हे सिर्फ़ पुरुष ही करते है। अपनी सूची की अपने दो साथियो की सूचियों से तुलना करो। क्या तुम्हे इनमे कोई समानता या भेद दिखाई दे रहा है?

नेइनुओ का भोजन

आज नेइनुओ अपना पसंदीदा खाना खा रही थी- चावल, स्क्वॉश, कद्दू, बीन्स और गोश्त। स्क्वॉश, कद्दू और बीन्स उसकी नानी ने अपने घर के पिछवाड़े के छोटे से बगीचे में ही उगाया था। खाते-खाते नेइनुओ को पिछले दिनो अपनी स्कूल की तरफ़ से की गई यात्रा के दौरान मध्य प्रदेश में खाए खाने की याद आ गई। वह कितना मसालेदार था। पर वह ऐसा क्यो था?

विभिन्न प्रकार के भोजन

आज हमें अपने भोजन का अधिकाश हिस्सा उगाई गई फ़सलो और पाले गए पशुओं से मिलता है। भिन्न-भिन्न फ़सलो को उगाने के लिए भिन्न-भिन्न जलवायु की आवश्यकता पड़ती है जैसे धान की खेती के लिए गेहूँ या जौ की तुलना में ज़्यादा पानी की जरूरत पड़ती है। इसीलिए हम देखते हैं कि किसान विशेष फ़सल विशेष क्षेत्रों में ही उगाते हैं। यही नहीं पशुओ को भी अपने अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि सूखी और पहाड़ी जलवायु में मवेशियों की तुलना मे भेड़ या बकरी अधिक सहजतापूर्वक जीवित रह सकते हैं। पर जैसाकि तुमने अध्याय 2 में पढ़ा है, स्त्री-पुरुषो ने अपने भोजन का उत्पादन हमेशा नहीं किया।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

अध्याय 2 में हमने पढ़ा है कि दुनिया की जलवायु बदलती रही है। साथ ही लोग जिन वनस्पतियो और पशुओं का भोजन के रूप मे इस्तेमाल करते थे, वे भी बदलते रहे। लोगों का ध्यान कुछ बातो की ओर गया जैसे खाने योग्य वनस्पतियाँ कहाँ-कहाँ मिल सकती है, बीज कैसे अपनी डंठल से टूट कर गिरते हैं, गिरे बीजो का अंकुरण और उनसे पौधों का निकलना आदि। इसी तरह उन्होंने पौधों की देखभाल करनी शुरू कर दी होगी। चिड़ियों और जानवरों से पौधो की सुरक्षा की होगी, ताकि वे ठीक से बढ़ सकें और उनके बीज पक सकें। इस प्रकार धीरे-धीरे वे कृषक बन गए होंगे।

इसी तरह लोगो ने अपने घरो के आस-पास चारा रखकर जानवरो को आकर्षित कर उन्हें पालतू बनाया होगा। सबसे पहले जिस जगली जानवर को पालतू बनाया गया वह कुत्ता था। धीरे-धीरे लोग भेड़, बकरी, गाय और सूअर जैसे जानवरो को अपने घरों के नज़दीक आने को उत्साहित करने लगे। ऐसे जानवर झुण्ड में रहते थे और ज़्यादातर घास खाते थे। अक्सर लोग अन्य जंगली जानवरो के आक्रमण से इनकी सुरक्षा किया करते थे और इस तरह धीरे-धीरे वे *पशुपालक* बन गए होगे।

क्या तुम बता सकते हो कि सबसे पहले कुत्तों को ही पालतू क्यों बनाया गया?

बसने की प्रक्रिया

लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरो की देखभाल करने को 'बसने की प्रक्रिया' का नाम दिया गया है। अपनाए गए ये पौधे तथा जानवर अक्सर जगली पौधो तथा जानवरों से भिन्न होते है। इसकी वजह यह है कि बसने की प्रक्रिया की दिशा में अपनाए गए पौधों या जानवरो का लोग चयन करते है। उदाहरण के तौर पर लोग उन्हीं पौधों तथा जानवरों का चयन करते है जिनके बीमार होने की संभावना कम हो। यही नही, लोग उन्ही पौधो को चुनते है जिनसे बड़े दाने वाले अनाज पैदा होते है; साथ ही जिनकी मजबूत डठले अनाज के पके दानो के भार को संभाल सकें। ऐसे पौधों के बीजों को सभालकर रखा जाता है ताकि फिर से उगाने के लिए उनके गुण सुरक्षित रह सके।
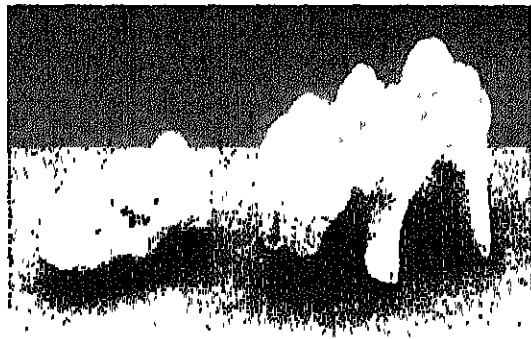
उन्ही जानवरों को आगे प्रजनन के लिए चुना जाता है, जो आमतौर पर अहिसक होते है। इसलिए हम देखते है कि पाले गए जानवर तथा कृषि के लिए अपनाए गए पौधे, जगली जानवरो तथा पौधो से धीरे-धीरे भिन्न होते गए। मिसाल के तौर पर जंगली जानवरो की तुलना मे पालतू जानवरो के दॉत और सींग छोटे होते हैं।

इन दाँतों को देखो। इनमें से कौन सा जंगली सूअर का है और कौन सा पालतू जानवर का?

बसने की प्रक्रिया पूरी दुनिया मे धीरे-धीरे चलती रही। यह करीब 12,000 साल पहले शुरू हुई। वास्तव मे आज हम जो भोजन करते है वो इसी बसने की प्रक्रिया की वजह से है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फ़सलों में गेहूँ तथा जौ आते है, उसी तरह सबसे पहले पालतू जानवरों में कुत्ते के बाद भेड़-बकरी आते है।

एक नवीन जीवन-शैली

अनाज के उपयोग

तुम किसी पौधे के बीज को बो कर देखो, तुम पाओगी कि इसे विकसित होने मे कुछ वक्त लगता है। इसमें कुछ दिन, महीने या फिर साल तक लग सकता है। इसलिए जब लोग पौधे उगाने लगे तो उनकी देखभाल के लिए उन्हें एक ही जगह पर लंबे समय तक रहना पड़ा था। बीज बोने से लेकर फ़सलो के पकने तक, पौधो की सिंचाई करने, खरपतवार हटाने, जानवरों और चिड़ियों से उनकी सुरक्षा करने जैसे बहुत-से काम शामिल थे। कटाई के बाद, अनाज का उपयोग बहुत सभाल कर करना पड़ता था।

अनाज को भोजन और बीज, दोनों ही रूपों में बचा कर रखना आवश्यक था, इसलिए लोगों को इसके भंडारण की बात सोचनी पड़ी। बहुत-से इलाकों मे लोगो ने मिट्टी के बड़े-बड़े बर्तन बनाए, टोकरियाँ बुनीं या फिर ज़मीन में गड्ढा खोदा। क्या तुम्हे लगता है कि शिकारी या भोजन-सग्रह करने वाले बर्तन बनाते और उनका प्रयोग करते होगे? अपने जवाब का कारण बताओ।

जानवर : चलते-फिरते 'खाद्य-भंडार'

जानवर बच्चे देते है जिससे उनकी संख्या बढ़ती है। अगर जानवरों की देखभाल की जाए तो उनकी सख्या तो बढ़ती ही है साथ ही उनसे दूध भी प्राप्त हो सकता है जो भोजन का एक अच्छा स्रोत है। यही नही जानवरों से हमें मांस भी मिलता है। दूसरे शब्दों में, पशु-पालन भोजन के 'भंडारण' का एक तरीका है।

भोजन के अतिरिक्त जानवरों से और क्या-क्या मिल सकता है?

आज जानवरो का उपयोग किस लिए होता है?

आओ, आरंभिक कृषकों और पशुपालकों के बारे में पता करें?

मानचित्र 2 (पृष्ठ सख्या 14) देखो। क्या तुम्हें कई नीले वर्ग दिख रहे हैं? पता है, इनमें से प्रत्येक बिंदु उस जगह को दर्शाता है, जहाँ पुरातत्त्वविदों को

शुरुआती कृषकों और पशुपालकों के होने के साक्ष्य मिले हैं। ये पूरे उपमहाद्वीप में पाए गए है। इनमे सबसे महत्वपूर्ण पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे, आधुनिक कश्मीर में, और पूर्वी तथा दक्षिण भारत में पाए गए है।

वास्तव में ये निर्दिष्ट स्थान कृषको और पशुपालको की बस्तियाँ थी या नही, इसे जाँचने के लिए वैज्ञानिक खुदाई में मिले पौधो और पशुओं की हड्डियों के नमूनों का अध्ययन करते है। इनमे से सबसे रोचक जले हुए अनाज के दानों के अवशेष हैं। ऐसा लगता है कि ये गलती से या फिर जानबूझ कर जलाए गए होगे। वैज्ञानिक इन अनाज के दानो की पहचान कर सकते है। इस तरह हमें पता चलता है कि इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बहुत सारी फ़सलें उगाई जाती रही होगी। वैज्ञानिक विभिन्न जानवरो की हड्डियो की भी पहचान कर सकते हैं।

नीचे की तालिका से तुम यह जान सकती हो कि कहाँ-कहाँ अनाजो और पालतू जानवरो की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।

अनाज और हड्डियाँ	**पुरास्थल**
गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी, मवेशी	मेहरगढ़ (आधुनिक पाकिस्तान)
चावल, जानवरों की हड्डियों के टुकड़े	कोल्डिहवा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
चावल, मवेशी (मिट्टी पर खुरो के निशान)	महागढ़ा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
गेहूँ और दलहन	गुफ़क्राल (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ और दलहन, कुत्ते, मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी	बुर्ज़होम (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ, हरे चने, जौ, भैंस, बैल	चिराँद (आधुनिक बिहार)
ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, बकरी, सूअर	हल्लूर (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
काला चना, ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, सूअर	पैय्यमपल्ली (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
जिन जगहों पर अनाज तथा हड्डियों के अवशेष मिले हैं, ये उनमें से सिर्फ कुछ ही हैं।	

स्थायी जीवन की ओर

पुरातत्त्वविदो को कुछ पुरास्थलों पर झोपड़ियो और घरों के निशान मिले है। जैसे कि बुर्ज़होम (*वर्तमान कश्मीर मे*) के लोग गड्ढे के नीचे घर बनाते थे जिन्हे गर्तवास कहा जाता है। इनमे उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं। इससे उन्हे ठढ के मौसम मे सुरक्षा मिलती होगी। पुरातत्त्वविदो को झोपड़ियो के अदर और बाहर दोनों ही स्थानों पर आग जलाने की जगहे मिली है। ऐसा लगता है कि लोग मौसम के अनुसार घर के अंदर या बाहर खाना पकाते होंगे।

एक गर्तवास का चित्र बनाओ।

बहुत सारी जगहों से पत्थर के औज़ार भी मिले है। इनमे से कई ऐसे है, जो पुरापाषाणयुगीन उपकरणो से भिन्न हैं। इसीलिए इन्हें *नवपाषाण युग* का माना गया है। इनमें वे औज़ार भी है, जिनकी धार को और अधिक पैना करने के लिए उन पर पॉलिश चढ़ाई जाती थी। ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज तथा वनस्पतियो से प्राप्त अन्य चीज़ो को पीसने के लिए किया जाता था। आज हज़ारो साल बाद भी ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज पीसने के लिए किया जाता है। उसी तरह प्राचीन प्रस्तरयुगीन औज़ारों का निर्माण और प्रयोग लगातार होता रहा। कुछ औज़ार हड्डियो से भी बनाए जाते थे।
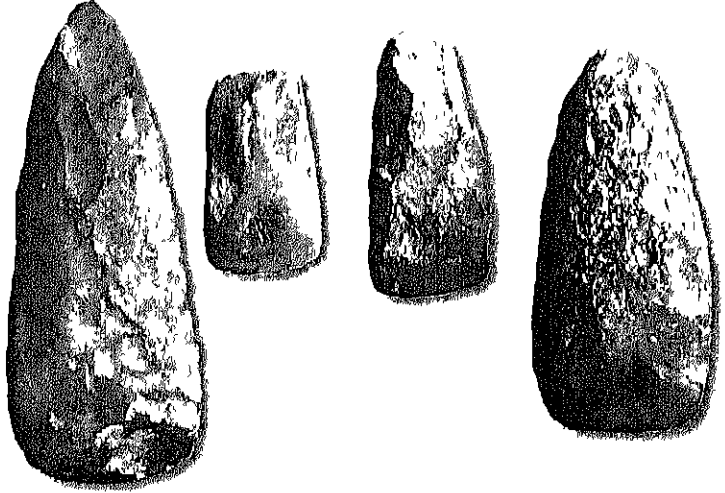
नवपाषाण युग के कुछ उपकरण।

इनकी तुलना पृष्ठ 13 (*अध्याय 2*) पर दिखाए गए उपकरणो से करो। तुम्हे इनमें क्या-क्या समानताएँ और भेद दिखाई देते है?

नवपाषाण युग के पुरास्थलों से कई प्रकार के मिट्टी के *बर्तन* मिले है। कभी-कभी इन पर अलकरण भी किया जाता था। बर्तनो का उपयोग चीज़ों

को रखने के लिए किया जाता था। धीरे-धीरे लोग बर्तनों का प्रयोग खाना बनाने के लिए भी करने लगे। चावल, गेहूँ तथा दलहन जैसे अनाज अब आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए थे। इसके साथ-साथ अब लोग कपड़े भी बुनने लगे थे। इसके लिए कपास जैसे आवश्यक पौधे उगाए जा सकते थे।

क्या तुम कल्पना कर सकती हो कि इस पात्र मे क्या रखा होगा?

क्या ये परिवर्तन हर जगह एक साथ ही आ गए होंगे? ऐसी बात नहीं है। एक तरफ़ जहाँ कई जगहो पर स्त्री-पुरुष शिकार और भोजन-संग्रह करने का काम करते रहे थे वही अन्य लोगों ने हज़ारों सालो के दरम्यान धीरे-धीरे खेती और पशुपालन को अपना लिया। बहुत जगह लोग मौसम के मुताबिक बदल-बदल कर अपनी जीविका चलाया करते थे।

अन्य रीति-रिवाज

पुरातत्त्वविद् बहुत स्पष्ट रूप से इस बारे मे कुछ नहीं कह सकते। विद्वानो ने ऐसे किसानो का अध्ययन किया है। इनमे प्राय: कृषक और पशुपालक समूह में रहते हैं जिन्हें *जनजाति* कहते हैं। विद्वानों ने पाया है कि ये लोग कुछ ऐसे रीति-रिवाजों को मानते हैं, जो संभवत: पहले से ही प्रचलित रहे हैं।

जनजाति

प्राय: जनजाति के लोग छोटी-छोटी बस्तियो में रहते है। ज्यादातर परिवार एक-दूसरे से सबधित होते हैं और इस तरह के परिवारो के समूह मिलकर जनजाति का निर्माण करते है।

- जनजाति के सदस्य शिकार, भोजन-संग्रह, खेती, पशुपालन और मछली पकड़ने जैसे पेशे अपनाते है। अक्सर महिलाएँ खेती का सारा काम करती है। इसमें ज़मीन तैयार कर बीज बोने, पौधे की देखभाल करने से लेकर फ़सल काटने तक का काम शामिल है। बच्चे पौधो की देखभाल करते है और चिड़ियों और जानवरों को दूर भगाते है ताकि वे पौधो और फ़सलो को नुकसान न पहुँचाए। महिलाएँ फ़सल दावकर अनाज कूटती-पीसती हैं। पुरुष आमतौर पर पशुओं के बड़े-बड़े झुण्डों को चराते है जबकि बच्चे छोटे झुण्डों को। यहाँ जानवरों की सफ़ाई तथा दूध निकालने का काम स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर करते हैं। उसी तरह दोनो मिलकर बर्तन बनाने, टोकरियाँ बुनने, औज़ार तथा झोपड़ियाँ बनाने का काम भी साथ-साथ करते है। गाना, नाच और घरो की सजावट भी उनकी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है।

- कुछ व्यक्तियो को नेता मान लिया जाता है। वे अनुभवी वृद्ध व्यक्ति, नौजवान योद्धा या फिर पुरोहित हो सकते है। वयस्क महिलाओं को भी उनके ज्ञान तथा अनुभव के लिए विशिष्ट सम्मान दिया जाता है।
- जनजातियो की सास्कृतिक-परम्पराएँ बहुत समृद्ध तथा विशिष्ट होती है। इनमें उनकी भाषाएँ, संगीत, कहानियाँ तथा चित्रकारी भी शामिल हैं। उनके अपने देवी-देवता होते है।
- ज़मीन, जंगल, घास के मैदान तथा पानी पूरे कुनबे की सम्पत्ति मानी जाती है जिनका उपयोग सभी एक साथ करते है। इनमे गरीब और अमीर के बीच कोई ख़ास अंतर नहीं होता। इसलिए जनजातीय समाज अन्य समाजो से भिन्न होते है। इन अन्य समाजो के बारे में तुम आगे पढ़ोगी।

पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कामो की एक सूची बनाओ। महिलाएँ क्या क्या काम करती है?
कौन से ऐसे काम है, जो स्त्री पुरुष दोनों करते हैं?

सूक्ष्म-निरीक्षण

(क) मेहरगढ़ में जीवन-मृत्यु

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में मेहरगढ़ ढूँढ़ो। यह ईरान जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण रास्ते, बोलन दर्रे के पास एक हराभरा समतल स्थान है। मेहरगढ़ सभवत: वह स्थान है, जहाँ के स्त्री-पुरुषो ने, इस इलाके में सबसे पहले जौ, गेहूँ उगाना और भेड़-बकरी पालना सीखा।

गाँव

गाँवों की यह विशेषता है कि वहाँ रहने वाले अधिकाश लोग भोजन उत्पादन में लगे होते हैं।

यहाँ खुदाई में सबसे पहले के स्तरो से पुरातत्त्वविदों को विभिन्न प्रकार के जानवरों की हड्डियॉ मिली। इनमें हिरण तथा सूअर जैसे जंगली जानवरों की हड्डियॉ भी शामिल है। उसके बाद के स्तरो से भेड़ और बकरियों की हड्डियाँ ज़्यादा मिली हैं। उसके ऊपर ज़्यादातर मवेशियो की ही हड्डियाँ मिली हैं, इससे ऐसा लगता है कि ये लोग मवेशियो को पालने लगे थे

पहले और बाद के स्तर

जब पुरातत्त्वविद् किसी जगह की खुदाई करते है तो वे कैसे समझते है कि कौन-से स्तर पहले के है और कौन-से बाद के?

इस चित्र को देखो।

मान लो लोगो ने सबसे पहले समतल भूमि (स्तर 4) पर रहना शुरू किया।

आमतौर पर लोग जहाँ रहते है, घर टूटने पर दुबारा वही घर बना लेते है। टूटे-फूटे सामान और कूड़ा-करकट भी घरो के आस-पास जमा होते रहते है। इन कारणों से बस्ती की जमीन धीरे-धीरे ऊँची होती रहती है और फिर सैकड़ो सालो के बाद वहाँ एक टीला बन जाता है। इसलिए जब टीले की खुदाई की जाती है, तो उसका सबसे निचला स्तर सबसे पुराना होता है और उसके बाद के स्तर, बाद के युगो के होते हैं। यही ऊपरी तथा निचली तहे आमतौर पर स्तरो के रूप मे जानी जाती है।
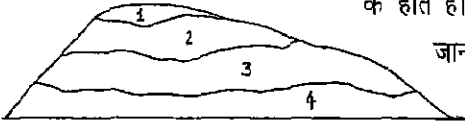
स्तर 2 और 3 को देखो। कौन सा ज्यादा पुराना है?

सगे-सबंधियो की मृत्यु के बाद लोग उनके प्रति सम्मान जताते हैं। लोगों की आस्था है कि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है। इसीलिए *कब्रों* में मृतकों के साथ कुछ सामान भी रखे जाते थे। मेहरगढ़ मे ऐसी कई कब्रें मिली है। एक कब्र में एक मृतक के साथ एक बकरी को भी दफ़नाया गया था। संभवत: इसे परलोक में मृतक के खाने के लिए रखा गया होगा।

मेहरगढ़ के घर का चित्र।

मेहरगढ़ के घर शायद ऐसे दिखते हो। तुम जिस घर मे रहते हो, उसके साथ इस घर की क्या समानता है?
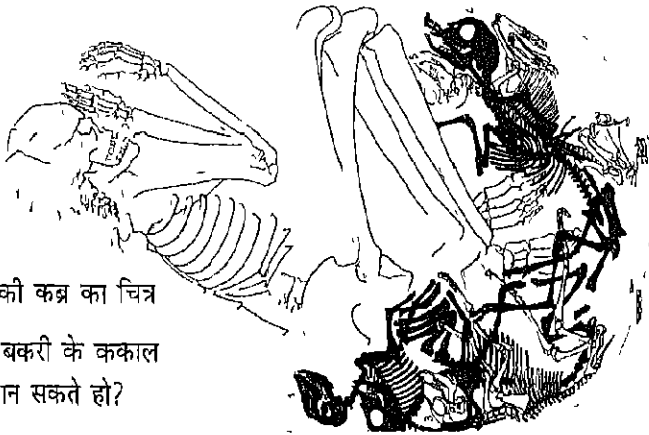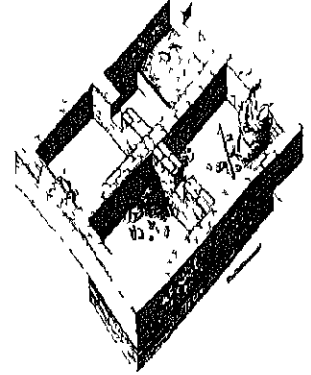
मेहरगढ़ की कब्र का चित्र

क्या तुम बकरी के ककाल को पहचान सकते हो?

(ख) दाओजली हेडिंग

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में दाओजली हेडिंग ढूँढ़ो। यह पुरास्थल चीन और म्यांमार की ओर जाने वाले रास्ते मे ब्रह्मपुत्र की घाटी की एक पहाड़ी पर है। यहाँ खरल और मूसल जैसे पत्थरो के उपकरण मिले हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ लोग भोजन के लिए अनाज उगाते थे। साथ ही यहाँ से जेडाइट पत्थर भी मिला है। सभवत: यह पत्थर चीन से आया होगा। इसके अतिरिक्त इस पुरास्थल से काष्ठाश्म (अति प्राचीन लकड़ी, जो सख्त होकर पत्थर बन गई है) के औजार और बर्तन भी मिले हैं।

अन्यत्र

एटलस मे तुर्की ढूँढो। नवपाषाण युग के सबसे प्रसिद्ध पुरास्थलों मे एक चताल ह्यूक तुर्की में है। यहाँ दूर-दराज स्थानो से कई चीजे लाई जाती थीं और उनका उपयोग किया जाता था। जैसे सीरिया से लाया गया चकमक पत्थर, लाल सागर की कौडियाँ तथा भूमध्य सागर की सीपियाँ। ध्यान रहे कि उस समय तक पहिए वाले वाहन का विकास नही हुआ था। लोग सामान खुद या जानवरो की पीठ पर लादकर ले जाया करते थे।

बताओ कौडियो तथा सीपियो का क्या उपयोग होता होगा?

उपयोगी शब्द

कृषक

पशुपालक

नवपाषाण युग

बर्तन

जनजाति

गाँव

घर

कब्र

आओ याद करें

1. खेती करने वाले लोग एक ही स्थान पर लबे समय तक क्यों रहते थे?
2. पृष्ठ 25 की तालिका को देखो। नेइनुओ अगर चावल खाना चाहती है, तो उसे किन स्थानो पर जाना चाहिए।
3. पुरातत्त्वविद् ऐसा क्यों मानते है कि मेहरगढ़ के लोग पहले केवल शिकारी थे, और बाद में उनके लिए पशुपालन ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गया?
4. सही या गलत बताओ।

   (क) हल्लूर मे ज्वार-बाजरा मिला है।

   (ख) बुर्जहोम में लोग आयताकार घरो मे रहते थे।

   (ग) चिराँद कश्मीर का एक पुरास्थल है।

   (घ) जेडाइट, जो दाओजली हेडिग में मिला है, चीन से लाया गया होगा।

आओ चर्चा करें

5. कृषको-पशुपालको का जीवन शिकारी-खाद्य सग्राहकों के जीवन से कितना भिन्न था, तीन अंतर बताओ।
6. पृष्ठ 25 की तालिका मे दिए गए जानवरो की एक सूची बनाओ और यह भी बताओ कि इनका उपयोग किस रूप मे किया जाता था।

आओ करके देखें

7. तुम जिन अनाजों को खाते हो उनकी एक सूची बनाओ।
8. प्रश्न 7 के उत्तर मे लिखे अनाजों को क्या तुम स्वय उगाते हो? अगर हाँ, तो एक तालिका बनाकर उसकी खेती की विभिन्न अवस्थाओ को दिखाओ। अगर नही, तो एक तालिका बनाकर दिखाओ कि ये अनाज किसान से लेकर तुम्हारे पास तक कैसे पहुँचे।

कुछ महत्वपूर्ण

तिथियाँ

- बसने की प्रक्रिया का आरभ (लगभग 12,000 साल पहले)
- मेहरगढ मे बस्ती का आरभ (लगभग 8000 साल पहले)

पुराने भवन का संरक्षण

जसपाल और हरप्रीत अपने घर के पास की गली मे क्रिकेट खेल रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग उस खंडहर घर की तारीफ़ कर रहे थे, जिसे गली के बच्चे भुतहा घर कहा करते थे।

एक ने कहा, 'इसकी वास्तुकला को देखो!'

'क्या आपने कही लकड़ी पर इतनी सुन्दर नक्काशी देखी है?' दूसरी महिला ने कहा,

'हमे मत्री जी को पत्र लिखकर कहना चाहिए कि वह इस खूबसूरत घर को सुरक्षित रखने के लिए इसकी मरम्मत कराने की व्यवस्था करें।'

यह सब सुनकर जसपाल और हरप्रीत सोचने लगे, कि इस पुराने खडहर से लोगो का इतना लगाव क्यो हो सकता है?

हड़प्पा की कहानी

अक्सर पुरानी इमारत अपनी कहानी बताती है। लगभग 150 साल पहले जब पंजाब में पहली बार रेलवे लाइनें बिछाई जा रही थीं, तो इस काम में जुटे इजीनियरो को अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला, जो आधुनिक पाकिस्तान में है। उन्होंने सोचा कि यह एक ऐसा खडहर है, जहाँ से अच्छी ईटे मिलेंगी। यह सोचकर वे हड़प्पा के खडहरों से हजारो ईटे उखाड़ ले गए जिससे उन्होंने रेलवे लाइनें बिछाई। इससे कई इमारते पूरी तरह नष्ट हो गई।

उसके बाद लगभग 80 साल पहले पुरातत्त्वविदो ने इस स्थल को ढूँढ़ा और तब पता चला कि यह खंडहर उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक है। चूँकि इस *नगर* की खोज सबसे पहले हुई थी, इसीलिए बाद में मिलने वाले इस तरह के सभी पुरास्थलों में जो इमारते और चीजें मिली उन्हें हड़प्पा सभ्यता की इमारतें कहा गया। इन शहरों का निर्माण लगभग 4700 साल पहले हुआ था।

प्राय: पुरानी इमारतों को तोड़कर उनकी जगह नए भवन बनाए जाते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि पुरानी इमारतों को सुरक्षित रखना चाहिए?

इन नगरों की विशेषता क्या थी?

इन नगरो मे से कई को दो या उससे ज़्यादा हिस्सों में विभाजित किया गया था। प्राय: पश्चिमी भाग छोटा था लेकिन ऊँचाई पर बना था और पूर्वी हिस्सा बड़ा था लेकिन यह निचले इलाके मे था। ऊँचाई वाले भाग को पुरातत्त्वविदों ने *नगर-दुर्ग* कहा है और निचले हिस्से को *निचला-नगर* कहा है। दोनों हिस्सो की चारदीवारियाँ पकी ईटों की बनाई जाती थी। इसकी ईटें इतनी अच्छी थीं कि हज़ारो सालो बाद आज तक उनकी दीवारे खड़ी रही। दीवार बनाने के लिए ईटों की चिनाई इस तरह करते थे जिससे कि दीवारें खूब मज़बूत रहे।

ये नगर आधुनिक पाकिस्तान के पजाब और सिध प्रांतो, भारत के गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पजाब प्रातो मे मिले है। इन सभी स्थलो से पुरातत्त्वविदो को अनोखी वस्तुएँ मिली है : जैसे मिट्टी के लाल बर्तन जिन पर काले रग के चित्र बने थे, पत्थर के बाट, मुहरे, मनके, ताँबे के उपकरण और पत्थर के लबे ब्लेड आदि।

कुछ नगरों के *नगर-दुर्ग* में कुछ खास इमारते बनाई गई थी। मिसाल के तौर पर मोहनजोदड़ो में खास तालाब बनाया गया था, जिसे पुरातत्त्वविदों ने महान स्नानागार कहा है। इस तालाब को बनाने में ईट और प्लास्टर का इस्तेमाल किया गया था। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई थी। इस सरोवर मे दो तरफ़ से उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई थी, और चारो ओर कमरे बनाए गए थे। इसमे भरने के लिए पानी कुएँ से निकाला जाता था, उपयोग के बाद इसे खाली कर दिया जाता था। शायद यहाँ विशिष्ट नागरिक विशेष अवसरों पर स्नान किया करते थे।

कालीबंगा और लोथल जैसे अन्य नगरों में अग्निकुण्ड मिले हैं, जहाँ संभवत: यज्ञ किए जाते होगे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे कुछ नगरों मे बड़े-बड़े भडार-गृह मिले है।

मानचित्र 3
उपमहाद्वीप के आरभिक नगर

रेखाचित्र
पैमाना नहीं दिया गया है।

महान स्नानागार

भवन, नाले और सड़कें

हड़प्पा के नगरो मे ईटों की चिनाई

इन नगरों के घर आमतौर पर एक या दो मंज़िलें होते थे। घर के आंगन के चारो ओर कमरे बनाए जाते थे। अधिकांश घरों में एक अलग स्नानघर होता था, और कुछ घरो में कुएँ भी होते थे।
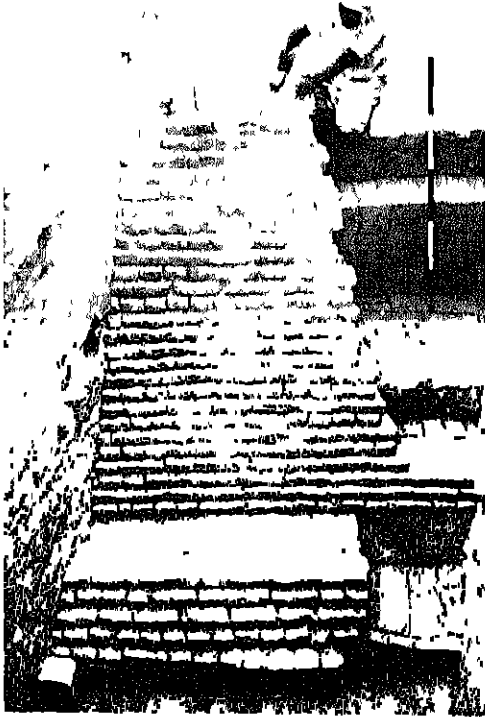
कई नगरो में ढके हुए नाले थे। इन्हें सावधानी से सीधी लाइन मे बनाया जाता था। हर नाली मे हल्की ढलान होती थी ताकि पानी आसानी से बह सके। अक्सर घरों की नालियों को सड़कों की नालियो से जोड़ दिया जाता था, जो बाद में बड़े नालो मे मिल जाती थीं। नालों के ढके होने के कारण इनमें जगह-जगह पर मेनहोल बनाए गए थे, जिनके ज़रिए इनकी देखभाल और सफ़ाई की जा सके। घर, नाले और सड़कों का निर्माण योजनाबद्ध तरीके से एक साथ ही किया जाता था।

यहाँ पर वर्णित घरों और पिछले अध्याय मे वर्णित घरों मे तुम्हे क्या अंतर दिखाई देता है? कोई दो अंतर बताओ।

नगरीय जीवन

हड़प्पा के नगरों मे बड़ी हलचल रहा करती होगी। यहाँ पर ऐसे लोग रहते होंगे, जो नगर की खास इमारतें बनाने की योजना में जुटे रहते थे। ये सभवत: यहाँ के शासक थे। यह भी संभव है, कि ये शासक लोगो को भेज कर दूर-दूर से धातु, बहुमूल्य पत्थर और अन्य उपयोगी चीज़ें मँगवाते थे। शायद शासक लोग खूबसूरत मनको तथा सोने-चाँदी से बने आभूषणों जैसी कीमती चीजो को अपने पास रखते होंगे। इन नगरो मे *लिपिक* भी होते थे, जो *मुहरों* पर तो लिखते ही थे, और शायद अन्य चीज़ों पर भी लिखते होंगे, जो बच नहीं पाई है।

इसके अलावा नगरों मे *शिल्पकार* स्त्री-पुरुष भी रहते थे जो अपने घरो या किसी उद्योग-स्थल पर तरह-तरह की चीज़ें बनाते होंगे। लोग लबी यात्राएँ भी करते थे, और वहाँ से उपयोगी वस्तुएँ लाते थे, और साथ ही लाते थे सुदूर देशों की किस्से-कहानियाँ। मिट्टी से बने कई खिलौने भी मिले हैं, जिनसे बच्चे खेलते होंगे।

नगर में रहने वाले लोगों की एक सूची बनाओ।

क्या इनमें से कुछ ऐसे लोग हैं, जो मेहरगढ़ जैसे गाँवों में रहते थे?
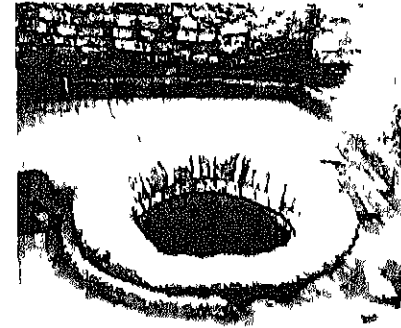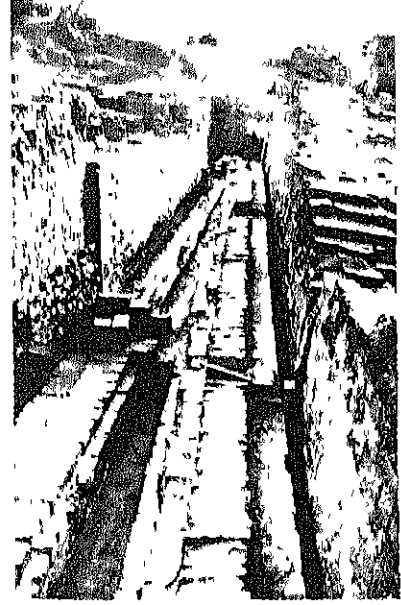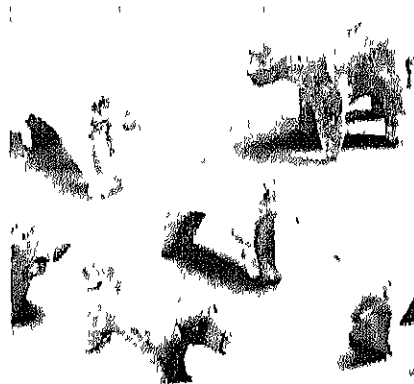
सबसे ऊपर: मोहनजोदड़ो की एक सड़क और उसमे बना नाला।
ऊपर: एक कुआँ।
बाई ओर नीचे: हड़प्पा की एक मुहर।
इस मुहर के ऊपर के चिह्न एक खास लिपि मे है। उपमहाद्वीप में पाए गए लेखन का यह प्राचीनतम उदाहरण है। विद्वानो ने इसे पढ़ने की कोशिश की है, लेकिन अभी तक यह पता नही चल पाया है कि इसका अर्थ क्या है।
दाई ओर नीचे: पकी मिट्टी के खिलौने।

नगर और नए शिल्प

आओ अब कुछ ऐसी चीज़ो के बारे में अध्ययन करे जो हड़प्पा के नगरो से प्राप्त हुई हैं। पुरातत्त्वविदों को जो चीज़े वहाँ मिली है, उनमें अधिकतर पत्थर, शंख, ताँबे, काँसे, सोने और चाँदी जैसी *धातुओं* से बनाई गई थी। ताँबे और काँसे से औज़ार, हथियार, गहने और बर्तन बनाए जाते थे। सोने और चाँदी से गहने और बर्तन बनाए जाते थे।

यहाँ मिली सबसे आकर्षक वस्तुओ में मनके, बाट और फलक हैं।
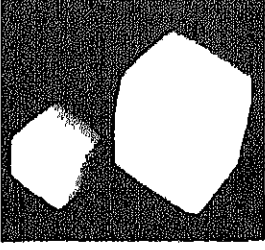
ऊपर: पत्थर के बाट देखो। कितने ध्यान से और उपयुक्त तरीके से इन बाटों को बनाया गया है। इन्हे चर्ट पत्थर से बनाया गया था। इन्हे शायद बहुमूल्य पत्थर और धातुओ को तौलने के लिए बनाया गया होगा।

मध्य में बाएँ मनके। इनमे से कई कार्नीलियन पत्थरो से बनाए गए थे। पत्थरो को काट और तराशकर मनके बनाए गए। इनके बीच छेद किए गए थे ताकि धागा डालकर माला बनाई जाए।

मध्य मे दाएँ पत्थर के धारदार फलक

नीचे दाएँ: कढाईदार वस्त्र। एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की पत्थर से बनी मूर्ति जो मोहनजोदड़ो से मिली थी। इसमे उसे कढ़ाईदार वस्त्र पहने दिखाया गया है।
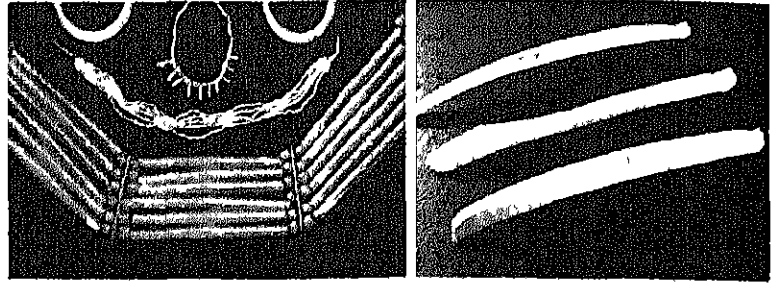
हड़प्पा सभ्यता के लोग पत्थर की मुहरे बनाते थे। इन आयाताकार (पृष्ठ 35) मुहरों पर सामान्यत: जानवरो के चित्र मिलते हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोग काले रंग से डिज़ाइन किए हुए खूबसूरत लाल मिट्टी के बर्तन बनाते थे। देखो पृष्ठ 6 ।

अध्याय 3 मे तुमने जिन गाँवो के बारे मे पढ़ा क्या वहाँ भी धातु का उपयोग होता था?

क्या वे पत्थर के बाट बनाते थे?

संभवत: 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती होती थी। मोहनजोदड़ो से कपड़े के टुकड़ों के अवशेष चाँदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य ताँबे की वस्तुओं से चिपके हुए मिले हैं। पकी मिट्टी तथा फ़ेयॅन्स से बनी तकलियाँ सूत कताई का संकेत देती है।
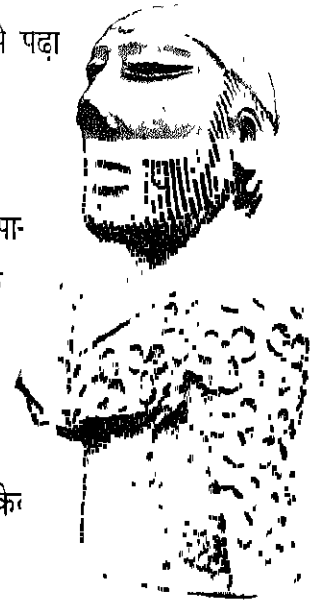
इनमें से अधिकाश वस्तुओं का निर्माण *विशेषज्ञों* ने किया था। विशेषज्ञ उसे कहते हैं, जो किसी खास चीज को बनाने के लिए खास प्रशिक्षण लेता है जैसे - पत्थर तराशना, मनके चमकाना या फिर मुहरो पर पच्चीकारी करना, आदि। पृष्ठ 36 पर चित्र देखो कि मूर्ति का चेहरा कितने आकर्षक ढग से बनाया गया और उसकी दाढ़ी कितनी अच्छी तरह दर्शाई गई है। यह किसी विशेषज्ञ मूर्तिकार का ही काम हो सकता है।

हर व्यक्ति विशेषज्ञ नही हो सकता था। हमें यह पता नही है कि क्या सिर्फ पुरुष ही ऐसे कामो में प्रशिक्षण हासिल करते थे, या फिर केवल महिलाएँ ही। शायद कुछ महिलाएँ और पुरुष दोनों ही इस काम मे दक्ष थे।

फ़ेयॅन्स

पत्थर और शंख प्राकृतिक तौर पर पाए जाते हैं, लेकिन फ़ेयॅन्स को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता है। बालू या स्फ़टिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएँ बनाई जाती थीं। उसके बाद उन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंग प्राय: नीले या हल्के समुद्री हरे होते थे।

फ़ेयॅन्स से मनके, चूड़ियाँ, बाले और छोटे बर्तन बनाए जाते थे।

कच्चे माल की खोज में

कच्चा माल उन पदार्थों को कहते हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से मिलते है या फिर किसान या पशुपालक उनका उत्पादन करते हैं जैसे लकड़ी या धातुओं के अयस्क प्राकृतिक रूप से उपलब्ध कच्चे माल है। इनसे फिर कई तरह की चीज़ें बनाई जाती हैं। मिसाल के तौर पर किसानों द्वारा पैदा किए गए कपास को कच्चा माल कहते है, जिससे बाद में कताई-बुनाई करके कपड़ा तैयार किया जाता है। हड़प्पा में लोगों को कई चीजे वहीं मिलती थी, लेकिन ताँबा, लोहा, सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थरो जैसे पदार्थों का वे दूर-दूर से आयात करते थे।

हड़प्पा के लोग ताँबे का आयात सम्भवत: आज के राजस्थान से करते थे। यहाँ तक कि पश्चिम एशियाई देश ओमान से भी ताँबे का आयात किया जाता था। काँसा बनाने के लिए ताबे के साथ मिलाई जाने वाली धातु टिन का आयात आधुनिक ईरान और अफ़गानिस्तान से किया जाता था। सोने का आयात आधुनिक कर्नाटक और बहुमूल्य पत्थर का आयात गुजरात, ईरान और अफ़गानिस्तान से किया जाता था।
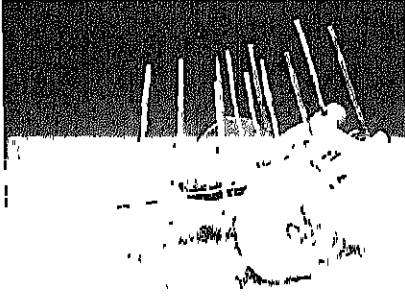
चीजों को एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाया जाता था?
इन चित्रों को देखो। एक खिलौना है, और दूसरी एक मुहर।
क्या तुम बता सकते हो, कि *हड़प्पा के लोग यातायात के लिए किन साधनों का प्रयोग करते थे?*
पिछले अध्यायों में क्या तुमको पहिए वाले वाहनों की जानकारी दी गई है?
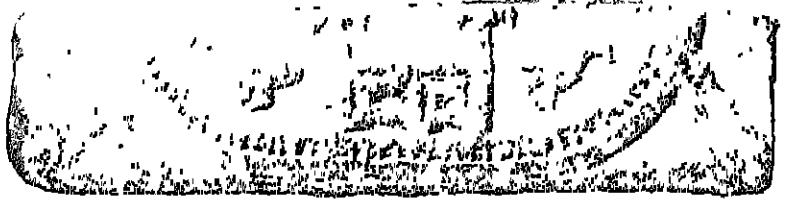
नगरों में रहने वालों के लिए भोजन

लोग नगरों के अलावा गाँवो में भी रहते थे। वे अनाज उगाते थे और जानवर पालते थे। किसान और चरवाहे ही शहरो मे रहने वाले शासकों, लेखकों और दस्तकारों को खाने के सामान देते थे। पौधों के अवशेषो से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे।

बच्चो का खिलौना–हल। आज हल चलाने वाले ज़्यादातर किसान पुरुष होते है। हमे ज्ञात नही है कि क्या हडप्पा मे भी यही प्रथा थी।

जमीन की जुताई के लिए *हल* का प्रयोग एक नई बात थी। हड़प्पा काल के हल तो नहीं बच पाए हैं, क्योंकि वे प्राय: लकड़ी से बनाए जाते थे, लेकिन हल के आकार के खिलौने मिले है। इस क्षेत्र में बारिश कम होती है, इसलिए *सिंचाई* के लिए लोगो ने कुछ तरीके अपनाए होंगे। संभवत: पानी का संचय किया जाता होगा और जरूरत पड़ने पर उससे फ़सलों की सिंचाई की जाती होगी।

हड़प्पा के लोग गाय, भैस, भेड़ और बकरियाँ पालते थे। बस्तियों के आस-पास तालाब और चारागाह होते थे। लेकिन सूखे महीनो मे मवेशियो के झुंडो को चारा-पानी की तलाश मे दूर-दूर तक

ले जाया जाता था। वे बेर जैसे फलो को इकट्ठा करते थे, मछलियाँ पकड़ते थे, और हिरण जैसे जानवरों का शिकार भी करते थे।

गुजरात में हड़प्पाकालीन नगर का सूक्ष्म-निरीक्षण

कच्छ के इलाके में खदिर बेत के किनारे धौलावीरा नगर बसा था। वहाँ साफ़ पानी मिलता था और ज़मीन उपजाऊ थी। जहाँ हड़प्पा सभ्यता के कई नगर दो भागों मे विभक्त थे वहीं धौलावीरा नगर को तीन भागों मे बाँटा गया था। इसके हर हिस्से के चारो ओर पत्थर की ऊँची-ऊँची दीवार बनाई गई थी। इसके अदर जाने के लिए बड़े-बड़े प्रवेश-द्वार थे। इस नगर में एक खुला मैदान भी था, जहाँ सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। यहाँ मिले कुछ अवशेषों मे हड़प्पा लिपि के बड़े-बड़े अक्षरो को पत्थरों में खुदा पाया गया है। इन अभिलेखो को सभवतः लकड़ी में जड़ा गया था। यह एक अनोखा अवशेष है, क्योकि आमतौर पर हड़प्पा के लेख मुहर जैसी छोटी वस्तुओं पर पाए जाते हैं।

गुजरात की खम्भात की खाड़ी मे मिलने वाली साबरमती की एक उपनदी के किनारे बसा लोथल नगर ऐसे स्थान पर बसा था, जहाँ कीमती पत्थर जैसा कच्चा माल आसानी से मिल जाता था। यह पत्थरों, शखों और धातुओं से बनाई गई चीजो का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। इस नगर में एक भंडार गृह भी था। इस भडार गृह से कई मुहरें और मुद्राकन या मुहरबंदी (गीली मिट्टी पर दबाने से बनी उनकी छाप) मिले हैं।

लोथल का बन्दरगाह।

यह बड़ा तालाब लोथल का बन्दरगाह रहा होगा, जहाँ समुद्र के रास्ते आने वाली नावे रुकती थी। संभवतः यहाँ पर माल चढ़ाया-उतारा जाता होगा।
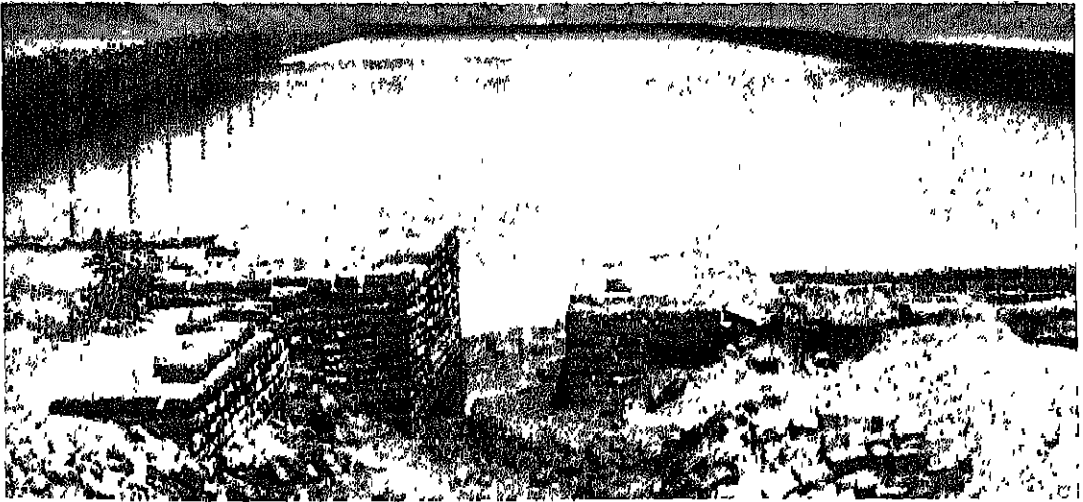
यहाँ पर एक इमारत मिली है, जहाँ संभवतः मनके बनाने का काम होता था। पत्थर के टुकड़े, अधबने मनके, मनके बनाने वाले उपकरण और तैयार मनके भी यहाँ मिले हैं।

मुद्रा (मुहर) और मुद्रांकन या मुहरबंदी

मुहरो का प्रयोग सामान से भरे उन डिब्बों या थैलो को चिह्नित करने के लिए किया जाता होगा, जिन्हे एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाता था। थैले को बंद करने के बाद उनके मुहानो पर गीली मिट्टी पोत कर उन पर मुहर लगाई जाती थी। मुहर की छाप को मुहरबन्दी कहते हैं।

अगर यह छाप टूटी हुई नही होती थी, तो यह साबित हो जाता था, कि सामान के साथ छेड़-छाड़ नहीं हुई है।

आज भी मुहर का प्रयोग होता है। पता लगाओ कि मुहरो का उपयोग किसलिए किया जाता है।

सभ्यता के अंत का रहस्य

लगभग 3900 साल पहले एक बड़ा बदलाव देखने को मिलता है। अचानक लोगो ने इन नगरो को छोड़ दिया। लेखन, मुहर और बाटों का प्रयोग बंद हो गया। दूर-दूर से कच्चे माल का आयात काफी कम हो गया। मोहनजोदड़ो में सड़को पर कचरे के ढेर बनने लगे। जलनिकास प्रणाली नष्ट हो गई और सड़को पर ही झुग्गीनुमा घर बनाए जाने लगे।

यह सब क्यो हुआ? कुछ पता नहीं। कुछ विद्वानों का कहना है, कि नदियॉ सूख गई थी। अन्य का कहना है, कि जंगलों का विनाश हो गया था। इसका कारण ये हो सकता है, कि ईटें पकाने के लिए ईधन की ज़रूरत पड़ती थी। इसके अलावा मवेशियो के बड़े-बड़े झुंडो से चारागाह और घास वाले मैदान समाप्त हो गए होगे। कुछ इलाको में बाढ़ आ गई। लेकिन इन कारणों से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि सभी नगरों का अंत कैसे हो गया। क्योकि बाढ़ और नदियों के सूखने का असर कुछ ही इलाकों में हुआ होगा।

ऐसा लगता है, कि शासकों का नियंत्रण समाप्त हो गया। जो भी हुआ हो, परिवर्तन का असर बिल्कुल साफ़ दिखाई देता है। आधुनिक पाकिस्तान के

सिंध और पजाब की बस्तियाँ उजड़ गई थी। कई लोग पूर्व और दक्षिण के इलाकों मे नई और छोटी बस्तियो मे जाकर बस गए।

इसके लगभग 1400 साल बाद नए नगरो का विकास हुआ। इनके बारे मे तुम अध्याय 6 और 9 मे पढ़ोगे।

अन्यत्र

अपने एटलस मे मिस्र ढूँढो। नील नदी के आसपास वाले इलाको को छोड़कर मिस्र का अधिकाश भाग रेगिस्तान है।

लगभग 5000 साल पहले मिस्र मे शासन करने वाले राजाओ ने सोना, चॉदी, हाथीदाँत, लकड़ी और हीरे-जवाहरात लाने के लिए अपनी सेनाएँ दूर-दूर तक भेजी। इन्होने बड़े-बड़े मकबरे बनवाए जिन्हे 'पिरामिड' के नाम से जाना जाता है।

राजाओं के मरने पर उनके शवो को इन्ही पिरामिडो मे दफ़नाकर सुरक्षित रखा जाता था। इन शवो को *ममी* कहा जाता है। उनके शवों के साथ और भी अनेक चीजे दफ़नायी जाती थी। इनमे खाद्यान्न, पेय, वस्त्र, गहने, बर्तन, वाद्ययंत्र, हथियार और जानवर शामिल है। कभी-कभी शव के साथ उनके सेवक और सेविकाओं को भी दफ़ना दिया जाता था। दुनिया के इतिहास मे शवों को दफ़नाने की परंपरा को देखते हुए मिस्र मे सबसे ज्यादा धन-दौलत खर्च किया जाता था।

क्या तुम्हे लगता है, कि मरने के बाद इन राजाओ को इन चीजो की ज़रूरत पड़ी होगी?
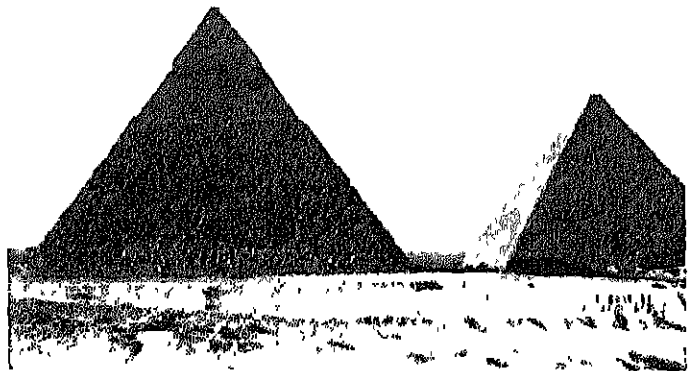
कल्पना करो

तुम अपने माता-पिता के साथ 4000 साल पहले लोथल से मोहनजोदड़ो की यात्रा कर रहे हो। यह बताओ कि तुम यात्रा कैसे करोगे, तुम्हारे माता-पिता यात्रा के लिए अपने साथ क्या-क्या ले जाएँगे? और मोहनजोदड़ो मे तुम क्या देखोगे?

आओ याद करें

1 पुरातत्वविदों को कैसे ज्ञात हुआ कि हड़प्पा सभ्यता के दौरान कपडे का उपयोग होता था?

2. निम्नलिखित का सुमेल करो :

ताँबा	गुजरात
सोना	अफ़गानिस्तान
टिन	राजस्थान
बहुमूल्य पत्थर	कर्नाटक

3. हडप्पा के लोगो के लिए धातुएँ, लेखन, पहिया और हल क्यों महत्वपूर्ण थे?

उपयोगी शब्द

नगर
नगरदुर्ग
शासक
लिपिक
मुहर
शिल्पकार
धातु
विशेषज्ञ
कच्चा माल
हल
सिंचाई

आओ चर्चा करें

4. इस अध्याय में पकी मिट्टी (टेराकोटा) से बने सभी खिलौनो की सूची बनाओ। इनमे से कौन-से खिलौने बच्चों को ज्यादा पसद आए होगे?

5. हड़प्पा के लोगो की भोजन सामग्री की सूची बनाओ। आज इनमे से तुम क्या-क्या खाते हो? निशान लगाकर बताओ।

6. हड़प्पा के किसानो और पशुपालको का जीवन क्या उन किसानो से भिन्न था, जिनके बारे में तुमने पिछले अध्याय मे पढ़ा है? अपने उत्तर मे इसका कारण बताओ।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मेहरगढ़ मे कपास की खेती (लगभग 7000 साल पहले)
- नगरो का आरंभ (लगभग 4700 साल पहले)
- हड़प्पा के नगरो के अंत की शुरुआत (लगभग 3900 साल पहले)
- अन्य नगरों का विकास (लगभग 2500 साल पहले)

आओ करके देखें

7. अपने शहर या गाँव की तीन महत्वपूर्ण इमारतो का ब्यौरा दो। क्या वे बस्ती के महत्वपूर्ण इलाके मे बनी है। इन इमारतों का उपयोग किसलिए किया जाता है?

8. तुम्हारे इलाके मे क्या कोई पुरानी इमारत है? यह पता करो कि वह कितनी पुरानी है और उनकी देखभाल कौन करता है।

अध्याय 5

पुस्तकालय में मेरी

जैसे ही घंटी बजी शिक्षक ने छात्रों को अपने साथ आने को कहा। आज वे पहली बार पुस्तकालय जा रहे थे। मेरी ने देखा कि पुस्तकालय उसकी कक्षा से काफी बड़ा था और वहाँ किताबों से भरे कई रैक थे। कोने में एक अलमारी थी जो मोटी-मोटी किताबों से भरी थी। मेरी को एक अलमारी खोलने की कोशिश करते देख शिक्षक ने कहा, "उस अलमारी मे अलग-अलग धर्मों से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण किताबे है। क्या तुम्हे मालूम है कि हमारे पास वेदो का भी एक संग्रह है?"

मेरी सोचने लगी। "वेद क्या है?" चलो पता लगाएँ।

दुनिया के प्राचीनतम ग्रंथों में एक

शायद तुमने वेदों के बारे में सुना होगा। वेद चार है – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। सबसे पुराना वेद है, ऋग्वेद जिसकी रचना लगभग 3500 साल पहले हुई। ऋग्वेद में एक हज़ार से ज्यादा *प्रार्थनाएँ* हैं जिन्हे, *सूक्त* कहा गया है। सूक्त का मतलब है, अच्छी तरह से बोला गया। ये विभिन्न देवी-देवताओ की स्तुति में रचे गए है। इनमें से तीन देवता बहुत महत्वपूर्ण हैं : अग्नि, इन्द्र और सोम। अग्नि आग के देवता, इन्द्र युद्ध के देवता हैं और सोम एक पौधा है, जिससे एक खास पेय बनाया जाता था।

वैदिक प्रार्थनाओं की रचना ऋषियों ने की थी। आचार्य विद्यार्थियों को इन्हें अक्षरो, शब्दों और वाक्यो में बाँटकर, सस्वर पाठ द्वारा कंठस्थ करवाते थे। अधिकाश सूक्तों के रचयिता, सीखने और सिखाने वाले पुरुष थे। कुछ प्रार्थनाओं की रचना महिलाओ ने भी की थी। ऋग्वेद की भाषा प्राक् संस्कृत या वैदिक संस्कृत कहलाती है। तुम स्कूल मे जो संस्कृत पढ़ती हो उससे यह भाषा थोड़ी भिन्न है।

संस्कृत और अन्य भाषाएँ

संस्कृत भाषा भारोपीय (भारत–यूरोपीय) भाषा-परिवार का हिस्सा है। भारत की कई भाषाएँ - असमिया, गुजराती, हिंदी, कश्मीरी और सिंधी तथा यूरोप की बहुत-सी भाषाएँ जैसे - अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन, यूनानी, इतालवी, स्पैनिश आदि इसी परिवार से जुड़ी हुई हैं। उन्हें एक भाषा-परिवार इसलिए कहा जाता है क्योंकि आरंभ में उनमे कई शब्द एक जैसे थे। उदाहरण के लिए 'मातृ' (संस्कृत), माँ (हिंदी) और 'मदर' (अंग्रेज़ी) शब्द को देखो।

क्या तुम्हें इनमे कोई समानता नज़र आती है?

उपमहाद्वीप में दूसरे भाषा-परिवारो की भी भाषाएँ बोली जाती हैं। उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर प्रदेशो मे तिब्बत-बर्मा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम, द्रविड़ भाषा-परिवार की भाषाएँ हैं। जबकि झारखंड और मध्य भारत के कई हिस्सो मे बोली जाने वाली भाषाएँ ऑस्ट्रो–एशियाटिक परिवार से जुड़ी है।

उन भाषाओ की सूची बनाओ जिनके बारे मे तुमने सुन रखा है। उनके भाषा-परिवारो को पहचानने की कोशिश करो।

हम जिन किताबों को पढ़ते हैं वे लिखी और छापी गई हैं। ऋग्वेद का उच्चारण किया जाता था और श्रवण किया जाता था न कि पढ़ा जाता था। रचना के कई सदियों बाद इसे पहली बार लिखा गया। इसे छापने का काम तो मुश्किल से दो सौ साल पहले हुआ।

इतिहासकार ऋग्वेद का अध्ययन कैसे करते हैं?

इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ताओ की तरह ही अतीत के बारे में जानकारी इकट्ठी करते हैं। लेकिन भौतिक अवशेषो के अलावा वे लिखित स्रोतों का भी उपयोग करते हैं। चलो देखते है कि वे ऋग्वेद का अध्ययन कैसे करते हैं।

ऋग्वेद के कुछ सूक्त वार्त्तालाप के रूप में हैं। विश्वामित्र नामक ऋषि और देवियो के रूप में पूजित दो नदियों (व्यास और सतलुज) के बीच यह संवाद एक ऐसे ही सूक्त का अंश है।

इन दोनों नदियों को मानचित्र 1 (पृष्ठ 2) मे खोजें तथा फिर पढ़े।
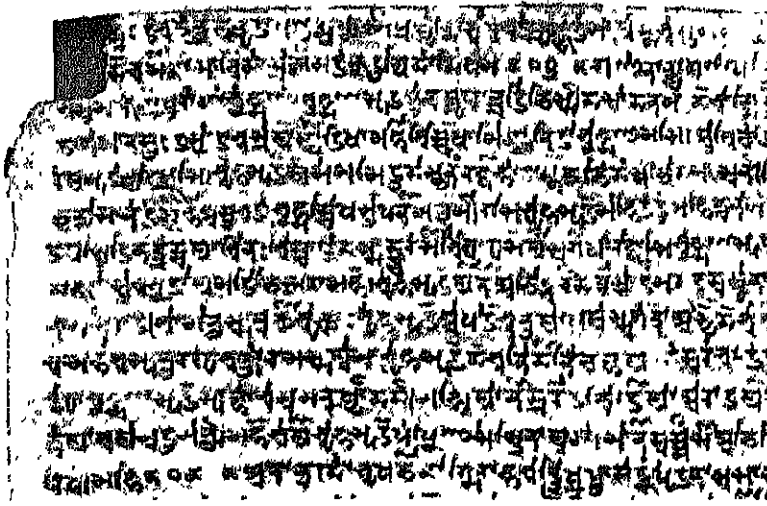
ऋग्वेद की पाण्डुलिपि का एक पन्ना।

भूर्ज वृक्ष की छाल पर लिखी यह पाण्डुलिपि कश्मीर मे पाई गई थी। लगभग 150 वर्ष पहले ऋग्वेद को सबसे पहली बार छापने के लिए इसका उपयोग किया गया था। इसी पाण्डुलिपि को देखकर अंग्रेज़ी अनुवाद तैयार हुआ। यह पाण्डुलिपि पुणे, महाराष्ट्र के एक पुस्तकालय मे सुरक्षित है।

विश्वामित्र और नदियाँ

विश्वामित्र – हे नदियो, अपने बछड़ो को चाटती हुई दो दमकती गायों की तरह, दो फुर्तीले घोड़ो की चाल से पहाड़ों से नीचे आओ। इन्द्र द्वारा दी हुई शक्ति से स्फूर्त तुम रथो की गति से सागर की ओर बह रही हो। तुम जल से परिपूर्ण हो और एक-दूसरे से मिल जाना चाहती हो।

नदियाँ – जल से परिपूर्ण हम देवताओ के बनाए रास्ते पर चलती है। एक बार निकलने पर हमे रोका नही जा सकता। हे ऋषि, तुम हमसे प्रार्थना क्यो कर रहे हो?

विश्वामित्र – हे बहनो, मुझ गायक की प्रार्थना सुनो। मै रथो और गाड़ियो सहित बहुत दूर से आया हूँ। कृपा करके अपने जल को हमारे रथो और गाड़ियो की धुरियो के ऊपर न उठाओ ताकि हम आसानी से उस पार जा सके।

नदियाँ – हम तुम्हारी प्रार्थना सुनेगे, जिससे तुम सब सुरक्षित उस पार जा सको।

इतिहासकार यह बताते है कि यह प्रार्थना उस क्षेत्र मे रची गई होगी जहाँ ये नदियाँ बहती हैं। वे यह भी सुझाते है कि जिस समाज में ऋषि रहते थे वहाँ घोड़ो और गायो को बहुत महत्त्व दिया जाता था। इसीलिए नदियो की तुलना घोड़ो और गायो से की गई है।

क्या तुम्हे लगता है कि रथ भी महत्वपूर्ण थे? अपने जवाब के लिए कारण बताओ। प्रार्थना की पंक्तियो को दुबारा पढ़कर यह बताओ कि उनमे परिवहन के लिए किन-किन साधनो का उल्लेख है।

ऋग्वेद की प्रार्थनाओ मे अन्य दूसरी नदियो खासकर सरस्वती, सिन्धु और उसकी सहायक नदियों का भी ज़िक्र है। गंगा और यमुना का उल्लेख सिर्फ़ एक बार हुआ है।

मानचित्र 1 को देखो और ऐसी पाँच नदियो की सूची बनाओ जिनके नाम ऋग्वेद मे नही है।

मवेशी, घोड़े और रथ

ऋग्वेद में मवेशियों, बच्चो (खासकर पुत्रो) और घोड़ों की प्राप्ति के लिए अनेक प्रार्थनाएँ हैं। घोड़ों को लड़ाई में रथ खीचने के काम में लाया जाता था। इन लड़ाइयो मे मवेशी जीत कर लाए जाते थे। लड़ाइयाँ वैसे ज़मीन के लिए भी लड़ी जाती थीं जहाँ अच्छे चारागाह हों या जहाँ पर जौ जैसी जल्दी तैयार हो जाने वाली फ़सलों को उपजाया जा सकता हो। कुछ लड़ाइयाँ पानी के स्रोतो और लोगों को बदी बनाने के लिए भी लड़ी जाती थीं।

युद्ध मे जीते गए धन का कुछ भाग सरदार रख लेते थे तथा कुछ हिस्सा पुरोहित को दिया जाता था। शेष धन आम लोगों में बाँट दिया जाता था। कुछ धन *यज्ञ* करने के लिए भी प्रयुक्त होता था। यज्ञ की आग में आहुति दी जाती थी। ये आहुतियाँ देवी-देवताओं को दी जाती थी। घी, अनाज और कभी-कभी जानवरों की भी आहुति दी जाती थी।

अधिकांश पुरुष इन युद्धों में भाग लेते थे। कोई स्थायी सेना नही होती थी, लेकिन लोग सभाओ में मिलते-जुलते थे और युद्ध व शांति के विषय में सलाह-मशविरा करते थे। वहाँ ये ऐसे लोगों को अपना सरदार चुनते थे जो बहादुर और कुशल योद्धा हो।

लोगों की विशेषता बताने वाले शब्द

लोगों का वर्गीकरण काम, भाषा, परिवार या समुदाय, निवास स्थान या सांस्कृतिक परंपरा के आधार पर किया जाता रहा है। ऋग्वेद में लोगो की विशेषता बताने वाले कुछ शब्दों को देखो।

ऐसे दो समूह हैं जिनका वर्गीकरण काम के आधार पर किया गया है। पुरोहित जिन्हें कभी-कभी ब्राह्मण कहा जाता था तरह-तरह के यज्ञ और अनुष्ठान करते थे। दूसरे लोग थे - राजा।

ये राजा वैसे नही थे जिनके बारे में तुम बाद में पढ़ोगी। ये न तो बड़ी राजधानियों और महलों में रहते थे, न इनके पास सेना थी, न ही ये कर वसूलते थे। प्राय: राजा की मृत्यु के बाद उसका बेटा अपने आप ही शासक नहीं बन जाता था।

पिछले अनुभाग को एक बार फिर पढ़ो और यह पता लगाने की कोशिश करो कि राजा क्या करते थे।

जनता या पूरे समुदाय के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल होता था। एक था जन जिसका प्रयोग हिंदी व अन्य भाषाओ में आज भी होता है। दूसरा था *विश्* जिससे *वैश्य* शब्द निकला है। इस विषय पर तुम अध्याय 6 मे विस्तार से पढ़ोगी।

ऋग्वेद मे *विश्* और *जनों* के नाम मिलते हैं। इसलिए हमें पुरू-जन या विश्, भरत-जन या विश्, यदु-जन या विश् जैसे कई उल्लेख मिलते हैं।

तुम्हे इनमें से कोई नाम जाना-पहचाना लगता है?

जिन लोगो ने इन प्रार्थनाओं की रचना की वे कभी-कभी खुद को आर्य कहते थे तथा अपने विरोधियों को *दास* या *दस्यु* कहते थे। दस्यु वे लोग थे जो यज्ञ नहीं करते थे और शायद दूसरी भाषाएँ बोलते थे। बाद के समय मे *दास* (स्त्रीलिंग: दासी) शब्द का मतलब *गुलाम* हो गया। दास वे स्त्री और पुरुष होते थे जिन्हे युद्ध मे बंदी बनाया जाता था। उन्हें उनके मालिक की जायदाद माना जाता था। जो भी काम मालिक चाहते थे उन्हे वह सब करना पड़ता था।

जिस युग मे उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम मे ऋग्वेद की रचना हो रही थी उसी समय दूसरी जगहो पर एक अलग तरह का विकास हो रहा था। देखो, वहाँ क्या हो रहा था।

खामोश प्रहरी– कहानी महापाषाणों की

अगले पृष्ठ के चित्रों को देखो।

ये शिलाखण्ड महापाषाण (महा : बड़ा, पाषाण : पत्थर) नाम से जाने जाते हैं। ये पत्थर दफ़न करने की जगह पर लोगों द्वारा बड़े करीने से लगाए गए थे। महापाषाण कब्रे बनाने की प्रथा लगभग 3000 साल पहले शुरू हुई। यह प्रथा दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत और कश्मीर में प्रचलित थी।

कुछ महत्वपूर्ण महापाषाण पुरास्थल मानचित्र 2 में दिखाए गए हैं। कुछ महापाषाण ज़मीन के ऊपर ही दिख जाते है। कुछ महापाषाण ज़मीन के भीतर भी होते हैं।

कई बार पुरातत्त्वविदों को गोलाकार सजाए हुए पत्थर मिलते हैं। कई बार अकेला खड़ा हुआ पत्थर मिलता है। ये ही एकमात्र प्रमाण हैं जो जमीन के नीचे कब्रों को दर्शाते हैं।

महापाषाणों के निर्माण के लिए लोगो को कई तरह के काम करने पड़ते थे। हमने जो कार्यो की सूची बनाई है उन्हे क्रमबद्ध करो। गड्ढे खोदना, शिलाखडों को ढो कर लाना, बड़े पत्थरो को तराशना और मरे हुए को दफ़नाना।
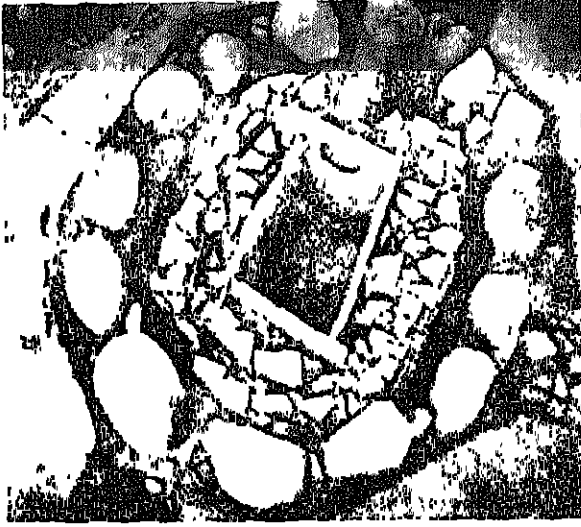
ऊपर: इस तरह के महापाषाण को ताबूत शवाधान (सिस्ट) कहा जाता है। यहाँ दिखाए गए सिस्ट मे एक पोर्ट-होल (बड़ा सुराख) है जो शायद पत्थरो से बने हुए कमरे मे जाने का रास्ता था।

इन सब कब्रों में कुछ समानताएँ हैं। सामान्यत: मृतको को खास किस्म के मिट्टी के बर्तनों के साथ दफ़नाया जाता था जिन्हें काले-लाल मिट्टी के बर्तनो (ब्लैक एण्ड रेड वेयर) के नाम से जाना जाता है। इनके साथ ही मिले है *लोहे* के औज़ार और हथियार, घोड़ो के कंकाल और सामान तथा पत्थर और सोने के गहने।

क्या हड़प्पा के शहरो मे *लोहे* का प्रयोग होता था?
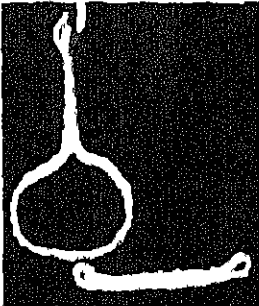
महापाषाण कब्रों से मिले लोहे के सामान

बाईं ओर: घोड़े के लिए सामान
नीचे बाईं ओर: कुल्हाड़ियाँ
नीचे: एक कटार
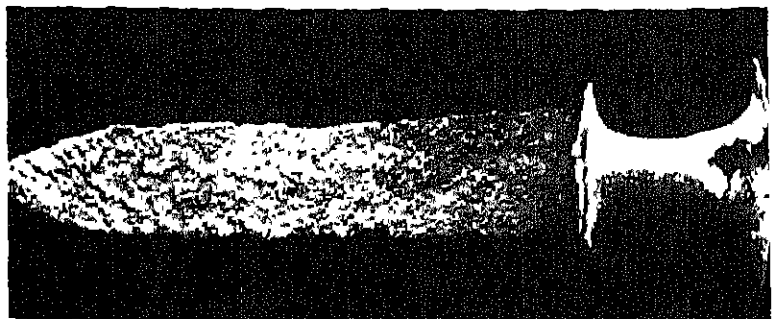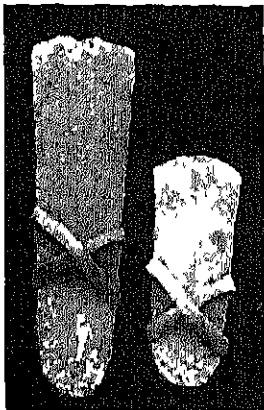
लोगों की सामाजिक असमानताओं के बारे में पता करना

पुरातत्त्वविद् यह मानते हैं कि कंकाल के साथ पाई गई चीजे मरे हुए व्यक्ति की ही रही होगी। कभी-कभी एक कब्र की तुलना मे दूसरी कब्र मे ज्यादा चीजे मिलती है। मानचित्र 2 पर (पृष्ठ 14) ब्रह्मगिरि को खोजो। यहाँ एक व्यक्ति की कब्र मे 33 सोने के मनके और शख पाए गए हैं। दूसरे कंकालों के पास सिर्फ़ कुछ मिट्टी के बर्तन ही पाए गए। यह दफ़नाए गए लोगो की सामाजिक स्थिति में भिन्नता को दर्शाता है। कुछ लोग अमीर थे तो कुछ लोग गरीब, कुछ लोग सरदार थे तो दूसरे अनुयायी।

क्या कुछ कब्रगाहें खास परिवारों के लिए थीं?

कभी-कभी महापाषाणों में एक से अधिक कंकाल मिले है। वे यह दर्शाते है कि शायद एक ही परिवार के लोगों को एक ही स्थान पर अलग-अलग समय पर दफ़नाया गया था। बाद में मरने वाले लोगों को पोर्ट-होल के रास्ते कब्रो में लाकर दफ़नाया जाता था। ऐसे स्थान पर गोलाकार लगाए गए पत्थर या चट्टान चिह्नों का काम करते थे, जहाँ लोग आवश्यकतानुसार शवो को दफ़नाने दुबारा आ सकते थे।

इनामगाँव के एक विशिष्ट व्यक्ति की कब्र

मानचित्र 2 में (पृष्ठ 14) इनामगाँव को खोजो। यह भीमा की सहायक नदी घोड़ के किनारे एक जगह है। इस जगह पर 3600 से 2700 साल पहले लोग रहते थे। यहाँ वयस्क लोगो को प्राय: गड्ढे मे सीधा लिटा कर दफ़नाया जाता था। उनका सिर उत्तर की ओर होता था। कई बार उन्हे घर के अंदर ही दफ़नाया जाता था। ऐसे बर्तन जिनमे शायद खाना और पानी हों, दफ़नाए गए शव के पास रख दिए जाते थे।

एक आदमी को पाँच कमरों वाले मकान के आँगन में, चार पैरों वाले मिट्टी के एक बड़े से सदूक में दफ़नाया गया था। बस्ती के बीच में बसा

यह घर गाँव के सबसे बड़े घरों में एक था। इस घर मे एक अनाज का गोदाम भी था। शव के पैर मुड़े हुए थे।

क्या तुम्हें लगता है कि यह किसी सरदार का शव था? अपने जवाब का कारण बताओ।

क्या बताते हैं हमें कंकालों के अध्ययन

छोटे आकार के आधार पर एक बच्चे के कंकाल को आसानी से पहचाना जा सकता है। लेकिन एक बच्चे और बच्ची के ककाल के बीच कोई बड़ा फ़र्क नही होता।

क्या हम यह पता लगा सकते है कि कंकाल किसी पुरुष का था या स्त्री का?

कभी-कभी लोग कंकाल के साथ मिले सामानो के आधार पर इसका अंदाजा लगाते है। उदाहरण के लिए यदि ककाल के साथ गहने मिलते हैं तो कई बार उसे महिला का कंकाल मान लिया जाता है। लेकिन ऐसी समझ के साथ समस्याएँ हैं। अक्सर पुरुष भी आभूषण पहनते थे।

कंकाल का लिग पहचानने का बेहतर तरीका उसकी हड्डियों की जाँच है। चूँकि महिलाएँ बच्चो को जन्म देती हैं इसलिए उनका कटि-प्रदेश या कूल्हा पुरुषों से ज़्यादा बड़ा होता है।

ये समझ कंकालो के आधुनिक अध्ययन पर आधारित है।

आज से लगभग 2000 साल पहले चरक नाम के प्रसिद्ध वैद्य हुए थे। उन्होने चिकित्सा शास्त्र पर *चरक संहिता* नाम की किताब लिखी। वे कहते है कि मनुष्य के शरीर मे 360 हड्डियाँ होती है। यह आधुनिक शरीर रचना विज्ञान की 206 हड्डियो से काफी ज़्यादा है। सम्भवत: चरक ने अपनी गिनती में दाँत, हड्डियों के जोड़ और कार्टिलेज को जोड़कर यह संख्या बताई थी।

तुम्हारे अनुसार शरीर के बारे मे उन्होने इतनी विस्तृत जानकारी कैसे इकट्ठा की होगी?

इनामगाँव के लोगों के काम-धंधे

इनामगाँव में पुरातत्त्वविदो को गेहूँ, जौ, चावल, दाल, बाजरा, मटर और तिल के बीज मिले हैं। कई जानवरों की हड्डियाँ भी मिली हैं। कई हड्डियो पर काटने के निशान से यह अंदाजा होता है कि लोग इन्हे खाते होंगे। गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता, घोड़ा, गधा, सूअर, साँभर, चितकबरा हिरण, कृष्ण-मृग, खरहा, नेवला, चिड़ियाँ, घड़ियाल, कछुआ, केकड़ा और मछली की हड्डियाँ भी पाई गई है। ऐसे साक्ष्य मिले हैं कि बेर, आँवला, जामुन, खजूर और कई तरह की रसभरियाँ एकत्र की जाती थीं।

इस प्रमाण के आधार पर इनामगाँव मे लोगो के काम-धधो की एक सूची बनाओ।

अन्यत्र

एटलस मे चीन को देखो। लगभग 3500 साल पहले हम यहाॅ की लेखन कला के सबसे पुराने उदाहरण पाते है।

यह जानवरो की हड्डियो पर लिखा गया था। इन्हें भविष्यवाणी करने वाली हड्डियाॅ कहा जाता है, क्योंकि यह मान्यता थी कि ये भविष्य बताती हैं। राजा लोग लिपिकारों से इन हड्डियो पर सवाल लिखवाते थे -- क्या वे युद्व जीतेंगे? क्या फसले अच्छी होगी? क्या उन्हे पुत्र होंगे? फिर इन हड्डियो को आग मे डाल दिया जाता था जहाॅ इनमे गर्मी से चटक कर दरारे पड़ जाती थी। भविष्यवक्ता इन दरारों को बड़े ध्यान से देखकर भविष्यवाणी करने की कोशिश करते थे। जैसा शायद तुम भी सोच रही होगी ये भविष्यवक्ता कभी-कभी गलती भी करते थे।

ये राजा शहरों मे महल बनाकर रहते थे। उन्होने बेशुमार दौलत इकट्ठी कर ली थी जिनमें बड़े-बड़े नक्काशी किए हुए काँसे के बर्तन शामिल थे। लेकिन वे लोहे का इस्तेमाल करना नही जानते थे।

ऋग्वेद के राजा और इन राजाओ के बीच कोई एक फ़र्क बताओ।
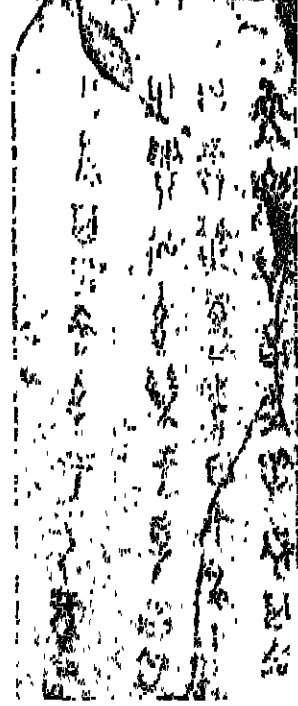
कल्पना करो

तुम 3000 वर्ष पहले के इनामगाॅव में रहती हो। पिछली रात सरदार की मृत्यु हो गई। आज, तुम्हारे माता-पिता दफन की तैयारी कर रहे है। यह बताते हुए सारे दृश्य का वर्णन करो कि अतिम सस्कार के लिए कैसे भोजन तैयार किया जा रहा है। तुम्हे क्या लगता है, खाने मे क्या दिया जाएगा?

उपयोगी शब्द

वेद
प्रार्थना
भाषा
रथ
यज्ञ
राजा
दास
महापाषाण
कब्र
कंकाल
लोहा

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- वेदो की रचना का प्रारभ (लगभग 3500 साल पहले)
- महापाषाणो के निर्माण की शुरुआत (लगभग 3000 साल पहले)
- इनामगाँव मे कृषको का निवास (3600 से 2700 साल पहले)
- चरक (लगभग 2000 साल पहले)

आओ याद करें

1. निम्नलिखित को सुमेल करो :

सूक्त	सजाए गए पत्थर
रथ	अनुष्ठान
यज्ञ	अच्छी तरह से बोला गया
दास	युद्ध मे प्रयोग किया जाता था
महापाषाण	गुलाम

2. वाक्यो को पूरा करो

(क) ———— के लिए दासो का इस्तेमाल किया जाता था।

(ख) ———— मे महापाषाण पाए जाते है।

(ग) ज़मीन पर गोले में लगाए गए पत्थर या चट्टान ———— का काम करते थे।

(घ) पोर्ट-होल का इस्तेमाल ———— के लिए होता था।

(ङ) इनामगाँव के लोग ———— खाते थे।

आओ चर्चा करें

3. आज हम जो किताबें पढते है वे ऋग्वेद से कैसे भिन्न है?

4. पुरातत्वविद् कब्रो मे दफ़नाए गए लोगों के बीच सामाजिक अंतर का पता कैसे लगाते हैं?

5. एक राजा का जीवन दास या दासी के जीवन से कैसे भिन्न होता था?

आओ करके देखें

6. पता करो कि तुम्हारे विद्यालय के पुस्तकालय मे धर्म के विषय पर किताबे है या नही। उस संग्रह से किन्ही पॉच पुस्तको के नाम बताओ।

7. एक याद की हुई कविता या गीत लिखो। तुमने उस कविता या गीत को सुनकर याद किया था या पढ़कर?

8. ऋग्वेद मे लोगों का वर्गीकरण उनके कार्य या उनकी भाषा के आधार पर किया जाता है। नीचे की तालिका में तुम छः परिचित लोगो के नाम भरो। इनमे तीन पुरुष और तीन महिला होने चाहिए। प्रत्येक का पेशा और भाषा लिखो। क्या तुम उस विवरण मे कुछ और जोड़ना चाहोगी?

नाम	कार्य	भाषा	अन्य

अध्याय 6

चुनाव का दिन

जब शंकरन उठा तो उसने देखा कि उसके नाना-नानी वोट डालने जा रहे थे। दरअसल वे चुनाव केंद्र पर सबसे पहले पहुँचना चाहते थे। शंकरन जानना चाहता था कि आखिर वे इतने उत्साहित क्यो थे। उसके नानाजी ने उसे जल्दी मे समझाने की कोशिश की और कहा, "आज हम अपने शासको का चुनाव करने जा रहे है।"

कुछ लोग शासक कैसे बने?

लगभग पचास वर्षो से हम अपने शासकों का चुनाव मतदान के जरिए करते आ रहे हैं। लेकिन बहुत पहले लोग शासक कैसे बनते थे? हमने अध्याय 5 मे यह पढ़ा है कि कुछ *राजा* संभवत: *जन* यानी लोगो द्वारा चुने जाते थे। परन्तु करीब 3000 साल पहले राजा बनने की इस प्रक्रिया मे कुछ परिवर्तन दिखाई दिए। कुछ लोग बड़े-बड़े यज्ञो को आयोजित कर *राजा* के रूप मे प्रतिष्ठित हो गए।

अश्वमेध यज्ञ एक ऐसा ही आयोजन था। इसमे एक घोड़े को राजा के लोगों की देखरेख में स्वतत्र विचरण के लिए छोड़ दिया जाता था। इस घोड़े को किसी दूसरे राजा ने रोका तो उसे वहाँ अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा से लड़ाई करनी पड़ती थी। अगर उन्होंने घोड़े को जाने दिया तो इसका मतलब यह होता था कि अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा उनसे ज्यादा शक्तिशाली था। इसके बाद उन राजाओं को यज्ञ मे आमंत्रित किया जाता था। यह यज्ञ विशिष्ट पुरोहितों द्वारा सम्पन्न किया जाता था। इसके लिए उन्हें उपहारो से सम्मानित किया जाता था। अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा बहुत शक्तिशाली माना जाता था। यज्ञ में आमंत्रित सभी राजा उसके लिए उपहार लाते थे।

इन सभी आयोजनों में,राजा का मुख्य स्थान होता था। उसे राजसिंहासन या बाघ की खाल के एक विशेष आसन पर बिठाया जाता था। युद्ध क्षेत्र में राजा का सारथी ही उसका सहचर होता था। यज्ञ के अवसर पर वह राजा

की विजयो तथा अन्य गुणों का गान करता था। राजा के सगे-सबधी खासकर उसकी रानियो तथा पुत्रो को भी कई छोटे-छोटे अनुष्ठान करने होते थे। अन्य सारे आमत्रित राजाओ का काम सिर्फ़ बैठकर यज्ञ की पूरी प्रक्रिया को देखना भर था। राजा के ऊपर पुरोहित पवित्र जल के छिड़काव के साथ-साथ अन्य कई अनुष्ठान करता था। विश् अथवा वैश्य जैसे सामान्य लोग उपहार लाते थे। जिन्हे पुरोहित शूद्र मानते थे उन्हें कई अनुष्ठानो मे शामिल नहीं किया जाता था।

इस यज्ञ में उपस्थित होने वालों की एक सूची बनाओ। पेशे के आधार पर यहाँ कौन-कौन से वर्ग शामिल थे?

वर्ण

इस समय उत्तर भारत मे, ख़ासकर गगा-यमुना क्षेत्र मे, कई ग्रथ रचे गए। ऋग्वेद के बाद रचे होने के कारण ये उत्तर-वैदिक ग्रथ कहे जाते है। इनके अतर्गत सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा अन्य ग्रथ शामिल है। पुरोहितों द्वारा रचित इन ग्रथो मे विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान और उनके सपादन की विधियाँ बताई गई है। इनमें सामाजिक नियमो के बारे में भी बताया गया है।

उस समय समाज मे कई समूह थे जिनमे पुरोहित, योद्धा, कृषक, पशुपालक, व्यापारी, शिल्पकार, श्रमिक, मछली पकड़ने वाले तथा जगल मे रहने वाले लोग शामिल थे। जहाँ कुछ पुरोहित तथा योद्धा वैभवशाली थे, वही कुछ कृषक और व्यापारी भी धनवान थे। दूसरी ओर पशुपालक, शिल्पकार, श्रमिक, मछली पकड़ने वाले, शिकारी तथा भोजन-संग्राहक निर्धन थे।

पुरोहितो ने लोगो को चार वर्गो में विभाजित किया, जिन्हे *वर्ण* कहते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक वर्ण के अलग-अलग कार्य निर्धारित थे। पहला वर्ण *ब्राह्मणों* का था। उनका काम वेदों का अध्ययन-अध्यापन और यज्ञ करना था जिनके लिए उन्हें उपहार मिलता था। दूसरा स्थान *शासकों* का था, जिन्हें *क्षत्रिय* कहा जाता था। उनका काम युद्ध करना और लोगो की रक्षा करना था। तीसरे स्थान पर *विश्* या *वैश्य* थे। इनमें कृषक, पशुपालक और व्यापारी आते थे। क्षत्रिय और वैश्य दोनो को ही यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। वर्णों में अतिम स्थान *शूद्रों* का था। इनका काम अन्य तीनो वर्णों की सेवा करना था। इन्हें कोई अनुष्ठान करने का अधिकार नही था। प्राय: औरतों को भी शूद्रों के समान माना गया। महिलाओं तथा शूद्रों को वेदो के अध्ययन का अधिकार नही था।

पुरोहितों के अनुसार सभी वर्णो का निर्धारण जन्म के आधार पर होता था। उदाहरण के तौर पर, ब्राह्मण माता-पिता की संतान ब्राह्मण ही होती थी। बाद मे कुछ लोगों को अछूत माना गया। अछूत वर्गों मे कुछ शिल्पकार, शिकारी तथा भोजन-संग्राहक शामिल थे। साथ ही इनमें वे लोग भी आते थे, जो शवो को दफ़नाने या जलाने का काम करते थे। इन लोगों से संपर्क अपवित्र माना जाता था।

कई लोगो ने इस वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया। कुछ राजा स्वयं को पुरोहितो से श्रेष्ठ मानते थे। कुछ लोग जन्म के आधार पर वर्ण-निर्धारण सही नहीं मानते थे। इसके अतिरिक्त कुछ लोग व्यवसाय के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव उचित नही समझते थे। जबकि कुछ लोग चाहते थे कि अनुष्ठान सम्पन्न करने का अधिकार सबका हो। कई लोगो ने छूआछूत की आलोचना की। इस उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर क्षेत्र जैसे कई इलाकों मे सामाजिक-आर्थिक असमानता बहुत कम थी। यहाँ पुरोहितो का प्रभाव भी बहुत सीमित था।

लोगों ने वर्ण व्यवस्था का विरोध क्यों किया?

जनपद

महायज्ञों को करने वाले राजा अब जन के राजा न होकर *जनपदों* के राजा माने जाने लगे। जनपद का शाब्दिक अर्थ जन के बसने की जगह होता है। कुछ महत्वपूर्ण जनपद मानचित्र 4 (पृष्ठ 57) में दिखाए गए हैं।

पुरातत्वविदों ने इन जनपदों की कई बस्तियो की खुदाई की है। दिल्ली मे पुराना किला, उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास हस्तिनापुर और एटा के पास अतरंजीखेड़ा इनमे प्रमुख हैं। खुदाई से पता चला है कि लोग झोपड़ियों में रहते थे और मवेशियो तथा अन्य जानवरों को पालते थे। वे चावल, गेहूँ, धान, जौ, दाले, गन्ना, तिल तथा सरसों जैसी फ़सलें उगाते थे।

क्या इस सूची में तुम्हें किसी ऐसी फ़सल का नाम मिला जिसका उल्लेख अध्याय 4 में नहीं है?

लोग मिट्टी के बर्तन भी बनाते थे। इनमें कुछ धूसर और कुछ लाल रंग के होते थे। इन पुरास्थलो मे कुछ विशेष प्रकार के बर्तन मिले है, जिन्हे 'चित्रित-धूसर पात्र' के रूप में जाना जाता है। जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन बर्तनों पर चित्रकारी की गई है। ये आमतौर पर सरल रेखाओं तथा ज्यामितीय आकृतियों के रूप में हैं।

चित्रित धूसर पात्र। इस तरह के पात्रो मे ज्यादातर थालियाँ और कटोरियाँ ही मिली हैं। ये पात्र बहुत ही पतली सतह के सुदर और चिकने है। शायद इसका प्रयोग खास मौको पर, महत्वपूर्ण लोगो को भोजन परोसने के लिए किया जाता था।

महाजनपद

करीब 2500 साल पहले, कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गए। इन्हें महाजनपद कहा जाने लगा। मानचित्र 4 मे कुछ महाजनपदो को दिखाया गया है। अधिकतर महाजनपदों की एक राजधानी होती थी। कई राजधानियो मे किलेबदी की गई थी अर्थात् इनके चारों ओर लकड़ी, ईंट या पत्थर की ऊँची दीवारें बनाई गई थीं।

ऐसा लगता है कि लोगों ने अन्य राजाओं के आक्रमण से डरकर अपनी सुरक्षा के लिए इन किलों का निर्माण किया। कुछ राजा अपनी राजधानी के चारों ओर विशाल, ऊँची और प्रभावशाली दीवार खड़ी कर अपनी समृद्धि

मानचित्र : 4
महत्वपूर्ण जनपद, महाजनपद और नगर
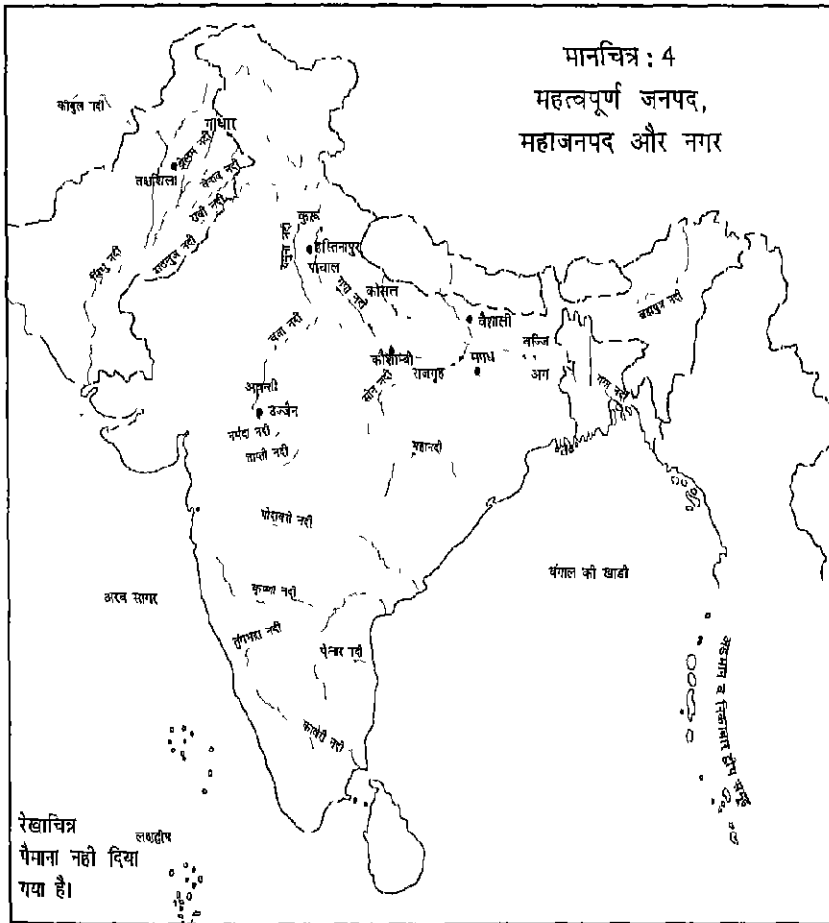
और शक्ति का प्रदर्शन भी करते थे। इस तरह से किले के अदर रहने वाले लोगों और उस क्षेत्र पर नियत्रण रखना भी सरल हो जाता होगा। इस तरह की विशाल दीवार बनाने के लिए व्यापक योजना की आवश्यकता थी और लाखों की संख्या मे ईटों तथा पत्थरो का इतज़ाम करना पड़ता था। हजारों स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों ने इसके लिए अथक परिश्रम किया होगा। इनके लिए ससाधनों की आवश्यकता पड़ती होगी।

अब राजा सेना रखने लगे थे। सिपाहियों को नियमित वेतन देकर पूरे साल रखा जाता था। कुछ भुगतान संभवत: आहत सिक्कों (पृष्ठ 92 पर चित्र देखो) के रूप में होता था। इन सिक्को के बारे में तुम अध्याय 9 में पढ़ोगे।

महाजनपदो के राजा ऋग्वेद मे उल्लेखित राजाओं से किस प्रकार भिन्न थे? दो उत्तर बताओ।

कौशाम्बी किले की दीवार। यह चित्र आधुनिक उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के पास मिली ईट की दीवार का अवशेष है। इसके एक भाग का निर्माण सभवत: 2500 साल पहले हुआ था।

कर

महाजनपदों के राजा विशाल किले बनवाते थे और बड़ी सेना रखते थे, इसलिए उन्हे प्रचुर संसाधनो की आवश्यकता होती थी। इसके लिए उन्हे कर्मचारियों की भी आवश्यकता होती थी। अतः महाजनपदों के राजा लोगो द्वारा समय-समय पर लाए गए उपहारों पर निर्भर न रहकर अब नियमित रूप से कर वसूलने लगे।

- फ़सलो पर लगाए गए कर सबसे महत्वपूर्ण थे क्योकि अधिकाश लोग कृषक ही थे। प्रायः उपज का 1/6वां हिस्सा कर के रूप में निर्धारित किया जाता था जिसे *भाग* कहा जाता था।
- कारीगरों के ऊपर भी कर लगाए गए जो प्रायः श्रम के रूप मे चुकाए जाते थे। जैसे कि एक बुनकर, लोहार या सुनार को राजा के लिए महीने में एक दिन काम करना पड़ता था।
- पशुपालको को जानवरो या उनके उत्पाद के रूप में कर देना पड़ता था।
- व्यापारियों को सामान खरीदने-बेचने पर भी कर देना पड़ता था।
- शिकारियों तथा संग्राहकों को जगल से प्राप्त वस्तुएँ देनी होती थी।

शिकारी तथा खाद्य-सग्राहक राजाओ को क्या देते होंगे?

कृषि में परिवर्तन

इस युग मे कृषि के क्षेत्र में दो बढ़े परिवर्तन आए। हल के फाल अब लोहे के बनने लगे। अब कठोर ज़मीन को लकड़ी के फाल की तुलना में लोहे के फाल से आसानी से जोता जा सकता था। इससे फ़सलो की उपज बढ़ गई। दूसरे, लोगों ने धान के पौधों का रोपण शुरू किया अर्थात् खेतो में बीज छिड़ककर धान उपजाने के बजाए धान की पौध तैयार कर उनका रोपण शुरू किया गया। अब पहले की तुलना में बहुत ज़्यादा पौधे जीवित रह जाते थे, इसलिए पैदावार भी ज़्यादा होने लगी। इसमें कमरतोड़ परिश्रम लगता था। ये काम ज़्यादातर दास, दासी तथा भूमिहीन खेतिहर मज़दूर (कम्मकार) करते थे।

क्या तुम बता सकते हो कि राजा इन परिवर्तनो को प्रोत्साहन क्यो देते होगे?

सूक्ष्म-निरीक्षण

(क) मगध

मानचित्र 4 (पृष्ठ 57) मे मगध ढूँढ़ो। लगभग दो सौ सालों के भीतर मगध सबसे महत्वपूर्ण जनपद बन गया। गगा और सोन जैसी नदियाँ मगध से होकर बहती थी। ये - (क) यातायात, (ख) जल-वितरण और (ग) जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। मगध का एक हिस्सा जंगलों से भरा था। इन जंगलों में रहने वाले हाथियों को पकड़ कर और उन्हे प्रशिक्षित कर सेना के काम में लगाया जाता था। यही नहीं, जगलों से घर, गाड़ियाँ, तथा रथ बनाने के लिए लकड़ी मिलती थी। इसके अलावा इस क्षेत्र में लौह अयस्क की खदाने हैं। मज़बूत औज़ार और हथियार बनाने के लिए ये बहुत उपयोगी थे।

मगध में दो बहुत ही शक्तिशाली शासक बिम्बिसार तथा अजातसत्तु (अजातशत्रु) हुए। अन्य जनपदों को जीतने के लिए ये हर संभव साधन अपनाते थे। महापद्मनद एक और महत्वपूर्ण शासक थे। उन्होंने अपने नियंत्रण का क्षेत्र इस उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग तक फैला लिया था। बिहार में राजगृह (आधुनिक राजगीर) कई सालो तक मगध की राजधानी बनी रही। बाद में पाटलिपुत्र (आज का पटना) को राजधानी बनाया गया।

2300 साल से भी पहले की बात है, मेसिडोनिया का राजा सिकन्दर विश्व-विजय करना चाहता था। पूरी तरह सफल न होने पर भी वह मिस्र और पश्चिमी एशिया के कुछ राज्यों को जीतता हुआ भारतीय उपमहाद्वीप में व्यास नदी के किनारे तक पहुँच गया। जब उसने मगध की ओर कूच करना चाहा, तो उसके सिपाहियों ने इंकार कर दिया। वे इस बात से भयभीत थे, कि भारत के शासकों के पास पैदल, रथ और हाथियों की बहुत बड़ी सेना थी।

इन सेनाओ और ऋग्वेद मे उल्लेखित सेनाओं के बीच तुम्हे क्या अंतर दिखता है?

(ख) वज्जि

जैसा कि तुमने ऊपर पढ़ा, मगध एक शक्तिशाली राज्य बन गया था। उसके नज़दीक ही वज्जि राज्य था, जिसकी राजधानी वैशाली (बिहार) थी। यहाँ एक अलग किस्म की शासन-व्यवस्था थी जिसे *गण* या *संघ* कहते थे।

गण या सघ में कई शासक होते थे। कभी-कभी लोग एक साथ शासन करते थे, जिसमे से प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। ये सभी राजा विभिन्न अनुष्ठानों को एक साथ सम्पन्न करते थे। सभाओं में बैठकर ये बातचीत, बहस और वाद-विवाद के जरिए तय करते थे कि क्या करना है और किस तरह करना है। शत्रुओ के आक्रमण से निपटने के लिए वे मिलकर चर्चाएँ करते थे। स्त्रियाँ, दास तथा कम्मकार इन सभाओं में हिस्सा नहीं ले सकते थे।

बुद्ध तथा महावीर (जिनके बारे में तुम अध्याय 7 मे पढ़ोगे) दोनों ही गण या संघ से संबधित थे। बौद्ध साहित्य मे संघ के जीवन का बहुत ही सजीव वर्णन मिलता है।

गण

गण शब्द का प्रयोग कई सदस्यों वाले समूह के लिए किया जाता है।

संघ

सघ अर्थात् सगठन या सभा।

वज्जि संघ का यह वर्णन *दीघ निकाय* से लिया गया है। *दीघ निकाय* एक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ है, जिसमें बुद्ध के कई व्याख्यान दिए गए है। इन्हें करीब 2300 साल पहले लिखा गया था।

अजासत्तु (अजातशत्रु) और वज्जि-संघ

अजातसत्तु वज्जि-संघ पर आक्रमण करना चाहते थे। उन्होंने अपने मत्री वस्सकार को बुद्ध के पास सलाह के लिए भेजा।

बुद्ध ने उनसे पूछा कि क्या वज्जि सभाएँ नियमित रूप से होती है तथा उनमे सभी सदस्य उपस्थित होते है? जब उन्हे पता चला कि ऐसा होता है, उन्होंने कहा कि वज्जिवासी तब तक उन्नति करते रहेगे, जब तक:

- वे पूर्ण और नियमित सभाएँ करते रहेंगे।
- आपस में मिलजुल कर काम करते रहेंगे।
- पारंपरिक नियमों का पालन करते रहेंगे।
- बड़ों का सम्मान, समर्थन और उनकी बातों पर ध्यान देते रहेंगे।

- वज्जि महिलाओं के साथ जोर-जबरदस्ती नही करेंगे और उन्हे बंधक नही बनाएगे।
- शहरों तथा गावो में चैत्यों का रखरखाव करेंगे।
- विभिन्न मतावलंबी सतो का सम्मान करेगे और उनके आने या जाने पर कोई रोक नही लगाएगे।

वज्जि सघ अन्य महाजनपदो से कैसे भिन्न था? कम से कम तीन अतर बताओ।

कई शक्तिशाली राजा इन संघो को जीतना चाहते थे। इसके बावजूद उनका राज्य अब से लगभग 1500 साल पहले तक चलता रहा। उसके बाद गुप्त शासकों ने गण और संघ पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपने राज्य में शामिल कर लिया। इनके बारे मे तुम अध्याय 11 में पढ़ोगे।

अन्यत्र

अपने एटलस मे यूनान और एथेन्स को ढूँढ़ो।

लगभग 2500 साल पहले एथेन्स के लोगो ने एक शासन-व्यवस्था की स्थापना की, जिसे *प्रजातंत्र* या *गणतत्र* कहते है।

यह व्यवस्था लगभग 200 सालों तक चली। इसमें 30 साल से ऊपर के उन सभी पुरुषो को पूर्ण नागरिकता प्राप्त थी, जो दास नही थे। वहाँ एक सभा थी जो महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने के लिए साल भर मे कम से कम 40 बार बुलाई जाती थी।

इस सभा में सभी नागरिक भाग ले सकते थे।

शासन के कई पदो पर नियुक्तियाँ लॉटरियो द्वारा की जाती थी। सभी नागरिकों को सेना और नौसेना में अपनी सेवाएँ देनी होती थी।

औरतो को नागरिक का दर्जा नहीं मिलता था।

व्यापारियों तथा शिल्पकारों के रूप मे एथेन्स में रहने और काम करने वाले बहुत से विदेशियो को भी नागरिक अधिकार नही मिले थे। एथेन्स मे खदानों, खेतो, घरो और कार्यशालाओ में काम कर रहे दासों को भी नागरिक अधिकार नहीं मिले थे।

क्या एथेन्स मे वास्तव मे जनतत्र था?

कल्पना करो

[illegible]

उपयोगी शब्द

राजा
अश्वमेध
वर्ण
जनपद
महाजनपद
क़िलेबंदी
सेना
कर
पौध-रोपण
गण अथवा संघ
प्रजातंत्र

आओ याद करें

1. सही या गलत बताओ

   (क) अश्वमेध के घोड़े को अपने राज्य से गुज़रने की छूट देने वाले राजाओं को यज्ञ में आमंत्रित किया जाता था।

   (ख) राजा के ऊपर सारथी पवित्र जल का छिड़काव करता था।

   (ग) पुरातत्त्वविदों को जनपदों की बस्तियों में महल मिले हैं।

   (घ) चित्रित-धूसर पात्रों में अनाज रखा जाता था।

   (ङ.) महाजनपदों में बहुत से नगर क़िलाबंद थे।

2. नीचे दिए गए खानों में निम्नलिखित शब्द भरो
   शिकारी-संग्राहक, कृषक, व्यापारी, शिल्पकार, पशुपालक।

महाजनपद
का राजा

3. समाज के वे कौन-से समूह थे, जो गणों की सभाओं में हिस्सा नहीं ले सकते थे?

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- नए शासक (लगभग 3000 साल पहले)
- महाजनपद (लगभग 3000 साल पहले)
- सिकन्दर का आक्रमण, *दीघ निकाय* का लेखन (लगभग 2300 साल पहले)
- गण या सघ राज्यों का अत (लगभग 1500 साल पहले)

आओ चर्चा करें

1. महाजनपद के राजाओं ने क़िले क्यो बनवाए?

2. आज के शासको के चुनाव की प्रक्रिया जनपदो के चुनाव से किस तरह भिन्न थी?

आओ करके देखें

3. तुम्हारी पुस्तक के अंत मे दिए गए राजनीतिक मानचित्र मे अपना राज्य ढूँढ़ो। क्या वहाँ प्राचीन जनपद थे? अगर हाँ, तो उनके नाम लिखो। अगर नही, तो अपने राज्य के सबसे नज़दीक पड़ने वाले जनपदो के नाम बताओ।

4. प्रश्न 2 के उत्तर मे बताए गए समूहों मे से कौन-से समूह आज भी कर देते है।

5. प्रश्न 3 के उत्तर में बताए गए समूहों मे किन-किन को आज मतदान का अधिकार प्राप्त है?

अध्याय 7

अनघा निकली सैर पर

अनघा आज पहली बार अपने विद्यालय की ओर से सैर पर जा रही थी। इसके लिए उसने देर रात पुणे (महाराष्ट्र) से वाराणसी (उत्तर प्रदेश) की ट्रेन पकड़ी। स्टेशन पर अनघा को छोड़ने आईं उसकी माँ ने अध्यापिका से कहा, "बच्चों को बुद्ध के बारे मे बताने के साथ-साथ उन्हें सारनाथ दिखाने भी ले जाइएगा।"

बुद्ध की कहानी

बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ थे जिन्हें गौतम के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ था। यह वह समय था जब लोगो के जीवन में तेज़ी से परिवर्तन हो रहे थे। जैसा कि तुमने अध्याय 6 में पढ़ा, महाजनपदों के कुछ राजा इस समय बहुत शक्तिशाली हो गए थे। हज़ारो सालों के बाद फिर से नगर उभर रहे थे। गाँवों के जीवन में भी बदलाव आ रहा था (अध्याय 10 देखो)। बहुत-से विचारक इन परिवर्तनो को समझने का प्रयास कर रहे थे। वे जीवन के सच्चे अर्थ को भी जानना चाह रहे थे।

बुद्ध क्षत्रिय थे तथा 'शाक्य' नामक एक छोटे से गण से संबंधित थे। युवावस्था में ही ज्ञान की खोज में उन्होंने घर के सुखों को छोड़ दिया। अनेक वर्षों तक वे भ्रमण करते रहे तथा अन्य विचारकों से मिलकर चर्चा करते रहे। अततः ज्ञान प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वयं ही रास्ता ढूँढ़ने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने बोध गया (बिहार) में एक पीपल के नीचे कई दिनों तक तपस्या की। अंततः उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद से वे बुद्ध के रूप में जाने गए। यहाँ से वे वाराणसी के निकट स्थित सारनाथ गए, जहाँ उन्होंने पहली बार उपदेश दिया। कुशीनारा में मृत्यु से पहले का शेष जीवन उन्होंने पैदल ही एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने और लोगों को शिक्षा देने में व्यतीत किया।

बुद्ध ने शिक्षा दी कि यह जीवन कष्टों और दुखों से भरा हुआ है और ऐसा हमारी इच्छा और लालसाओ (जो हमेशा पूरी नहीं हो सकतीं) के कारण होता है। कभी-कभी हम जो चाहते हैं वह प्राप्त कर लेने के बाद भी सतुष्ट नहीं होते हैं एवं और अधिक (अथवा अन्य) वस्तुओ को पाने की इच्छा करने लगते हैं। बुद्ध ने इस लिप्सा को *तन्हा* (तृष्णा) कहा है। बुद्ध ने शिक्षा दी कि *आत्मसंयम* अपनाकर हम ऐसी लालसा से मुक्ति पा सकते है।

सारनाथ स्तूप
इस इमारत को स्तूप के नाम से जाना जाता है। यही पर बुद्ध ने अपना सर्वप्रथम उपदेश दिया था। इसी घटना की स्मृति में यहाँ स्तूप का निर्माण किया गया। अध्याय 12 मे तुम इन स्तूपो के बारे मे और अधिक पढ़ोगे।

उन्होने लोगों को दयालु होने तथा मनुष्यो के साथ-साथ जानवरो के जीवन का भी आदर करने की शिक्षा दी। वे मानते थे कि हमारे कर्मो के परिणाम, चाहे वे अच्छे हो या बुरे, हमारे वर्तमान जीवन के साथ-साथ बाद के जीवन को भी प्रभावित करते हैं। बुद्ध ने अपनी शिक्षा सामान्य लोगो की *प्राकृत* भाषा में दी। इससे सामान्य लोग भी उनके सदेश को समझ सके।

वेदो की रचना के लिए किस भाषा का प्रयोग हुआ था?

बुद्ध ने कहा कि लोग किसी शिक्षा को केवल इसलिए नहीं स्वीकार करे कि यह उनका उपदेश है, बल्कि वे उसे अपने विवेक से मापें। आओ देखो, उन्होंने ऐसा किस प्रकार किया।

किसागोतमी की कहानी

यह बुद्ध के विषय में एक प्रसिद्ध कहानी है। एक समय की बात है किसागोतमी नामक एक स्त्री का पुत्र मर गया। इस बात से वह इतनी दु:खी हुई कि वह अपने बच्चे को गोद मे लिए नगर की सड़को पर घूम-घूम कर लोगो से प्रार्थना करने लगी कि कोई उसके पुत्र को जीवित कर दे। एक भला व्यक्ति उसे बुद्ध के पास ले गया।

बुद्ध ने कहा, "मुझे एक मुट्ठी सरसो के बीज लाकर दो, मै तुम्हारे पुत्र को जीवित कर दूँगा"। किसागोतमी बहुत प्रसन्न हुई। पर जैसे ही वह बीज लाने के लिए जाने लगी तभी बुद्ध ने उसे रोका और कहा, "ये बीज एक ऐसे घर से माँग कर लाओ जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो।"

किसागोतमी एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े गई लेकिन वह जहाँ भी गई उसने पाया कि हर घर मे किसी न किसी के पिता, माता, बहन, भाई, पति, पत्नी, बच्चे, चाचा, चाची, दादा या दादी की मृत्यु हुई थी।

बुद्ध दु:खी माँ को क्या शिक्षा देने का प्रयास कर रहे थे?

उपनिषद्

जिस समय बुद्ध उपदेश दे रहे थे उसी समय या उससे भी थोड़ा पहले दूसरे अन्य चिंतक भी कठिन प्रश्नो का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे थे। उनमें से कुछ मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में जानना चाहते थे जबकि अन्य यज्ञों की उपयोगिता के बारे मे जानने को उत्सुक थे। इनमें से अधिकाश चितकों का यह मानना था कि इस विश्व में कुछ तो ऐसा है जो कि स्थायी है और जो मृत्यु के बाद भी बचा रहता है। उन्होंने इसका वर्णन *आत्मा* तथा *ब्रह्म* अथवा सार्वभौम आत्मा के रूप मे किया है। वे मानते थे कि अतत: आत्मा तथा ब्रह्म एक ही है।

ऐसे कई विचारों का संकलन *उपनिषदों* में हुआ है। उपनिषद् उत्तर वैदिक ग्रंथो का हिस्सा थे। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है 'गुरू के समीप बैठना'। इन ग्रंथों में अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच बातचीत का संकलन किया गया है। प्राय: ये विचार सामान्य वार्तालाप के रूप मे प्रस्तुत किए गए हैं।

बुद्धिमान भिखारी

यह वार्तालाप *छांदोग्य उपनिषद्* नामक प्रसिद्ध उपनिषद् की एक कहानी पर आधारित है।

शौनक व अभिप्रतारिण नामक दो ऋषि सार्वभौम आत्मा की उपासना करते थे। एक बार ज्योही वे भोजन करने के लिए बैठे, एक भिखारी आया और भोजन माँगने लगा।

शौनक ने कहा, "हम तुम्हें कुछ नही दे सकते।"

भिखारी ने पूछा, "विद्वज्जन, आप किसकी उपासना करते है?"

अभिप्रतारिण ने उत्तर दिया, "सार्वभौम आत्मा की।"

"ओह! इसका मतलब आप यह जानते हैं कि यह सार्वभौम आत्मा सम्पूर्ण विश्व मे विद्यमान है।"

ऋषियो ने कहा, "हाँ, हाँ, हम यह जानते हैं।"

भिखारी ने फिर पूछा, "अगर यह सार्वभौम आत्मा सम्पूर्ण विश्व मे विद्यमान है तो यह मेरे अदर भी विद्यमान है। मैं कौन हूँ? मैं इस विश्व का एक भाग ही तो हूँ।"

"तुम सत्य बोलते हो, युवा ब्राह्मण।"

"इसलिए हे ऋषियों, मुझे भोजन न देकर आप उस सार्वभौम आत्मा को भोजन देने से मना कर रहे है।" भिखारी की बात की सच्चाई जानकर ऋषियों ने उसे भोजन दे दिया।

भिखारी ने भोजन पाने के लिए ऋषियो को किस तरह मनाया?

इन चर्चाओ में भाग लेने वाले अधिकाशत: पुरुष ब्राह्मण तथा राजा होते थे। कभी-कभी गार्गी जैसी स्त्री-विचारको का भी उल्लेख मिलता है। विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध गार्गी राजदरबारों में होने वाले वाद-विवाद मे भाग लिया करती थीं। निर्धन व्यक्ति इस तरह के वाद-विवाद में बहुत कम ही हिस्सा लेते थे। इस तरह का एक प्रसिद्ध अपवाद सत्यकाम जाबाल का है। सत्यकाम जाबाल का नाम उसकी दासी माँ के नाम पर पड़ा। सत्यकाम के मन मे सत्य जानने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई। गौतम नामक एक ब्राह्मण ने उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में स्वीकार किया तथा वह अपने समय के सर्वाधिक प्रसिद्ध विचारकों मे से एक बन गए। उपनिषदों के कई विचारों का विकास बाद मे प्रसिद्ध विचारक शंकराचार्य के द्वारा किया गया जिनके बारे में तुम कक्षा 7 में पढ़ोगी।

व्याकरणविद् पाणिनि

इस युग में कुछ अन्य विद्वान भी खोज कर रहे थे। उन्ही प्रसिद्ध विद्वानो मे एक पाणिनि ने सस्कृत भाषा के व्याकरण की रचना की। उन्होने स्वरो तथा व्यजनो को एक विशेष क्रम मे रखकर उनके आधार पर सूत्रो की रचना की। ये सूत्र बीजगणित के सूत्रो से काफी मिलते-जुलते है। इसका प्रयोग कर उन्होने संस्कृत भाषा के प्रयोगो के नियम लघु सूत्रो (लगभग 3000) के रूप मे लिखे।

जैन धर्म

इसी युग में अर्थात् लगभग 2500 वर्ष पूर्व जैन धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारक वर्धमान महावीर ने भी अपने विचारों का प्रसार किया। वह वज्जि संघ के लिच्छवि कुल के एक क्षत्रिय राजकुमार थे। इस संघ के विषय मे तुमने अध्याय 6 में पढ़ा है। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे । बारह वर्ष तक उन्होने कठिन व एकाकी जीवन व्यतीत किया। इसके बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

उनकी शिक्षा सरल थी। सत्य जानने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक स्त्री व पुरुष को अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें *अहिसा* के नियमो का कड़ाई से पालन करना चाहिए अर्थात् किसी भी जीव को न तो कष्ट देना चाहिए और न ही उसकी हत्या करनी चाहिए। महावीर का कहना था, ''सभी जीव जीना चाहते है। सभी के लिए जीवन प्रिय है।'' महावीर ने अपनी शिक्षा प्राकृत में दी। यही कारण है कि साधारण जन भी उनके तथा उनके अनुयायियों की शिक्षाओं को समझ सके । देश के अलग-अलग हिस्सो में प्राकृत के अलग-अलग रूप प्रचलित थे। प्रचलन क्षेत्र के आधार पर ही उनके अलग-अलग नाम थे जैसे मगध में बोली जाने वाली प्राकृत, मागधी कहलाती थी।

जैन नाम से जाने गए महावीर के अनुयायियों को भोजन के लिए भिक्षा माँगकर सादा जीवन बिताना होता था। उन्हें पूरी तरह से ईमानदार होना पड़ता था तथा चोरी न करने की उन्हें सख्त हिदायत थी। उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था। पुरुषों को वस्त्रो सहित सब कुछ त्याग देना पड़ता था।

जैन

जैन शब्द 'जिन' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'विजेता'।

महावीर के लिए 'जिन' शब्द का प्रयोग क्यों हुआ?

अधिकांश व्यक्तियो के लिए ऐसे कड़े नियमों का पालन करना बहुत कठिन था। फिर भी हज़ारों व्यक्तियों ने इस नई जीवन शैली को जानने और सीखने के लिए अपने घरो को छोड़ दिया। कई अपने घरो पर ही रहे और *भिक्खु-भिक्खुणी* बने लोगो को भोजन प्रदान कर उनकी सहायता करते रहे।

मुख्यत: व्यापारियों ने जैन धर्म का समर्थन किया । किसानो के लिए इन नियमो का पालन अत्यंत कठिन था क्योकि फ़सल की रक्षा के लिए उन्हे कीड़े-मकौड़ों को मारना पड़ता था। बाद की सदियो में जैन धर्म, उत्तर भारत के कई हिस्सो के साथ-साथ गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक मे भी फैल गया। महावीर तथा उनके अनुयायियों की शिक्षाएँ कई शताब्दियो तक मौखिक रूप मे ही रही । वर्तमान रूप मे उपलब्ध जैन धर्म की शिक्षाएँ लगभग 1500 वर्ष पूर्व गुजरात में वल्लभी नामक स्थान पर लिखी गई थी (मानचित्र 7, पृष्ठ 113 देखें)।

संघ

महावीर तथा बुद्ध दोनो का ही मानना था कि घर का त्याग करने पर ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। ऐसे लोगो के लिए उन्होंने *संघ* नामक सगठन बनाया जहाँ घर का त्याग करने वाले लोग एक साथ रह सकें।

संघ मे रहने वाले बौद्ध भिक्षुओ के लिए बनाए गए नियम *विनयपिटक* नामक ग्रथ में मिलते है। *विनयपिटक* से हमे पता चलता है कि संघ मे पुरुषों और स्त्रियों के रहने की अलग-अलग व्यवस्था थी। सभी व्यक्ति संघ मे प्रवेश ले सकते थे। हालाँकि संघ मे प्रवेश के लिए बच्चो को अपने माता-पिता से, दासों को अपने स्वामी से, राजा के यहाँ काम करने वाले लोगों को राजा से, तथा कर्जदारों को अपने देनदारों से अनुमति लेनी होती थी। एक स्त्री को इसके लिए अपने पति से अनुमति लेनी होती थी।

सघ में प्रवेश लेने वाले स्त्री-पुरुष बहुत सादा जीवन जीते थे। वे अपना अधिकाश समय ध्यान करने में बिताते थे और दिन के एक निश्चित समय मे वे शहरो तथा गाँवों मे जाकर भिक्षा माँगते थे। यही कारण है कि उन्हें भिक्खु तथा भिक्खुणी (भिखारी के लिए प्राकृत शब्द) कहा गया। वे आम लोगो को शिक्षा देते थे और साथ ही एक-दूसरे की सहायता भी करते थे।

किसी तरह की आपसी लड़ाई का निपटारा करने के लिए वे प्राय: बैठके भी किया करते थे।

संघ में प्रवेश लेने वालों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, व्यापारी, मज़दूर, नाई, गणिकाएँ तथा दास शामिल थे। इनमे से कई लोगों ने बुद्ध की शिक्षाओं के विषय मे लिखा तथा कुछ लोगो ने संघ मे अपने जीवन के विषय मे सुंदर कविताओ की रचना की।

पिछले अध्याय मे वर्णित संघ और इस अध्याय मे वर्णित संघ के बीच दो भिन्नताएँ बताओ। क्या इनमे कोई समानताएँ दिखती है?

विहार

जैन तथा बौद्ध भिक्खु पूरे साल एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते हुए उपदेश दिया करते थे। केवल वर्षा ऋतु मे जब यात्रा करना कठिन हो जाता था तो वे एक स्थान पर ही निवास करते थे। ऐसे समय वे अपने अनुयायियों द्वारा उद्यानो मे बनवाए गए अस्थाई निवासों में अथवा पहाड़ी क्षेत्रों की प्राकृतिक गुफाओं में रहते थे।

जैसे-जैसे समय बीतता गया भिक्खु-भिक्खुणियो ने स्वयं तथा उनके समर्थको ने अधिक स्थायी शरणस्थलों की आवश्यकता का अनुभव किया। तब कई शरणस्थल बनाए गए जिन्हे *विहार* कहा गया। आरंभिक विहार लकड़ी के बनाए गए तथा बाद में इनके निर्माण में ईंटो का प्रयोग होने लगा। पश्चिमी भारत में विशेषकर कुछ विहार पहाड़ियों को खोद कर बनाए गए।

पहाडी को काटकर बनाई गई एक गुफा।
यह कार्ले (वर्तमान महाराष्ट्र मे) स्थित एक गुफा है। भिक्खु-भिक्खुणी इन शरण स्थलो में रहकर ध्यान किया करते थे।

एक बौद्ध ग्रंथ से ज्ञात होता है:

जिस तरह महासागरो मे मिलने पर नदियो की अलग-अलग पहचान समाप्त हो जाती है ठीक उसी तरह बुद्ध के अनुयायी जब भिक्षुओं की श्रेणी मे प्रवेश करते हैं तो वे अपना वर्ण, श्रेणी और परिवार सब त्याग देते हैं।

प्राय: किसी धनी व्यापारी, राजा अथवा भू-स्वामी द्वारा दान मे दी गई भूमि पर विहार का निर्माण होता था। स्थानीय व्यक्ति भिक्खु-भिक्खुणियों के लिए भोजन, वस्त्र तथा दवाईयाँ लेकर आते थे जिसके बदले ये भिक्खु और भिक्खुणी लोगों को शिक्षा देते थे। आगे आने वाली शताब्दियो में बौद्ध धर्म उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ बाहरी क्षेत्रों मे भी फैल गया। अध्याय 10 में तुम इनके बारे में और अधिक पढ़ोगे।

आश्रम-व्यवस्था

जैन तथा बौद्ध धर्म जिस समय लोकप्रिय हो रहे थे लगभग उसी समय ब्राह्मणों ने आश्रम-व्यवस्था का विकास किया।

यहाँ *आश्रम* शब्द का तात्पर्य लोगों द्वारा रहने तथा ध्यान करने के लिए प्रयोग मे आने वाले स्थान से नही है, बल्कि इसका तात्पर्य जीवन के एक चरण से है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास नामक चार आश्रमों की व्यवस्था की गई।

ब्रह्मचर्य के अंतर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य से यह अपेक्षा की जाती थी कि इस चरण के दौरान वे सादा जीवन बिताकर वेदों का अध्ययन करेंगे।

गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत उन्हें विवाह कर एक गृहस्थ के रूप में रहना होता था। वानप्रस्थ के अंतर्गत उन्हें जंगल मे रहकर साधना करनी थी। अंततः उन्हें सब कुछ त्यागकर संन्यासी बन जाना था।

आश्रम व्यवस्था ने लोगों को अपने जीवन का कुछ हिस्सा ध्यान मे लगाने पर बल दिया।

प्राय: स्त्रियो को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी और उन्हें अपने पतियों द्वारा पालन किए जाने वाले आश्रमों का ही अनुसरण करना होता था।

संघ के जीवन से आश्रमों की यह व्यवस्था किस तरह भिन्न थी? यहाँ किन वर्णों का उल्लेख हुआ है? क्या सभी चार वर्णों को आश्रम व्यवस्था अपनाने की अनुमति थी?

अन्यत्र

एटलस में ईरान ढूँढ़ो। जरथुस्त्र एक ईरानी पैगम्बर थे। उनकी शिक्षाओ का संकलन जेन्द-*अवेस्ता* नामक ग्रंथ मे मिलता है। जेन्द-*अवेस्ता* की भाषा तथा इसमे वर्णित रीति-रिवाज, वेदो की भाषा और रीति-रिवाजों से काफी मिलते-जुलते हैं। जरथुस्त्र की मूल शिक्षा का सूत्र है : 'सद्-विचार, सद्-वचन तथा सद्-कार्य।'

'हे ईश्वर! बल, सत्य-प्रधानता एव सद्विचार प्रदान कीजिए, जिनके जरिए हम शाँति बना सके।'

एक हजार से अधिक वर्षो तक जरथुस्त्रवाद ईरान का एक प्रमुख धर्म रहा। बाद में कुछ जरथुस्त्रवादी ईरान से आकर गुजरात और महाराष्ट्र के तटीय नगरो मे बस गए। वे लोग ही आज के पारसियो के पूर्वज है।

कल्पना करो

तुम लगभग 2500 वर्ष पूर्व के एक उपदेशक को सुनने जाना चाहती हो। वहाँ जाने की अनुमति लेने के लिए तुम अपने माता पिता को कैसे सहमत कराओगी, इसका वर्णन करो।

उपयोगी शब्द

तण्हा (तृष्णा)
प्राकृत
आत्मा
ब्रह्म
उपनिषद्
जैन
अहिंसा
भिक्खु
संघ
विहार
आश्रम

आओ याद करें

1 बुद्ध ने लोगो तक अपने विचारों का प्रसार करने के लिए किन-किन बातो पर जोर दिया?

2. 'सही' व 'गलत' वाक्य बताओ।

(क) बुद्ध ने पशुबलि को बढ़ावा दिया।

(ख) बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश सारनाथ में देने के कारण इस जगह का बहुत महत्त्व है।

कुछ महत्वपूर्ण

तिथियाँ

- उपनिषदों के विचारक, जैन महावीर तथा बुद्ध (लगभग 2500 वर्ष पूर्व)
- जैन ग्रंथों का लेखन (लगभग 1500 वर्ष पूर्व)

(ग) बुद्ध ने शिक्षा दी कि कर्म का हमारे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(घ) बुद्ध ने बोध गया मे ज्ञान प्राप्त किया।

(ङ) उपनिषदो के विचारको का मानना था कि आत्मा और ब्रह्म वास्तव में एक ही है।

3. उपनिषदो के विचारक किन प्रश्नो का उत्तर देना चाहते थे?

4 महावीर की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?

5. अनघा की माँ क्यों चाहती थी कि उनकी बेटी बुद्ध की कहानी से परिचित हो? तुम्हारा इसके बारे मे क्या कहना है?

6. क्या तुम सोचते हो कि दासो के लिए संघ मे प्रवेश करना आसान रहा होगा, तर्क सहित उत्तर दो।

7. इस अध्याय मे उल्लिखित कम से कम पॉच विचारो तथा प्रश्नो की सूची बनाओ। उनमें से किन्ही तीन का चुनाव कर चर्चा करो कि वे आज भी क्यो महत्वपूर्ण है?

8. आज दुनिया का त्याग करने वाले स्त्रियो और पुरुषों के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करो। ये लोग कहॉ रहते है, किस तरीके के कपड़े पहनते है तथा क्या खाते है? ये दुनिया का त्याग क्यो करते है?

अध्याय 8

[illegible]

रौशन के रुपए

जन्मदिन पर रौशन को दादा जी से कड़क नोट मिले। उसने उन्हें अपने हाथ मे दबा रखा था। उसे एक नया कैसेट खरीदने का बहुत मन था लेकिन साथ ही वह बिल्कुल नए कड़क नोटों को देखना और छू कर महसूस करना चाहती थी। तभी उसने पाया कि सभी नोटो मे दाहिनी तरफ़ गाँधीजी का मुस्कराता चेहरा बना हुआ था और बाई तरफ़ छोटे-छोटे शेर चित्रित थे। उसने सोचा 'आखिर यहाँ शेर क्यो बने हुए है'।

एक बहुत बड़ा राज्य – एक साम्राज्य

शेरो वाला स्तभ-शीर्ष

हम जिन शेरों के चित्र रुपयो-पैसों पर देखते है उनका एक लबा इतिहास है। उन्हे पत्थरो को काट कर बनाया गया और फिर उन्हें सारनाथ मे एक विशाल स्तभ पर स्थापित किया गया था। (इस विषय मे तुमने अध्याय 7 मे पढ़ा।)

इतिहास के महानतम राजाओ में से एक, अशोक के निर्देश पर इसके जैसे कई स्तभों और पत्थरो पर अभिलेख उत्कीर्ण किए गए। इसके पहले कि हम यह जानें कि इन अभिलेखों में क्या लिखा है, यह समझने की कोशिश करे कि उनके राज्य को साम्राज्य क्यो कहा जाता है।

अशोक जिस साम्राज्य पर शासन करते थे उसकी स्थापना उनके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य ने लगभग 2300 साल पहले की थी। चाणक्य या कौटिल्य नाम के एक बुद्धिमान व्यक्ति ने चन्द्रगुप्त की सहायता की थी। चाणक्य के कई विचार हमें *अर्थशास्त्र* नाम की किताब में मिलते है।

वंश

जब एक ही परिवार के कई सदस्य एक के बाद एक राजा बनते है तो उन्हें एक ही वश का कहा जाता है। मौर्य वश मे तीन महत्वपूर्ण राजा हुए – चन्द्रगुप्त, उसका बेटा बिन्दुसार और बिन्दुसार का पुत्र अशोक।

साम्राज्य में बहुत-से नगर थे। (मानचित्र मे उन्हें काले बिन्दुओ से दिखाया गया है।) इनमे साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र, उज्जैन और तक्षशिला जैसे नगर प्रमुख थे। तक्षशिला उत्तर-पश्चिम और मध्य एशिया के लिए आने-जाने का मार्ग था। दूसरी तरफ़ उज्जैन उत्तरी भारत से दक्षिणी भारत जाने वाले रास्ते मे पड़ता था। शायद नगरों मे व्यापारी, सरकारी अधिकारी और शिल्पकार रहा करते थे।

जिन जगहों पर अशोक के शिलालेख मिले है उन्हे लाल बिन्दुओ से दिखाया गया है। ये सारे इलाके साम्राज्य के भीतर थे। उन देशों के नाम बताओ जहाँ अशोक के अभिलेख मिले है। भारत के कौन-से राज्य मौर्य साम्राज्य से बाहर थे?

साम्राज्य के बहुत बड़े क्षेत्रो में किसानो और पशुपालकों के गाँव बसे हुए थे। मध्य भारत जैसे इलाकों में ज़्यादातर हिस्सा जगलो से भरा हुआ था। वहाँ पर लोग फल-फूल का संग्रहण और जानवरों का शिकार करके जीविका चलाते थे। साम्राज्य के अलग-अलग इलाकों मे लोग भिन्न-भिन्न
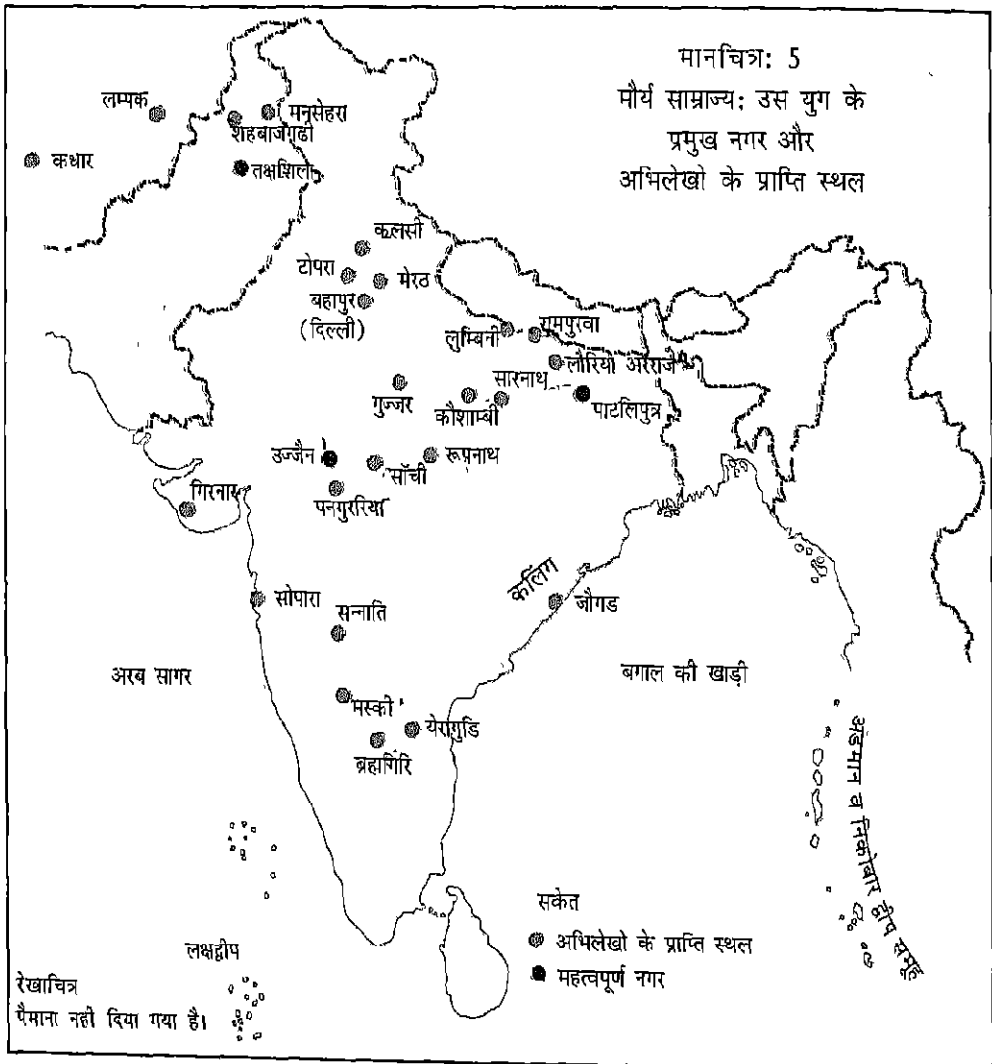
े लोग शायद अलग-अलग प्रकार का भोजन करते थे अलग-अलग किस्म की पोशाक भी पहनते थे।

से कैसे भिन्न है?

राज्यो से बड़े होते है और उनकी रक्षा के लिए बडी सेनाओ ोती है, इसीलिए सम्राटो को राजाओ की तुलना मे ज्यादा ज़रूरत होती है।

हे बड़ी सख्या मे कर इकट्ठा करने वाले अधिकारियों की ै।

शासन

य बहुत बड़ा था, इसलिए अलग-अलग हिस्सों पर से शासन किया जाता था। पाटलिपुत्र और उसके को पर सम्राट का सीधा नियंत्रण था। इसका मतलब यह ाके के गाँवो और शहरो के किसानों, पशुपालको, व्यापारियों से कर इकट्ठा करने के लिए राजा युक्ति करता था। जो राजा के आदेशों का उल्लघन करते ो सज़ा भी देते थे। इनमें से कई अधिकारियों को वेतन *संदेशवाहक* एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे और धिकारियों के कार्य-कलाप पर नज़र रखते थे। इन सबके राज-परिवार एवं वरिष्ठ मंत्रियो की सहायता से सब पर

के भीतर कई छोटे क्षेत्र या प्रात थे। इन पर तक्षशिला या ा राजधानियों से शासन किया जाता था। कुछ हद तक क्षेत्रों पर नियत्रण रखा जाता था और अक्सर राजकुमारों पाल (गवर्नर) बना कर भेजा जाता था। लेकिन ऐसा जगहों पर स्थानीय परंपराओं और नियमों को ही माना

के बीच विस्तृत क्षेत्र थे। इनके इलाकों मे मौर्य शासक ादियों पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते थे जो कि

आवागमन के लिए महत्वपूर्ण थे। यहाँ से उन्हें जो भी संसाधन कर और भेंट के रूप मे मिलते थे, उसे इकट्ठा किया जाता था। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र मे यह लिखा है कि उत्तर-पश्चिम कंबल के लिए और दक्षिण भारत सोने और कीमती पत्थरो के लिए प्रसिद्ध था। संभव है कि संसाधन नज़राने के रूप में इकट्ठे किए जाते थे।

नज़राना

जहाँ 'कर' नियमित ढंग से इकट्ठे किए जाते थे वही 'नजराना' अनियमित रूप से जब भी संभव हो, इकट्ठा किया जाता था। ऐसे नजराने विविध पदार्थों के रूप मे प्रायः ऐसे लोगो से लिए जाते थे जो स्वेच्छा से इसे देते थे।

राजधानी में सम्राट

मेगस्थनीज़, चन्द्रगुप्त के दरबार में पश्चिम-एशिया के यूनानी राजा सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था। मेगस्थनीज़ ने जो कुछ देखा उसका विवरण दिया।

यहाँ हम उसके विवरण का एक अश दे रहे है :

सम्राट का, जनता के सामने आने के अवसरों पर शोभायात्रा के रूप मे जश्न मनाया जाता है। उन्हे एक सोने की पालकी मे ले जाया जाता है। उनके अंगरक्षक सोने और चाँदी से अलकृत हाथियों पर सवार रहते है। कुछ अंगरक्षक पेड़ो को लेकर चलते है। इन पेड़ों पर प्रशिक्षित तोतों का एक झुण्ड रहता है जो सम्राट के सिर के चारो तरफ चक्कर लगाता रहता है। राजा सामान्यतः हथियारबद महिलाओं से घिरे होते है। वे हमेशा इस बात से डरे रहते है कि कहीं कोई उनकी हत्या करने की कोशिश न करे। उनके खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को चखते है। वे लगातार दो रात एक ही कमरे मे नही सोते थे।

और पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) के बारे में :

यह एक विशाल और खूबसूरत नगर है। यह एक विशाल प्राचीर से घिरा है जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार है। दो और तीन मजिल वाले घर, लकड़ी और कच्ची ईंटो से बने हैं। राजा का महल भी काठ से बना है जिसे पत्थर की नक्काशी से अलंकृत किया गया है। यह चारों तरफ़ से उद्यानों और चिड़ियो के लिए बने बसेरो से घिरा है।

राजा द्वारा खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को क्यों चखते थे?

पाटलिपुत्र मोहनजोदड़ो से किस तरह भिन्न था? (संकेत: अध्याय 4 देखो)

और अंत में जगल वाले इलाके आते थे, वहाँ रहने वाले लोग काफ़ी हद तक स्वतत्र थे। उनसे यह उम्मीद की जाती थी कि वे मौर्य पदाधिकारियों को हाथी, लकड़ी, मधु और मोम जैसी चीज़ें लाकर दे।

अशोक - एक अनोखा सम्राट

अशोक मौर्य वश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे। वह ऐसे पहले शासक थे जिन्होंने अभिलेखों द्वारा जनता तक अपने सदेश पहुँचाने की कोशिश की। अशोक के ज़्यादातर अभिलेख प्राकृत भाषा और देवनागरी लिपि मे हैं।

कलिंग युद्ध का वर्णन करता हुआ अशोक का अभिलेख

अपने एक अभिलेख में अशोक ने यह बात कही :

"राजा बनने के आठ साल बाद मैने कलिंग विजय की।

लगभग डेढ़ लाख लोग बदी बना लिए गए। एक लाख से भी ज़्यादा लोग मारे गए।

इससे मुझे अपार दुख हुआ। क्यो?

जब किसी स्वतत्र देश को जीता जाता है तो लाखो लोग मारे जाते है और बहुत सारे बंदी बनाए जाते है। इसमे ब्राह्मण और श्रमण भी मारे जाते हैं।

जो लोग अपने सगे-सबधियों और मित्रो को बहुत प्यार करते हैं तथा दासो और मृतको के प्रति दयावान होते है, वे भी युद्ध में या तो मारे जाते हैं या अपने प्रियजनों को खो देते हैं।

इसीलिए मुझे पश्चाताप हो रहा है। अब मैंने *धम्म* पालन करने एव दूसरों को इसकी शिक्षा देने का निश्चय किया है।

मैं मानता हूँ कि धम्म के माध्यम से लोगों का दिल जीतना बलपूर्वक विजय पाने से ज्यादा अच्छा है। मै यह अभिलेख भविष्य के लिए एक सदेश के रूप मे इसलिए उत्कीर्ण कर रहा हूँ कि मेरे बाद मेरे बेटे और पोते भी युद्ध न करे।

इसके बदले उन्हें यह सोचना चाहिए कि धम्म को कैसे बढ़ाया जाए।"

कलिंग की लड़ाई से युद्ध को लेकर अशोक के विचारों में कैसे परिवर्तन हुआ?

('धम्म' सस्कृत शब्द 'धर्म' का प्राकृत रूप है)।

अशोक का कलिंग युद्ध

कलिंग तटवर्ती उड़ीसा का प्राचीन नाम है (मानचित्र 5, पृष्ठ 76 देखो)। अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए एक युद्ध लड़ा। लेकिन युद्धजनित हिंसा और खून-खराबा देखकर उन्हे युद्ध से वितृष्णा हो गई। उन्होने निर्णय लिया कि वे भविष्य मे कभी युद्ध नहीं करेंगे।

उत्कृष्ट पॉलिश वाले पत्थर की इस मूर्ति को देखो। यह बिहार के रामपुरवा मे मिले एक मौर्यकालीन स्तभ का हिस्सा है। अभी इसे राष्ट्रपति भवन मे रखा गया है। यह उस समय की मूर्तिकला का एक नमूना है।

अशोक का धम्म क्या था?

अशोक के धम्म में किसी देवता की पूजा अथवा किसी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें लगता था कि जैसे पिता अपने बच्चों को अच्छे व्यवहार की शिक्षा देते हैं वैसे ही यह उनका कर्तव्य था कि अपनी प्रजा को निर्देश दे। वे बुद्ध के उपदेशो से भी प्रेरित हुए थे।

ऐसी कई समस्याएँ थीं जिनके लिए उनमे संवेदना थी। उनके साम्राज्य मे अलग-अलग धर्मो को मानने वाले लोग थे और इससे कई बार टकराव पैदा हो जाता था। जानवरो की बलि चढ़ाई जाती थी। दासों और नौकरो के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था। इनके अलावा परिवार में, पड़ोसियो के बीच भी झगड़े होते रहते थे। अशोक ने यह महसूस किया कि इन समस्याओ का निदान उसका कर्तव्य है। इसीलिए उसने धम्म-महामात्त नाम के अधिकारियो की नियुक्ति की जो जगह-जगह जाकर धम्म की शिक्षा देते थे।

इसके अतिरिक्त अशोक ने अपने संदेश कई स्थानों पर शिलाओं और स्तंभो पर खुदवा दिए। अधिकारियों को यह निर्देश दिया गया कि वे राजा के सदेश को उन लोगो को पढ़कर सुनाएँ जो खुद पढ़ नहीं सकते थे।

अपनी प्रजा के लिए अशोक के संदेश

लोग विभिन्न अवसरो पर अनुष्ठान करते हैं। उदाहरण के लिए जब वे बीमार होते है, जब उनके बच्चो का विवाह होता है, बच्चो के जन्म पर और जब यात्रा शुरू करते है, तब वे तरह-तरह के अनुष्ठान करते है।

ये कर्मकाड किसी काम के नही।

इसके बदले यदि लोग दूसरी रीतियो को माने तो वह ज़्यादा फलदायी होगी। ये अन्य प्रकार की रीतियॉ क्या है?

ये है – अपने दासों और नौकरो के साथ अच्छा व्यवहार करना, बड़ो का आदर करना, सभी जीवो पर दया करना और ब्राह्मणो तथा श्रमणो को दान देना।

अपने धम्म की प्रशसा या दूसरो के धम्म की निन्दा करना, दोनो ही बाते गलत हैं। हर किसी को दूसरे धर्म का आदर करना चाहिए। यदि कोई अपने धर्म की बड़ाई और दूसरो के धर्म की बुराई करता है तो वह वास्तव मे अपने धर्म को ज्यादा नुकसान पहुॅचा रहा है।

इसीलिए हर किसी को दूसरे के धर्म के प्रमुख विश्वासो को समझने की कोशिश करते हुए उसका आदर करना चाहिए।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, "उनके धर्मादेश आज भी हमसे एक ऐसी भाषा मे बात करते हैं जिसे हम समझ सकते हैं और जिनसे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

अशोक ने धम्म के विचारो को दूर-दूर तक फैलाने के लिए उन बातो को बताया जो आपके अनुसार आज भी प्रासंगिक है। अशोक के संदेश के उन हिस्सो को बताओ जो आज भी प्रासंगिक है।

ब्राह्मी लिपि

आधुनिक भारत की ज्यादातर लिपियाँ पिछले सैकडो वर्षो मे ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुईं।

यहॉ आप 'अ' अक्षर को अलग-अलग भाषाओ की लिपियो मे देख सकते है।

आरंभिक ब्राह्मी	देवनागरी (हिंदी)	बांग्ला	मलयालम	तमिल
𑀅	अ	অ	അ	அ

अन्यत्र

मौर्य साम्राज्य के उभरने से थोडा पहले लगभग 2400 वर्ष पहले, चीन मे सम्राटो ने चीन की दीवार का निर्माण शुरू किया। इसे बनाने का उद्देश्य उत्तरी सीमा की पशुपालक लोगो से रक्षा करना था। अगले 2000 वर्षो तक इस दीवार का निर्माण कार्य चलता रहा, क्योकि साम्राज्य की सीमाएँ बदलती रही। यह दीवार लगभग 6400 किलोमीटर लंबी है तथा पत्थर और ईंट से बनी है। इसकी ऊपरी सतह सड़क जैसी चौड़ी है। इस दीवार को बनाने के लिए हजारों लोगो को काम करना पड़ा। हर 100-200 मीटर की दूरी पर इस पर निगरानी के लिए बुर्ज बने हुए है।

पडोसी देशो के प्रति अशोक का रवैया चीनी सम्राटो के रवैये से कैसे भिन्न था?

कल्पना करो

तुम कलिंग मे रहती हो और तुम्हारे माँ-बाप को युद्ध मे काफी दुख उठाने पड़े हो। अभी अभी अशोक के दूत धम्म के नए विचार को लेकर आए हो। अपने माता-पिता और संदेशवाहको के बीच बातचीत का वर्णन करो।

उपयोगी शब्द

साम्राज्य
राजधानी
अधिकारी
संदेशवाहक
प्रात
धम्म

आओ याद करें

1. मौर्य साम्राज्य में विभिन्न काम-धधो मे लगे हुए लोगो की सूची बनाओ।

2 रिक्त स्थानों को भरो :

(क) जहाँ पर सम्राटों का सीधा शासन था वहाँ अधिकारी ______ वसूलते थे।

(ख) राजकुमारो को अक्सर प्रातो मे ______ के रूप में भेजा जाता था।

(ग) मौर्य शासक आवागमन के लिए महत्वपूर्ण ______ और ______ पर नियत्रण रखने का प्रयास करते थे।

(घ) प्रदेशो मे रहने वाले लोग मौर्य अधिकारियो को ______ दिया करते थे।

3. बताओ कि निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत

(क) उज्जैन उत्तर-पश्चिम की तरफ़ आवागमन के मार्ग पर था।

(ख) आधुनिक पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के इलाके मौर्य साम्राज्य के अदर थे।

(ग) चन्द्रगुप्त के विचार अर्थशास्त्र मे लिखे गए हैं।

(घ) कलिंग बंगाल का प्राचीन नाम था।

(ड) अशोक के ज्यादातर अभिलेख ब्राह्मी लिपि मे है।

कुछ महत्वपूर्ण

तिथियाँ

▶ मौर्य साम्राज्य की शुरुआत (2300 साल से पहले)

आओ चर्चा करें

4. उन समस्याओ की सूची बनाओ जिनका समाधान अशोक धम्म द्वारा करना चाहता था।

5. धम्म के प्रचार के लिए अशोक ने किन साधनो का प्रयोग किया?

6. तुम्हारे अनुसार दासो और नौकरो के साथ बुरा व्यवहार क्यो किया जाता होगा? क्या तुम्हे ऐसा लगता है कि सम्राट के आदेशों से उनकी स्थिति मे सुधार हुआ होगा? अपने जवाब के लिए कारण बताओ।

आओ करके देखें

7. रौशन को यह बताते हुए कि हमारे रुपयो पर शेर क्यो दिखाए गए हैं एक पैराग्राफ लिखो। कम से कम एक और चीज़ का नाम लो जिस पर इन्ही शेरों के चित्र बने हैं।

8 अगर तुम्हारे पास अपना अभिलेख जारी करने की शक्ति होती तो तुम कौन-सी चार राजाज्ञाएँ देते?

मानचित्र: 6

रेशम मार्ग सहित महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग
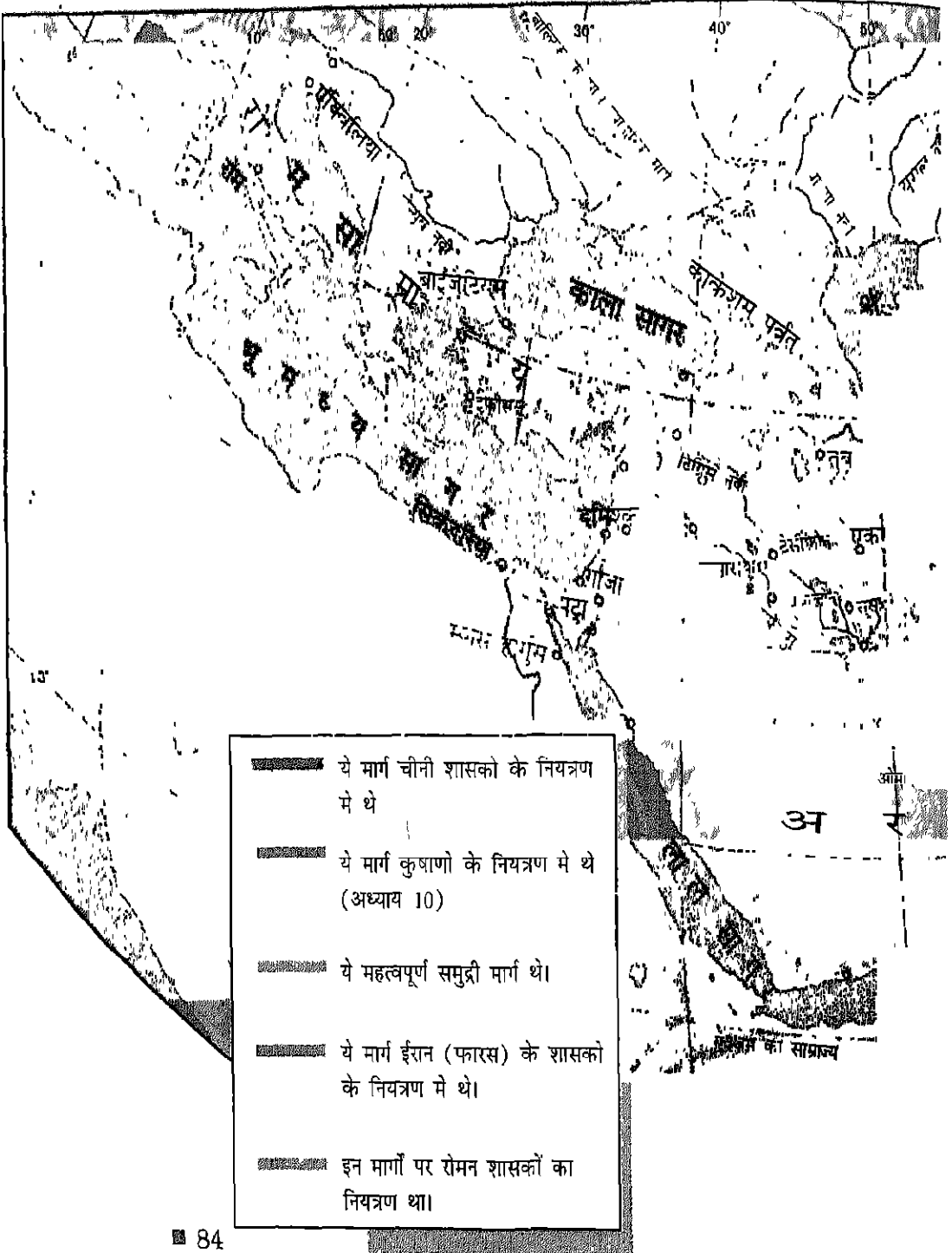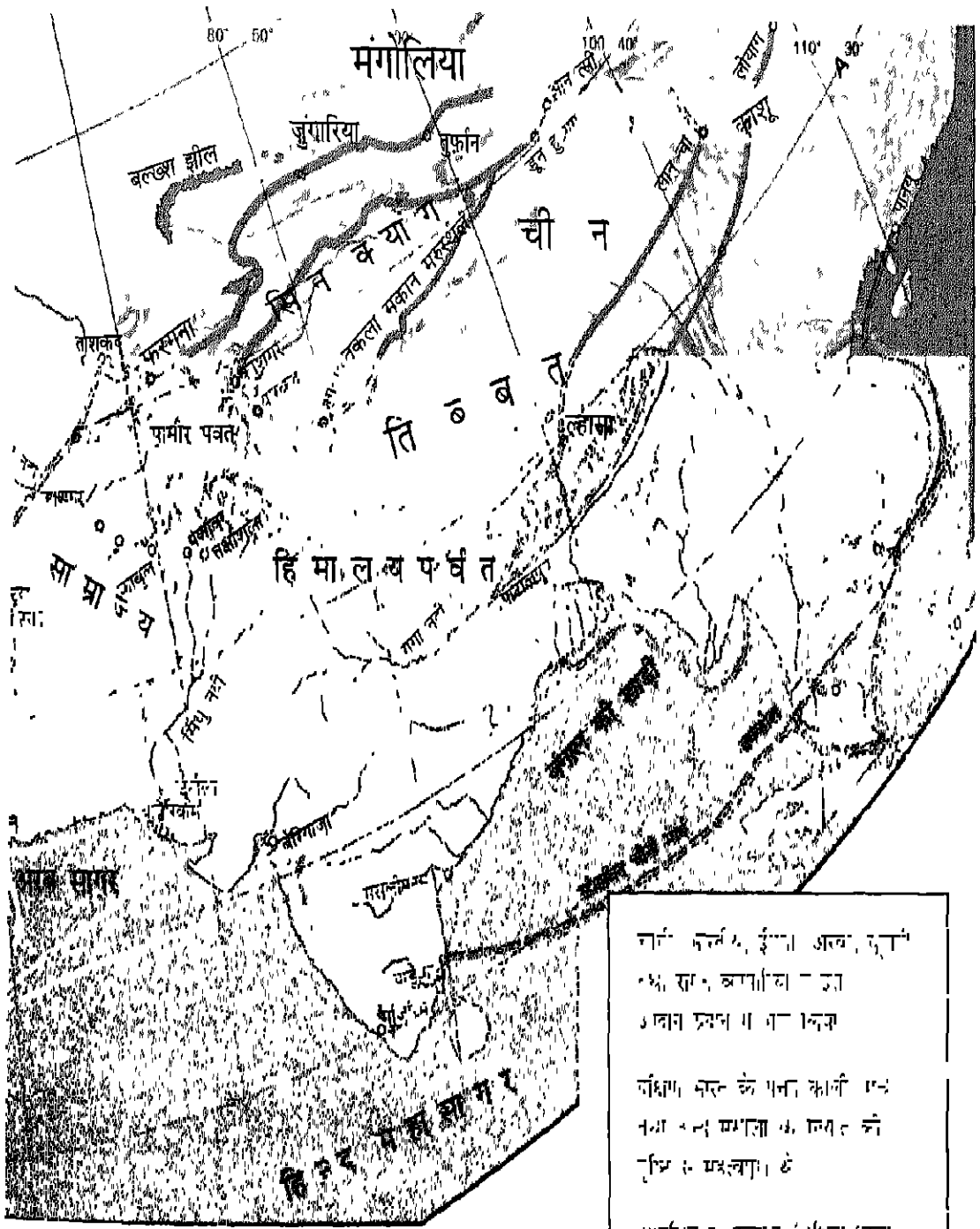
मानचित्र में पाडुका (दक्षिण भारत में) ढूँढ़ो। अरिकामेडु का यह रोमन नाम था (अध्याय 9)।

दि टाइम्स एटलस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री (संपा. ज्योफ्रे बाराक्लो) हैमंड इंक, न्यू जर्सी, 1986, पृ. 70–71 पर आधारित

लगभग 2200 वर्ष पहले मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया। इसके स्थान पर, (साथ ही अन्य जगहों पर भी) कई नए राज्यो का उदय हुआ। पश्चिमोत्तर मे तथा उत्तर-भारत के कुछ भागो मे करीब एक सौ सालो तक हिन्द-यवन राजाओ का शासन रहा। इनके बाद पश्चिमोत्तर, उत्तर तथा पश्चिमी भारत पर शक नामक मध्य-एशियाई लोगो का शासन स्थापित हुआ। इनमे से कुछ राज्य लगभग 500 वर्षों तक टिके रहे जब तक कि शक शासको को गुप्त शासको से पराजय नहीं मिल गई (अध्याय 11)। शको के बाद कुषाणो (लगभग 2000 वर्ष पहले) का शासन स्थापित हुआ। अध्याय 10 मे तुम कुषाणो के बारे में और अधिक जानोगे।

हिन्द-यवन सिक्का

उत्तर तथा मध्यभारत के कुछ इलाको मे मौर्य सेनानायक पुष्यमित्र शुग ने एक राज्य की स्थापना की। शुगों के बाद कण्व तथा कुछ और वशो का शासन तब तक चला जब तक लगभग 1700 वर्ष पहले गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई।

कुषाण सिक्का

हमने देखा कि पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों पर शको का शासन था। यहाँ पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत पर शासन कर रहे सातवाहन शासको के साथ इनके कई युद्ध हुए। लगभग 2100 साल पहले स्थापित सातवाहन राज्य लगभग 400 सालो तक टिका रहा। लगभग 1700 वर्ष पहले मध्य तथा पश्चिमी भारत मे वाकाटक वंश का शासन स्थापित हुआ।

दक्षिण भारत मे, 2200 से 1800 साल पूर्व के बीच चोलो, चेरो तथा पाण्ड्यो ने शासन किया। लगभग 1500 साल पहले, पल्लवों और चालुक्यों के दो बड़े राज्यो की स्थापना हुई।

शक सिक्का

इसके अलावा और भी कई राज्य और राजा थे। इनके बारे में हमे उनके सिक्को, पाण्डुलिपियो तथा पुस्तको से पता चलता है। इन सब के साथ-साथ अनेक ऐसे परिवर्तन भी हो रहे थे, जिनमे सामान्य स्त्री-पुरुषो का महत्वपूर्ण योगदान था। इनमे कृषि का प्रसार, नए शहरो का विकास, उद्योग तथा व्यापार मे प्रगति थी। व्यापारियो ने एक तरफ जहाँ उपमहाद्वीप के अदर तथा बाहर जमीन के रास्तो की खोज की, वही पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया (मानचित्र 6 देखो) के समुद्री रास्ते भी खुले। मंदिर, स्तूपों तथा अन्य इमारतो का निर्माण हुआ, किताबे लिखी गई, साथ ही, वैज्ञानिक खोजे भी हुई। ये सारी बाते साथ-साथ हो रही थी। इस पुस्तक के बाकी हिस्सो को पढ़ते हुए तुम इन बातों को ध्यान में रखना।

सातवाहन सिक्का

लोहार की दुकान पर प्रभाकर

प्रभाकर लोहारो को काम करते देख रहा था। एक छोटी-सी बेच पर कुल्हाड़ी और हँसिया जैसे कुछ औजार बेचने के लिए रखे थे। दूसरी ओर भट्ठी जल रही थी। औजार बनाने के लिए दो लोग लोहे की एक छड़ को गरम कर उसे पीट रहे थे। प्रभाकर को ये सब बड़ा मजेदार लग रहा था।

लोहे के औज़ार और खेती

लोहे का प्रयोग आज एक आम बात है। लोहे की चीजे हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गई है। इस उपमहाद्वीप मे लोहे का प्रयोग लगभग 3000 साल पहले शुरू हुआ। महापाषाण कब्रो मे लोहे के औजार और हथियार बड़ी सख्या मे मिले है। इनके बारे में तुम अध्याय 5 मे पढ़ चुके हो।

करीब 2500 वर्ष पहले लोहे के औज़ारों के बढ़ते उपयोग का प्रमाण मिलता है। इनमें जगलों को साफ़ करने के लिए कुल्हाड़ियाँ और जुताई के लिए हलो के फाल शामिल है। अध्याय 6 मे तुमने पढ़ा था कि लोहे के फाल के इस्तेमाल से कृषि उत्पादन बढ़ गया।

औजारो की सूची मे इन चित्रो के नाम चुनो – हँसिया, कुल्हाड़ी, और सँड़सी। लोहे की एसी पॉच चीजो की सूची बनाओ जिनका प्रयोग तुम रोज करते हो।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उठाए गए अन्य कदम : सिंचाई

समृद्ध गाँवो के बिना राजाओ तथा उनके राज्यों का बने रहना मुश्किल था। जिस तरह कृषि के विकास में नए औजार तथा रोपाई (अध्याय 6) महत्वपूर्ण कदम थे, उसी तरह सिंचाई भी काफी उपयोगी साबित हुई। इस समय सिंचाई के लिए नहरे, कुएँ, तालाब तथा कृत्रिम जलाशय बनाए गए।

इस चार्ट में तुम्हे सिंचाई से आए परिवर्तन दिखाए गए हैं। खाली स्थानों में सही वाक्य भरो :

- लोगों द्वारा परिश्रम किया गया।
- किसानों को लाभ मिला, क्योंकि अब उत्पादन की अनिश्चितता घटी।
- कर अदा करने के लिए किसानों को उत्पादन बढ़ाना था।
- राजाओं ने सिंचाई की योजना बनाई और धन खर्च किया।

1. राजा को सेना, महल और किले बनवाने के लिए धन चाहिए।

2. वे किसानों से कर लेते हैं।

3.

4. यह सिंचाई से ही संभव था।

5.

6.

7. कृषि उत्पादन बढ़ा।

8. राजस्व भी बढ़ा।

9.

गाँवों में कौन रहते थे?

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी तथा उत्तरी हिस्सों के अधिकांश गाँवों में कम से कम तीन तरह के लोग रहते थे। तमिल क्षेत्र में बड़े भूस्वामियों को *वेल्लला*, साधारण हलवाहों को *उणवार* और भूमिहीन मज़दूर, दास *कडैसियार* और *अदिमई* कहलाते थे।

देश के उत्तरी हिस्से में, गाँव का प्रधान व्यक्ति *ग्राम-भोजक* कहलाता था। अक्सर एक ही परिवार के लोग इस पद पर कई पीढ़ियों तक बने

रहते थे। यानी कि यह पद आनुवंशिक था। *ग्राम-भोजक* के पद पर आमतौर पर गाँव का सबसे बड़ा भू-स्वामी होता था। साधारणतया इनकी ज़मीन पर इनके दास और मज़दूर काम करते थे। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली होने के कारण प्रायः राजा भी कर वसूलने का काम इन्हें ही सौंप देते थे। ये न्यायाधीश का और कभी-कभी पुलिस का काम भी करते थे।

ग्राम-भोजकों के अलावा अन्य स्वतंत्र कृषक भी होते थे, जिन्हें *गृहपति* कहते थे। इनमें ज़्यादातर छोटे किसान ही होते थे। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे स्त्री-पुरुष थे, जिनके पास अपनी ज़मीन नहीं होती थी। इनमे दास *कर्मकार* आते थे, जिन्हें दूसरों की ज़मीन पर काम करके अपनी जीविका चलानी पड़ती थी।

अधिकांश गाँवों में लोहार, कुम्हार, बढ़ई तथा बुनकर जैसे कुछ शिल्पकार भी होते थे।

प्राचीनतम तमिल रचनाएँ

तमिल की प्राचीनतम रचनाओं को *संगम* साहित्य कहते है। इनकी रचना करीब 2300 साल पहले की गई। इन्हें *संगम* इसलिए कहा जाता है क्योंकि मदुरै (देखो मानचित्र 7, पृष्ठ 113) के कवियों के सम्मेलनों में इनका संकलन किया जाता था। गाँव में रहने वालों के जिन तमिल नामों का उल्लेख यहाँ किया गया है, वे *संगम* साहित्य में पाए जाते हैं।

नगर : क्या कहती हैं कहानियाँ, यात्रा-विवरण, मूर्तिकलाएँ और पुरातत्त्व

तुमने जातकों के बारे में सुना होगा। ये वो कहानियाँ हैं, जो आम लोगों में प्रचलित थीं। बौद्ध भिक्खुओं ने इनका संकलन किया। यहाँ एक जातक कथा दी गई है, जिसमें यह बताया गया है कि एक निर्धन किस तरह धीरे-धीरे धनी बन जाता है।

एक [illegible] की चतुराई

एक शहर मे एक गरीब युवक रहता था। उसके पास एक मरे चूहे के अलावा कुछ नही था। उसने उस चूहे को एक सिक्के मे एक भोजनालय वाले की बिल्ली के लिए बेच दिया।

फिर एक दिन बड़ी जोर की आँधी आई। राजा का बगीचा टूटी टहनियो और पत्तों से भर गया। उनका माली इसे साफ करने की बात से परेशान हो उठा। युवक ने माली से कहा कि अगर लकड़ियाँ और पत्ते उसे मिल जाएँ तो वह बगीचे की सफ़ाई कर सकता है। माली तुरत मान गया।

युवक ने पास खेल रहे बच्चो को यह कह कर इकट्ठा कर लिया कि प्रत्येक टहनी और पत्ते के बदले में उन्हे एक-एक मिठाई मिलेगी। देखते ही देखते उन्होने बगीचे से एक-एक तिनका चुनकर गेट के पास इकट्ठा कर दिया। तभी उधर से राजा का कुम्हार बर्तनों को पकाने के लिए ईधन की तलाश में गुजरा। उसने पूरे ढेर को खरीद लिया। इस तरह युवक के पास कुछ और पैसे हो गए।

अब उस युवक ने एक और योजना बनाई। एक बड़े बर्तन मे पानी भरकर वह नगर के द्वार पर गया और वहाँ उसने घास काटने वाले 500 लोगो को पानी पिलाया।

खुश होकर उन लोगो ने कहा, "तुमने हमारे लिए इतना अच्छा काम किया बताओ अब हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते है?"

उसने कहा, "मै आपको यह तब बताऊँगा जब मुझे आपकी सहायता की जरूरत होगी।" उसके बाद उसने एक व्यापारी से दोस्ती की। एक दिन उस व्यापारी ने बताया, "कल एक घोडे का व्यापारी 500 घोड़ो के साथ शहर मे आ रहा है।"

यह सुनकर उस युवक ने उन घास काटने वालो के पास जाकर कहा, "कृपया, तुम सब एक-एक घास का गट्ठर मुझे दो और अपनी घास तब तक मत बेचो, जब तक मेरी न बिक जाए।" उन्होने उसे घासों के 500 गट्ठर दे दिए। जब घोड़े के व्यापारी को कही भी घास न मिली तो उसने इस युवक की घास एक हजार सिक्के मे खरीद ली।

[illegible]

[illegible] (क) [illegible], (ख) [illegible], या फिर (ग) [illegible]

[illegible]

[illegible]

प्राचीन नगरों के जीवन के बारे में हमे कुछ अन्य स्रोतों से भी पता चल सकता है। शहरो, गॉवो या फिर जगलों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को मूर्तिकार कलात्मक ढंग से उकेरते थे। इन मूर्तियों को ऐसी इमारतों की रेलिंग, खभों या प्रवेश-द्वारो पर सजाया जाता था जहाँ लोग आते थे।

दिल्ली मे मिला वलयकूप।
हडप्पा की जल निकास व्यवस्था से यह कैसे भिन्न है?

नीचे: सॉची की मूर्तिकला। यह मध्य प्रदेश स्थित सॉची के स्तूप की मूर्तिकला का नमूना है। इसमे शहर के जीवन का एक दृश्य है। तुम अध्याय 12 मे सॉची के बारे मे पढ़ोगे। इन दीवारो को देखो। क्या वे ईंट की बनी है या फिर लकड़ी या पत्थर से? क्या इसकी रेलिंग लकड़ी की बनी है? इन इमारतो की छतो का वर्णन करो।

अध्याय 6 मे वर्णित अनेक शहर, महाजनपदों की राजधानी थे। जैसा कि तुमने पढ़ा इनमे से कुछ शहर परकोटो से घिरे होते थे।

जैसा कि तुम ऊपर के चित्र मे देख रहे हो, अनेक शहरो में *वलयकूप* मिले है। ये वलयकूप गुसलखाने, नाली या कूड़ेदान के लिए प्रयुक्त होते थे। प्राय: ये वलयकूप लोगो के घरों में होते थे।

महलो, बाजारो या आम घरों के अवशेष बहुत कम मिले है। सभवत: लकड़ी, मिट्टी व कच्ची ईंटो या छप्पर से बने होने के कारण ये ज्यादा समय तक टिक न पाए हो। भविष्य मे पुरातत्त्वविद् इनकी खोज कर सकते है।

प्राचीन शहरो के बारे में वहाँ गए नाविकों तथा यात्रियो के विवरणो द्वारा भी पता चलता है। ऐसा ही एक विस्तृत विवरण किसी अज्ञात यूनानी नाविक का है। जिन-जिन
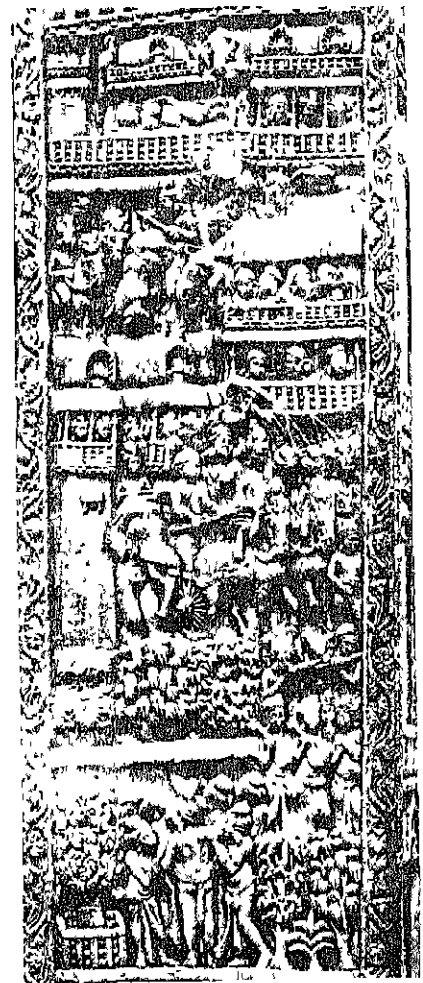
बेरिगाज़ा (भरूच का यूनानी नाम) की कहानी

बेरिगाज़ा की संकरी खाड़ी में समुद्र से आने वालों के लिए नाव चला पाना बहुत मुश्किल होता है।

राजा के द्वारा नियुक्त कुशल और अनुभवी स्थानीय मछुआरे ही यहाँ जहाज़ ला सकते थे।

बेरिगाज़ा में शराब, ताँबा, टिन, सीसा, मूँगा, पुखराज, कपड़े, सोने और चाँदी के सिक्को का आयात होता था।

हिमालय की जड़ी-बूटियाँ, हाथी-दाँत, गोमेद, कार्नीलियन, सूती कपड़ा, रेशम तथा इत्र यहाँ से निर्यात किए जाते थे।

राजा के लिए व्यापारी विशेष उपहार लाते थे। इनमें चाँदी के बर्तन, गायक-किशोर, सुंदर औरते, अच्छी शराब तथा उत्कृष्ट महीन कपड़े शामिल थे।

बेरिगाज़ा से आयात और निर्यात होने वाली चीज़ों की सूची बनाओ।

एक ऐसी चीज़ बताओ, जिसका उपयोग हड़प्पा युग में नहीं होता था।

पत्तनो पर वह गया, उन सभी के बारे मे उसने लिखा है। मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में भरूच ढूँढ़ो। अब उसके द्वारा दिए गए वर्णन को पढ़ो।

सिक्के

पृष्ठ 90 पर दी गई कहानी मे तुमने देखा कि किस तरह सिक्कों के आधार पर सम्पत्ति का मूल्यांकन किया गया। पुरातत्त्वविदो को इस युग के हजारों सिक्के मिले हैं। सबसे पुराने आहत सिक्के थे, जो करीब 500 साल चले। इसका चित्र नीचे दिया गया है। चाँदी या सोने के सिक्को पर विभिन्न आकृतियो को आहत कर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत सिक्का कहा जाता था।
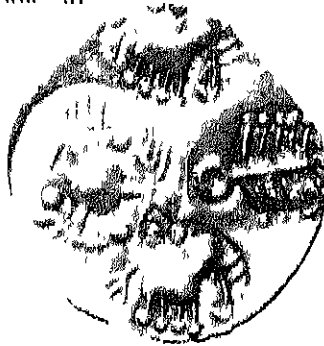
विनिमय के अन्य साधन

सगम साहित्य की इस छोटी सी कविता को पढ़ो।

खेतों के सफ़ेद धान गाड़ियो पर लादे
जा रहे हैं
नमक के लिए,
लबे-लंबे रास्ते
चाँदनी सी सफ़ेद रेत पर
परिवार को समेटे
कहीं पीछे छूट न जाएँ।
शहरो से नमक के सौदागरो के
यूँ चले जाने से सिर्फ़ सन्नाटा रह जाता है।

समुद्र के किनारे नमक का बहुत ज्यादा उत्पादन होता था।

व्यापारी किस चीज से इसका विनिमय करते हैं?

वे किस तरह यात्रा कर रहे हैं?

नगर : अनेक गतिविधियों के केंद्र

अक्सर नगर कई कारणों से महत्वपूर्ण हो जाते थे। उदाहरण के लिए मथुरा (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) को देखो।

यह 2500 साल से भी ज़्यादा समय से एक महत्वपूर्ण नगर रहा है क्योकि यह यातायात और व्यापार के दो मुख्य रास्तों पर स्थित था। इनमें से एक रास्ता उत्तर-पश्चिम से पूरब की ओर, दूसरा उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाला था। शहर के चारों ओर किलेबंदी थी, इसमें अनेक मदिर थे। आस-पास के किसान तथा पशुपालक शहर में रहने वालो के लिए भोजन जुटाते थे। मथुरा बेहतरीन मूर्तियाँ बनाने का केद्र था।

लगभग 2000 साल पहले मथुरा कुषाणों की दूसरी राजधानी बनी। इसके बारे में तुम अगले अध्याय में पढ़ोगे। मथुरा एक धार्मिक केंद्र भी रहा है। यहाँ बौद्ध विहार और जैन मंदिर हैं। यह कृष्ण भक्ति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

मथुरा मे प्रस्तर-खडो तथा मूर्तियों पर अनेक अभिलेख मिले है। आमतौर पर ये सक्षिप्त अभिलेख हैं, जो स्त्रियों तथा पुरुषों द्वारा मठों या मंदिरों को दिए जाने वाले दान का उल्लेख करते हैं। प्राय: शहर के राजा, रानी, अधिकारी, व्यापारी तथा शिल्पकार इस प्रकार के दान करते थे। उदाहरण के लिए मथुरा के अभिलेख मे सुनारो, लोहारो, बुनकरों, टोकरी बुनने वालो, माला बनाने वालो और इत्र बनाने वालों के उल्लेख मिलते हैं।

मथुरा के लोगो के व्यवसायो की एक सूची बनाओ। एक ऐसे व्यवसाय का नाम बताओ जो हड़प्पा मे नही था।

शिल्प तथा शिल्पकार

पुरास्थलों से शिल्पों के नमूने मिले है। इनमें मिट्टी के बहुत ही पतले और सुदर बर्तन मिले हैं, जिन्हें उत्तरी काले चमकीले पात्र कहा जाता है क्योकि ये ज्यादातर उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में मिले हैं तथा ये प्राय: काले रंग के होते हैं, और इनमे एक खास चमक होती है।

ध्यान रहे कि अन्य दूसरे शिल्पो के अवशेष नही बचे होगे। जैसे कि विभिन्न ग्रंथो से हमे पता चलता है कि कपड़ों का उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण था। उत्तर में वाराणसी और दक्षिण में मदुरै इसके प्रसिद्ध केंद्र थे। यहाँ स्त्री-पुरुष दोनो काम करते थे।

अनेक शिल्पकार तथा व्यापारी अपने-अपने संघ बनाने लगे थे, जिन्हे *श्रेणी* कहते थे। शिल्पकारों की श्रेणियो का काम प्रशिक्षण देना, कच्चा माल उपलब्ध कराना तथा तैयार माल का वितरण करना था। जबकि व्यापारियों की श्रेणियाँ व्यापार का संचालन करती थीं। श्रेणियाँ बैंकों के रूप में काम करती थीं, जहाँ लोग पैसे जमा रखते थे। इस धन का निवेश लाभ के लिए किया जाता था। उससे मिले लाभ का कुछ हिस्सा जमा करने वाले को लौटा दिया जाता था या फिर मठ आदि धार्मिक संस्थानो को दिया जाता था।

सूत कातने और बुनने के नियम

ये नियम *अर्थशास्त्र* के है। अध्याय 8 मे अर्थशास्त्र का उल्लेख किया गया है। इसमे वर्णन किया गया है कि किस प्रकार एक विशेष पदाधिकारी की देखरेख में कारखानों में सूत की कताई और बुनाई की जाती थी।

ऊन, पेड़ो की छाल, कपास, पटुआ तथा सन को तैयार करने के काम में विधवाओ, सक्षम-अक्षम महिलाओ, भिक्खुणियों, वृद्धा वेश्याओं, राजा की अवकाशप्राप्त दासियो, सेविकाओ और अवकाशप्राप्त देवदासियों को लगाया जा सकता है।

इन्हें इनके काम के और गुणवत्ता के अनुसार पारिश्रमिक देना चाहिए। जिन महिलाओं को बाहर निकलने की अनुमति नही है, वे अपनी दासियों को भेजकर कच्चे माल को मंगवा सकती है और फिर तैयार माल उन्हे भिजवा सकती है।

वे औरते, जो कारखाने तक जा सकती है, उन्हे अपना माल कारखाने तक तड़के ले जाना पड़ता था, जहाँ उन्हे पारिश्रमिक मिलता था। इस समय माल को अच्छी तरह जाँचने के लिए रोशनी रहती है। अगर निरीक्षक उस औरत की तरफ़ देखता है या इधर-उधर की बाते करता है, तो उसे सजा मिलनी चाहिए।

अगर औरत ने अपना काम पूरा नही किया, तो उसे जुर्माना देना होगा, इसके लिए उसका अंगूठा भी काटा जा सकता है।

इन महिलाओं की सूची बनाओ जिन्हें निरीक्षक नियुक्त कर सकता था।

क्या काम करने के दौरान महिलाओं को मुश्किलें झेलनी पड़ती थीं?

सूक्ष्म निरीक्षण : अरिकामेडु

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में अरिकामेडु (पांडिचेरी में) ढूँढ़ो। पृष्ठ 96 में रोम के बारे में दी जानकारी पढ़ो। लगभग 2200 से 1900 साल पहले अरिकामेडु एक पत्तन था, यहाँ दूर-दूर से आए जहाजों से सामान उतारे जाते थे। यहाँ ईटों से बना एक ढाँचा मिला है जो संभवत: गोदाम रहा हो। यहाँ भूमध्य-सागरीय क्षेत्र के एंफ़ोरा जैसे पात्र मिले है। इनमें शराब या तेल जैसे तरल पदार्थ रखे जा सकते थे। इनमे दोनों तरफ़ से पकड़ने के लिए हत्थे लगे है। साथ ही यहाँ 'एरेटाइन' जैसे मुहर लगे लाल-चमकदार बर्तन भी मिले है। इन्हे इटली के एक शहर के नाम पर 'एरेटाइन' पात्र के नाम से जाना जाता है। इसे मुहर लगे साँचे पर गीली चिकनी मिट्टी को दबा कर बनाया जाता था। कुछ

अभिलेखित मिट्टी के बर्तन। कई बर्तनो पर ब्राह्मी लिपि मे अभिलेख मिले है। प्रारंभ मे तमिल भाषा के लिए इसी लिपि का प्रयोग किया जाता था। इसीलिए इन्हे तमिल ब्राह्मी अभिलेख भी कहा जाता है।

ऐसे बर्तन भी मिले है, जिनका डिज़ाइन तो रोम का था, किन्तु वे यहीं बनाए जाते थे। यहाँ रोमन लैंप, शीशे के बर्तन तथा रत्न भी मिले हैं।

साथ ही छोटे-छोटे कुण्ड मिले हैं, जो संभवतः कपड़े की रंगाई के पात्र रहे होंगे। यहाँ पर शीशे और अर्ध-बहुमूल्य पत्थरो से मनके बनाने के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं।

रोम के साथ संबध दर्शाने वाले साक्ष्य की सूची बनाओ।

अन्यत्र
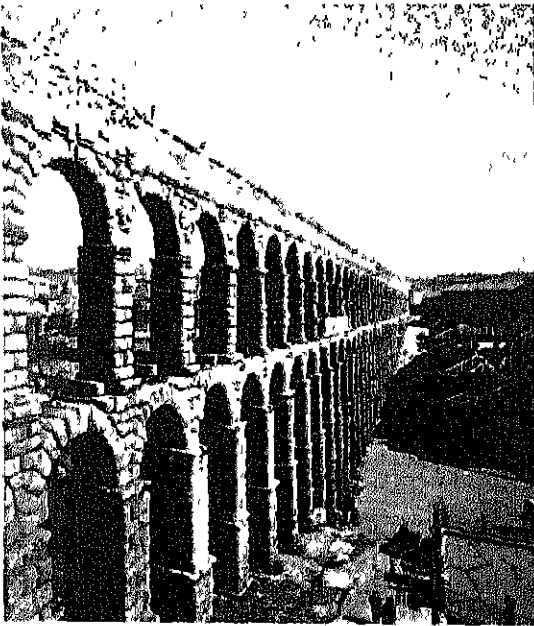
एक्वाडक्ट

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84) में रोम को ढूँढो। यह यूरोप के सबसे पुराने शहरो में से एक है। इसका विकास लगभग तभी हुआ, जब गंगा के मैदान के शहर बस रहे थे। रोम एक बहुत बड़े साम्राज्य की राजधानी था। यह यूरोप, उत्तरी अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया तक फैला साम्राज्य था। इसके सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक ऑगस्टस ने करीब 2000 साल पहले शासन किया था। उसने कहा था कि रोम ईंटों का शहर था, जिसे मैंने संगमरमर का बनवाया। ऑगस्टस और उसके बाद के शासको ने कई मदिर तथा महल भी बनवाए। ऑगस्टस ने बड़े-बड़े रंगमंडल (एम्फिथियेटर) बनवाए। इनमें चारों तरफ़ दर्शकों के बैठने की सीढ़ीनुमा जगहें होती थीं। यहाँ लोग विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम देख सकते थे। उन्होने स्नानागार भी बनवाए जहाँ स्त्रियो तथा पुरुषों के लिए अलग-अलग समय निर्धारित थे। यहाँ लोग एक-दूसरे से मिलते थे, और आराम करते थे। बड़े-बड़े जलवाही सेतु (एक्वाडक्ट) के ज़रिए शहर के स्नानागारों, फव्वारों तथा गुसलखानों के लिए पानी लाया जाता था।

ये बड़े खुले रंगमडल (एम्फीथियेटर) और जलवाही सेतु इतने दिनो तक कैसे बचे रहे?

कल्पना करो

तुम अरिकामेडु में रहते हो और पत्तन देखने निकले हो। तुमको क्या-क्या देखने को मिला?

उपयोगी शब्द

लोहा
गाँव
सिंचाई
संगम
नगर
वलयकूप
पत्तन
श्रेणी

आओ याद करें

1. खाली जगहों को भरो :

   (क) तमिल मे बड़े भूस्वामी को ———— कहते थे।
   (ख) ग्राम-भोजकों की जमीन पर प्राय:————द्वारा खेती की जाती थी।
   (ग) तमिल में हलवाहे को ———— कहते थे।
   (घ) अधिकाश गृहपति ———— भूस्वामी होते थे।

2. ग्राम-भोजकों के काम बताओ। वे शक्तिशाली क्यों थे?

3. गाँवो तथा शहरों दोनो मे रहने वाले शिल्पकारों की सूची बनाओ।

4. सही जवाब ढूँढो :

   (क) वलयकूप का उपयोग
   - नहाने के लिए
   - कपड़े धोने के लिए
   - सिंचाई के लिए
   - जल निकास के लिए किया जाता था।

   (ख) आहत सिक्के
   - चाँदी
   - सोना
   - टिन
   - हाथी दाँत के बने होते थे।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- उपमहाद्वीप मे लोहे के प्रयोग की शुरुआत (करीब 3000 साल पहले)
- लोहे के प्रयोग मे बढ़ोतरी, नगर, आहत सिक्के (करीब 2500 साल पहले)
- सगम साहित्य की रचना की शुरुआत (करीब 2300 साल पहले)
- अरिकामेडु का पत्तन (करीब 2200 तथा 1900 साल पहले)

(ग) मथुरा महत्वपूर्ण

- गाँव
- पत्तन
- धार्मिक केंद्र
- जंगल क्षेत्र था।

(घ) श्रेणी

- शासको
- शिल्पकारो
- कृषको
- पशुपालको का सघ होता था।

आओ चर्चा करें

5. पृष्ठ 87 पर दिखाए गए लोहे के औजारों मे कौन खेती के लिए महत्वपूर्ण होगे? अन्य औजार किस काम मे आते होगे?

6. अपने शहर की जल निकास व्यवस्था की तुलना तुम उन शहरो की व्यवस्था से करो, जिनके बारे मे तुमने पढ़ा है। इनमे तुम्हे क्या-क्या समानताएँ और अतर दिखाई दिए?

आओ करके देखें

7. अगर तुमने किसी शिल्पकार को काम करते हुए देखा है तो कुछ वाक्यो मे उसका वर्णन करो (सकेत : उन्हे कच्चा माल कहाँ से मिलता है, किस तरह के औजारो का प्रयोग करते है, तैयार माल का क्या होता है, आदि)

8. अपने शहर या गाँव के लोगों के कार्यों की एक सूची बनाओ। मथुरा में किए जाने वाले कार्यो से ये कितने समान और कितने भिन्न है?

अध्याय 10

व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री

बाज़ार में घूमती जगिनी

जगिनी अपने गाँव के मेले की आस लगाए बैठी थी। स्टील के चमकदार बर्तन, रंगबिरंगी प्लास्टिक की बाल्टियाँ, शोख रंगों के फूलों के प्रिंटो वाले कपड़े, चाबी से चलने वाले मजेदार खिलौने उसे बहुत अच्छे लगते थे। इन चीज़ों को बेचने वाले दुकानदार बसो और ट्रको पर आते थे और रात को अपना सामान समेटकर वापस चले जाते थे। जगिनी को हैरानी होती थी कि ये लोग हमेशा इस तरह क्यो घूमते रहते है। उसकी मां ने बताया कि वे लोग व्यापारी थे। वे चीज़ो को उन जगहों से खरीदते थे, जहाँ ये बनाए जाते थे और फिर उन्हे मेलो मे बेचते थे।

व्यापार और व्यापारियों के बारे में जानकारी

अध्याय 9 मे तुमने उत्तर के काले पॉलिश वाले बर्तनो के बारे मे पढ़ा है। ये खूबसूरत बर्तन, खास तौर से इनकी कटोरियाँ तथा थालियाँ, इस उपमहाद्वीप के अनेक पुरास्थलों से मिले हैं। सवाल उठता है कि इन जगहो पर ये बर्तन कैसे पहुँचे होगे? ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि जहाँ ये बनते थे, वहाँ से व्यापारी इन्हें ले जाकर अलग–अलग जगहो पर बेचते थे।

दक्षिण भारत सोना, मसाले, खास तौर पर काली मिर्च तथा कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। काली मिर्च की रोमन साम्राज्य में इतनी माँग थी कि इसे 'काले सोने' के नाम से बुलाते थे। व्यापारी इन सामानों को समुद्री जहाज़ो और सड़को के रास्ते रोम पहुँचाते थे। दक्षिण भारत मे ऐसे अनेक रोमन सोने के सिक्के मिले है। इससे यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि उन दिनों रोम के साथ बहुत अच्छा व्यापार चल रहा था।

क्या तुम बता सकती हो कि ये सिक्के भारत कैसे और क्यो पहुँचे होगे?

व्यापार से जुड़ी एक कविता

व्यापार के प्रमाण हमें संगम कविताओं में भी मिलते है।

नीचे लिखी कविता में पूर्वी समुद्र तट पर स्थित पुहार पत्तन पर लाए जाने वाले माल का वर्णन मिलता है।

"समुद्री जहाजो पर लाए गए तेज़ तर्रार घोड़े,
गाड़ियों पर काली मिर्च की गठरियाँ,
हिमालय से मिले रत्न और सोना
दक्षिण की पहाडियों से चदन की लकड़ियाँ
दक्षिणी-सागर के मोती और
पूर्वी-सागर के मूगे
गंगा और कावेरी की फ़सले
श्रीलका से आए खाद्यान्न,
म्यांमार के बने मिट्टी के बर्तन और दुर्लभ कीमती आयात।"

कविता में उल्लिखित चीजों की एक सूची बनाओ। क्या तुम बता सकते हो कि इन चीज़ो का उपयोग किसलिए किया जाता होगा?

व्यापारियों ने कई समुद्री रास्ते खोज निकाले। इनमे से कुछ समुद्र के किनारे चलते थे कुछ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी पार करते थे। नाविक मानसूनी हवा का फ़ायदा उठाकर अपनी यात्रा जल्दी पूरी कर लेते थे। वे अफ्रीका या अरब के पूर्वी तट से इस उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुँचना चाहते थे तो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के साथ चलना पसंद करते थे। इन लबी यात्राओ के लिए मजबूत जहाज़ो का निर्माण किया जाता था।

समुद्र तटों से लगे राज्य

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में बड़ा तटीय प्रदेश है। इनमें बहुत-से पहाड़, पठार और नदी के मैदान हैं। नदियों के मैदानी इलाकों मे कावेरी का मैदान सबसे उपजाऊ है। मैदानी इलाकों तथा तटीय इलाको के सरदारों और राजाओं के पास धीरे-धीरे काफी सम्पत्ति और शक्ति हो गई। संगम कविताओं में *मुवेन्दार* की चर्चा मिलती है। यह एक तमिल शब्द है, जिसका अर्थ तीन मुखिया है। इसका प्रयोग तीन शासक परिवारों के

मुखियाओं के लिए किया गया है। ये थे-चोल, चेर तथा पाड्य, (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) जो करीब 2300 साल पहले दक्षिण भारत में काफी शक्तिशाली माने जाते थे।

इन तीनों मुखियाओं के अपने दो-दो सत्ता केद्र थे। इनमे से एक तटीय हिस्से में और दूसरा अंदरूनी हिस्से में था। इस तरह छह केद्रो में से दो बहुत महत्वपूर्ण थे। एक चोलो का पत्तन पुहार या कावेरीपट्टिनम, दूसरा पांड्यो की राजधानी मदुरै।

ये मुखिया लोगों से नियमित कर के बजाय उपहारों की माँग करते थे। कभी-कभी ये सैनिक अभियानों पर भी निकल पड़ते थे और आस-पास के इलाकों से शुल्क वसूल कर लाते थे। इनमें से कुछ धन वे अपने पास रख लेते थे, बाकी अपने समर्थको, नाते-रिश्तेदारों, सिपाहियो तथा कवियो के बीच बाँट देते थे। अनेक संगम कवियों ने उन मुखियाओ की प्रशसा में कविताएँ लिखी है जो उन्हे कीमती जवाहरात, सोने, घोड़े, हाथी, रथ या सुदर कपड़े दिया करते थे।

इसके लगभग 200 वर्षों के बाद पश्चिम भारत (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) मे सातवाहन नामक राजवश का प्रभाव बढ़ गया। सातवाहनों का सबसे प्रमुख राजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी था। उसके बारे में हमें उसकी माँ, गौतमी बलश्री के एक अभिलेख से पता चलता है। वह और अन्य सभी सातवाहन शासक दक्षिणापथ के स्वामी कहे जाते थे। दक्षिणापथ का शाब्दिक अर्थ दक्षिण की ओर जाने वाला रास्ता होता है। पूरे दक्षिणी क्षेत्र के लिए भी यही नाम प्रचलित था। श्री सातकर्णी ने पूर्वी, पश्चिमी तथा दक्षिणी तटों पर अपनी सेनाएँ भेजीं।

क्या तुम बता सकती हो कि श्री सातकर्णी तटों पर नियंत्रण क्यो करना चाहता था?

रेशम मार्ग की कहानी

कीमती, चमकीले रंग और चिकनी, मुलायम बनावट की वजह से रेशमी कपड़े अधिकांश समाज में बहुमूल्य माने जाते है। रेशमी कपड़ा तैयार करना एक जटिल प्रक्रिया है। रेशम के कीड़े से कच्चा रेशम निकालकर, सूत कताई होती है, और फिर उससे कपड़ा बुना जाता है। *रेशम* बनाने की

तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7000 साल पहले हुआ। इस तकनीक को उन्होंने हज़ारो साल तक बाकी दुनिया से छुपाए रखा। पर चीन से पैदल, घोड़ो या ऊँटो पर कुछ लोग दूर-दूर की जगहो पर जाते थे और अपने साथ रेशमी कपड़े भी ले जाते थे। जिस रास्ते से ये लोग यात्रा करते थे वह रेशम मार्ग (सिल्क रूट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

कभी-कभी चीन के शासक ईरान और पश्चिमी एशिया के शासको को उपहार के तौर पर रेशमी कपडे भेजते थे। यहाँ से रेशम के बारे में जानकारी और भी पश्चिम की ओर फैल गई। करीब 2000 साल पहले रोम के शासको और धनी लोगो के बीच रेशमी कपड़े पहनना एक फ़ैशन बन गया। इसकी कीमत बहुत ही ज़्यादा होती थी। क्योकि चीन से इसे लाने मे दुर्गम पहाडी और रेगिस्तानी रास्तों से होकर जाना पड़ता था। यही नही, रास्ते के आस-पास रहने वाले लोग व्यापारियों से यात्रा-शुल्क भी माँगते थे।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) को देखो। इसमे सिल्क रूट तथा उसकी शाखाओ को दिखाया गया है। कुछ शासक इसके बड़े-बड़े हिस्सो पर अपना नियंत्रण करना चाहते थे क्योंकि इस रास्ते पर यात्रा कर रहे व्यापारियों से उन्हे कर, शुल्क तथा तोहफ़ो के जरिए लाभ मिलता था। इसके बदले, ये शासक इन व्यापारियो को अपने राज्य से गुज़रते वक्त लुटेरों के आक्रमणो से सुरक्षा देते थे।

सिल्क रूट पर नियत्रण रखने वाले शासको मे सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। करीब 2000 साल पहले मध्य-एशिया तथा पश्चिमोत्तर भारत पर इनका शासन था। पेशावर और मथुरा इनके दो मुख्य शक्तिशाली केंद्र थे। तक्षशिला भी इनके ही राज्य का हिस्सा था। इनके शासनकाल मे ही सिल्क रूट की एक शाखा मध्य-एशिया से होकर सिंधु नदी के मुहाने के पत्तनों तक जाती थी। फिर यहाँ से जहाजो द्वारा रेशम, पश्चिम की ओर रोमन साम्राज्य तक पहुँचता था। इस उपमहाद्वीप में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी करने वाले शासकों में कुषाण थे। सिल्क रूट पर यात्रा करने वाले व्यापारी इनका उपयोग किया करते थे।

सिल्क रूट पर गाड़ियों का उपयोग क्यों कठिन होता होगा?

चीन से समुद्र के रास्ते भी रेशम का निर्यात होता था। मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) में इसे ढूँढ़ो। समुद्र के रास्ते रेशम भेजने में क्या सुविधाएँ और क्या समस्याएँ आती होंगी?

बौद्ध धर्म का प्रसार

कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था। उसने करीब 1900 साल पहले शासन किया। उसने एक बौद्ध परिषद् का गठन किया, जिसमें एकत्र होकर विद्वान महत्वपूर्ण विषयो पर विचार-विमर्श करते थे। बुद्ध की जीवनी *बुद्धचरित* के रचनाकार कवि अश्वघोष, कनिष्क के दरबार में रहते थे। अश्वघोष तथा अन्य बौद्ध विद्वानो ने अब संस्कृत में लिखना शुरू कर दिया था।

इस समय बौद्ध धर्म की एक नई धारा *महायान* का विकास हुआ। इसकी दो मुख्य विशेषताएँ थी। पहले, मूर्तियों मे बुद्ध की उपस्थिति सिर्फ़ कुछ सकेतो के माध्यम से दर्शाई जाती थी। मिसाल के तौर पर उनकी निर्वाण प्राप्ति को पीपल के पेड़ की मूर्ति द्वारा दर्शाया जाता था पर अब बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाई जाने लगी। इनमे से अधिकांश मथुरा में, तो कुछ तक्षशिला में बनाई जाने लगी।

सॉची के स्तूप का एक मूर्ति चित्र।
यहॉ इस वृक्ष और उसके नीचे के खाली आसन को देखो। मूर्तिकारो ने यह बताने के लिए खुदाई करके यह मूर्ति बनाई कि बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर ध्यान करते हुए हुई।

दूसरा परिवर्तन *बोधिसत्त्व* मे आस्था को लेकर आया। बोधिसत्त्व उन्हे कहते है जो ज्ञान प्राप्ति के बाद एकात वास करते हुए ध्यान साधना कर सकते थे। लेकिन ऐसा करने के बजाए, वे लोगो को शिक्षा देने और मदद करने के लिए सासारिक परिवेश में ही रहना ठीक समझने लगे। धीरे-धीरे बोधिसत्त्व की पूजा काफी लोकप्रिय हो गई। और पूरे मध्य एशिया, चीन और बाद मे कोरिया तथा जापान तक भी फैल गई।

बौद्ध धर्म का प्रसार पश्चिमी और दक्षिणी भारत में हुआ, जहाँ बौद्ध भिक्खुओं के रहने के लिए पहाड़ो में दर्जनो गुफाएँ खोदी गई।

इनमे से कुछ गुफाएँ राजा और रानियों के आदेश पर बनाई गई तो कुछ व्यापारियों तथा कृषकों द्वारा। इनमें से ज्यादातर गुफाएँ पश्चिमी घाट के दर्रों के पास बनाई गई थीं। दक्कन के शहरो और तटों के समृद्ध बदरगाहों और इन्हें जोड़ने वाली सड़कें भी इन्हीं दर्रों से होकर गुजरती थीं। ऐसा लगता है कि यात्रा करने वाले व्यापारी इन गुफाओं वाले मठों मे विश्राम के लिए रुकते थे।

बाएँ: मथुरा में बनी बुद्ध की एक प्रतिमा का चित्र। दाएँ: तक्षशिला मे बनी बुद्ध की प्रतिमा का एक चित्र। इन चित्रो को देखकर बताओ कि इनके बीच क्या-क्या समानताएँ है और क्या-क्या भिन्नताएँ हैं?

बौद्ध धर्म दक्षिण-पूर्व की ओर श्रीलका, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया सहित दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य भागो मे भी फैला।

थेरवाद नामक बौद्ध धर्म का आरंभिक रूप इन क्षेत्रों मे कहीं अधिक प्रचलित था।

पृष्ठ 100 को एक बार फिर पढ़ो। क्या तुम बता सकती हो कि बौद्ध धर्म इन इलाको मे कैसे फैला होगा?

कार्ले की गुफा, महाराष्ट्र

तीर्थयात्रियों की जिज्ञासा

व्यापारी काफ़िलो में तथा जहाजों पर दूर-दूर जाया करते थे। बहुत-से *तीर्थयात्री* भी उनके साथ यात्रा पर निकल पड़ते थे।
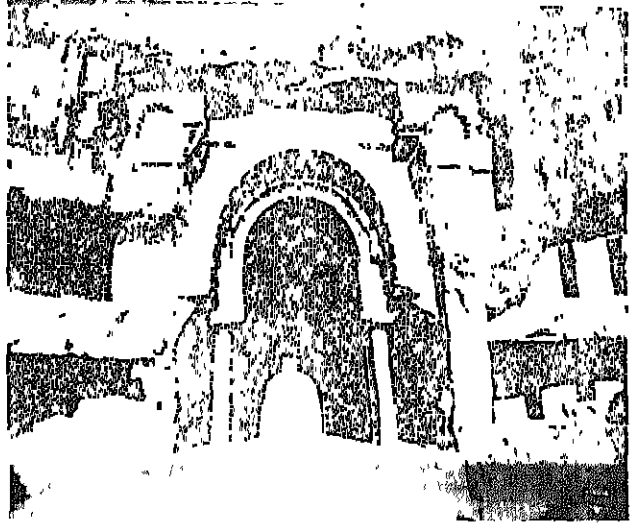
तीर्थयात्री

तीर्थयात्री वे स्त्री-पुरुष होते है, जो प्रार्थना के लिए पवित्र स्थानो की यात्रा किया करते है।

इसी तरह भारत की यात्रा पर आए चीनी बौद्ध तीर्थयात्री फा-शिएन काफी प्रसिद्ध है। वह करीब 1600 साल पहले आया। श्वैन त्सांग 1400 साल पहले भारत आया और उसके करीब 50 साल बाद इत्सिंग आया। वे सब बुद्ध (अध्याय 7) के जीवन से जुड़ी जगहों और प्रसिद्ध मठो को देखने के लिए भारत आए थे।

इनमे से प्रत्येक तीर्थयात्री ने अपनी यात्रा का वर्णन लिखा। इन्होंने अपनी यात्रा के दौरान आई मुश्किलो के बारे मे भी लिखा। इन यात्राओ मे कई वर्ष लग जाया करते थे। जिन देशो और मठों को उन्होंने देखा, उनके बारे में उन्होंने लिखा और उन किताबों के बारे में भी उन्होंने लिखा, जिन्हें वे अपने साथ ले गए थे।

फा-शिएन चीन वापस कैसे लौटा

फा-शिएन ने अपने घर चीन वापस लौटने के लिए अपनी यात्रा बगाल से शुरू की। वह व्यापारियो के एक जहाज पर चढ़ा। मुश्किल से वे दो दिन ही चल पाए थे कि एक समुद्री तूफ़ान मे फँस गए। व्यापारी अपने जहाज को डूबने से बचाने के लिए उसमे से अपने माल को फेककर जहाज को हल्का करने की कोशिश करने लगे। फा-शिएन ने भी अपने सामान को तो फेक दिया, पर अपनी उन पाण्डुलिपियो और बुद्ध की मूर्तियों को नही फेका, जिन्हें उसने अपनी भारत यात्रा के दौरान सकलित की थी। अतत: तेरह दिनो के बाद आँधी रुकी। उसने समुद्र का वर्णन इस प्रकार किया है :

'समुद्र असीम है – सूर्य, चाँद या तारो की गति को देखे बिना यह पता लगा पाना असभव है कि पूर्व किधर है, या पश्चिम किस दिशा मे है। अगर बरसात और अधेरा हो, तो जहाज को हवा की रुख मे ले जाने के अलावा और कोई चारा नहीं।'

जावा पहुँचने मे उसे 90 दिन से भी ज़्यादा लगे। वहाँ वह पाँच महीने के लिए रुका। इसके बाद दूसरे व्यापारी जहाज मे चढकर वह चीन पहुँचा।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) मे फा-शिएन द्वारा तय किए गए रास्ते को ढूँढो।

बताओ कि फा-शिएन अपनी पाण्डुलिपियो और मूर्तियों को क्यों नहीं फेंकना चाहता था।

श्वैन त्सांग भू-मार्ग से (उत्तर-पश्चिम और मध्य-एशिया होकर) चीन वापस लौटा। उसने सोने, चाँदी और चदन की लकड़ी की बनी बुद्ध की मूर्तियाँ तथा 600 से भी ज़्यादा पाण्डुलिपियाँ एकत्र की थीं। इन्हें वह 20 घोड़ो पर लादकर ले गया। पर इसमे से 50 पाण्डुलिपियाँ उस समय खो गई, जब सिधु नदी पार करते हुए उसकी नाव उलट गई। अपने जीवन का बाकी हिस्सा उसने बची हुई पाण्डुलिपियो का सस्कृत से चीनी अनुवाद करने मे लगा दिया।

नालंदा – शिक्षा का एक विशिष्ट केंद्र

श्वैन त्साग तथा अन्य तीर्थयात्रियो ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध बौद्ध विद्या केंद्र नालंदा (बिहार) में अध्ययन किया। उसने नालंदा के बारे में इस प्रकार लिखा है :

यहाँ के शिक्षक योग्यता तथा बुद्धि में सबसे आगे है। बुद्ध के उपदेशों का वह पूरी ईमानदारी से पालन करते हैं। मठ के नियम काफी सख्त है, जिन्हें सबको मानना पडता है। पूरे दिन वाद-विवाद चलते ही रहते हैं। जिससे युवा और वृद्ध दोनो ही एक-दूसरे की मदद करते हैं। विभिन्न शहरों से विद्वान लोग अपनी शंकाएँ दूर करने यहाँ आते हैं। नए आगन्तुकों से पहले द्वारपाल ही कठिन प्रश्न पूछते हैं। उन्हें अंदर जाने की अनुमति तभी मिलती है, जब वे द्वारपाल को सही उत्तर दे पाते है। दस में से सात-आठ सही उत्तर नही दे पाते है।

श्वैन त्सांग नालदा में क्यो पढ़ना चाहता था, कारण बताओ?

भक्ति की शुरुआत

इन्ही दिनों देवी-देवताओ की पूजा का चलन भी शुरू हुआ। बाद में हिन्दू धर्म की यह प्रमुख पहचान बन गई। इनमे शिव, विष्णु और दुर्गा जैसे देवी-देवता शामिल हैं।

इन देवी-देवताओ की पूजा *भक्ति* परम्परा के माध्यम से की जाती थी। भक्ति उस समय काफी लोकप्रिय परम्परा बन गई। किसी देवी या देवता के प्रति लगाव को ही भक्ति कहा जाता है। भक्ति का पथ सबके लिए खुला था, चाहे वह धनी हो या गरीब, ऊँची जाति का हो या नीची जाति का, स्त्री हो या पुरुष।

भक्ति मार्ग की चर्चा हिन्दुओ के पवित्र ग्रथ *भगवद्‌गीता* में की गई है। भगवद्‌गीता महाभारत (अध्याय 12 देखो) का एक हिस्सा है। इसमे भगवान कृष्ण अपने भक्त और मित्र अर्जुन को सभी धर्मो को छोड़कर उनकी शरण में आने का उपदेश देते है। क्योकि केवल कृष्ण ही अर्जुन को सारी बुराइयो से मुक्ति दिला सकते हैं। पूजा का यह रूप धीरे-धीरे देश के विभिन्न भागो मे फ़ैलने लगा।

भक्ति मार्ग अपनाने वाले लोग आडबर के साथ पूजा-पाठ करने के बजाए ईश्वर के प्रति लगन और व्यक्तिगत पूजा पर जोर देते थे।

भक्ति मार्ग अपनाने वालों का यह मानना है कि अगर अपने आराध्य देवी या देवता की सच्चे मन से पूजा की जाए, तो वह उसी रूप मे दर्शन देंगे, जिसमें भक्त उसे देखना चाहता है। इसलिए आराध्य देवी या देवता मानव के रूप में भी हो सकते है या फिर सिंह, पेड़ या अन्य किसी भी रूप में। जैसे-जैसे इस विचार को समाज द्वारा स्वीकृति मिलती गई, कलाकार, देवी-देवताओं की एक से बढ़कर एक खूबसूरत मूर्तियाँ तैयार करने लगे।

वराह के रूप मे विष्णु। एरण, मध्य प्रदेश की यह शानदार मूर्ति विष्णु के 'वराह' रूप की है। पुराणो (अध्याय 12) के अनुसार जल मे डूबी पृथ्वी को बचाने के लिए विष्णु ने वराह रूप धारण किया था। यहाँ पृथ्वी को एक स्त्री के रूप मे दर्शाया गया है।
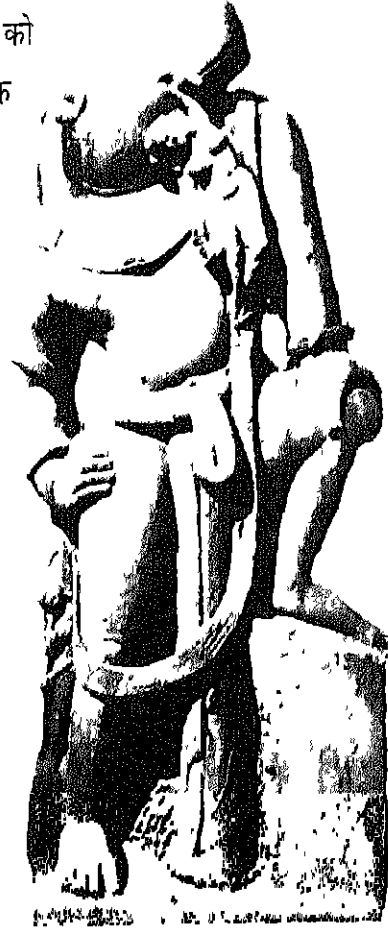
भक्ति

भक्ति भज् शब्द से बना है, जिसका अर्थ 'विभाजित करना या हिस्सेदारी' होता है। इसका अर्थ यह है कि भक्ति, भगवान और भक्त के बीच परस्पर एक अंतरंग सबध है। भक्ति, भगवत् या भगवान के प्रति झुकाव है। भगवत् का एक अर्थ यह भी है- जो अपने ऐश्वर्य तथा सुख को भक्तों के साथ बाँटता है। यानी भक्त या भागवत् अपने देवी-देवता के भग का हिस्सेदार होता है।

एक भक्त द्वारा लिखी गई एक कविता

अधिकांश भक्ति साहित्य हमे यही बताते हैं कि धन, ऐश्वर्य या ऊँचे पद के जरिए कभी ईश्वर से आत्मीयता नही बन सकती। करीब 1400 साल पहले शिवभक्त अप्पार द्वारा तमिल मे लिखी एक कविता का यह एक अश है। अप्पार एक वेल्लाल (अध्याय 9) था।

'नष्ट होते अगो वाला कुष्ठ रोगी
ब्राह्मणो की नजर में निचली जाति का व्यक्ति।
कूड़ा करकट बटोर कर अपनी जीविका चलाने वाला इंसान,
अगर ये लोग भी गगा को अपनी जटाओ में छिपा लेने वाले
शिव के दास बन जाएँ, तो मै उनकी आराधना करूँगा।
क्योंकि वे मेरे ईश्वर समान हैं।'

कवि सामाजिक प्रतिष्ठा और भक्ति मे किसको ज्यादा महत्व देते हैं?

देवी-देवताओं का विशेष सम्मान होता था। इसलिए विशेष जगहों पर ही इनकी मूर्तियो को रखा जाता था। इन स्थानों को ही मदिर कहते हैं। अध्याय 12 मे तुम इन मंदिरो के बारे मे पढ़ोगी।

भक्ति परम्परा ने चित्रकला, शिल्पकला और स्थापत्य कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की प्रेरणा दी है।

हिन्दू

'हिन्दू' शब्द 'इण्डिया' शब्द की तरह ही सिंधु या इण्डस से निकला है। यह शब्द अरबों तथा ईरानियो द्वारा उन लोगो के लिए उपयोग किया जाता था, जो सिंधु नदी के पूर्व में रहते थे। यही शब्द उनके धार्मिक विश्वास तथा सांस्कृतिक परम्पराओ के लिए भी प्रयुक्त होता था।

अन्यत्र

करीब 2000 साल पहले पश्चिमी एशिया मे ईसाई धर्म का उदय हुआ। ईसा मसीह का जन्म बेथलेहम मे हुआ, जो उस समय रोमन साम्राज्य का हिस्सा था। ईसा मसीह ने स्वय को इस संसार का उद्धारक बताया। उन्होने दूसरो को प्यार देने और उसी तरह दूसरो पर विश्वास करने का उपदेश दिया, जिस तरह हर व्यक्ति दूसरों से प्यार और विश्वास की उम्मीद करता है।

बाइबिल मे ईसा मसीह के उपदेश की बाते लिखी है। यहाँ इसका एक अश दिया गया है :

धन्य है वे लोग जो धर्म और न्याय के लिए भूखे प्यासे रहते है,
उनकी कामनाएँ पूरी होगी।
जो दयालु हैं, वे धन्य हैं, क्योंकि उन्हें दया मिलेगी।
धन्य है वे जो दिल से पवित्र है,
क्योकि वे ईश्वर के दर्शन कर सकेगे।
धन्य हैं वे जो शांति स्थापित करते है,
वही ईश्वर की सतान कहलाएँगे।

ईसा मसीह के उपदेश साधारण लोगों को बहुत पसंद आए और धीरे-धीरे यह पश्चिमी एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप में फैल गए। ईसा मसीह की मृत्यु के सौ सालो के अदर ही भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहले ईसाई धर्म प्रचारक, पश्चिमी एशिया से आए।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) देखो और पता लगाओ कि किस रास्ते से ईसाई धर्म प्रचारक भारत आए होंगे?

केरल के ईसाईयो को 'सिरियाई ईसाई' कहा जाता है क्योंकि संभवत: वे पश्चिम एशिया से आए थे, वे विश्व के सबसे पुराने ईसाईयो मे से हैं।

कल्पना करो

तुम्हारे पास कोई पाण्डुलिपि है, जिसे एक चीनी तीर्थयात्री अपने साथ ले जाना चाहता है। उसके साथ अपनी बातचीत का वर्णन करो।

उपयोगी शब्द

व्यापारी
मुवेन्दार
रास्ता या मार्ग
रेशम
कुषाण
महायान
बोधिसत्त्व
थेरवाद
तीर्थयात्री
भक्ति

आओ याद करें

1. निम्नलिखित के उपयुक्त जोड़े बनाओ

दक्षिणापथ के स्वामी	बुद्धचरित
मुवेन्दार	महायान बौद्ध धर्म
अश्वघोष	सातवाहन शासक
बोधिसत्त्व	चीनी यात्री
श्वैन त्साग	चोल, चेर, पाड्य

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- रेशम बनाने की कला की खोज (लगभग 7000 साल पहले)
- चोल, चेर तथा पाड्य (लगभग 2300 साल पूर्व)
- रोमन-साम्राज्य मे रेशम की बढती मांग (लगभग 2000 साल पहले)
- कुषाण शासक कनिष्क (लगभग 1900 साल पहले)
- फा-शिएन का भारत आगमन (लगभग 1600 वर्ष पहले)
- श्वैन त्साग की भारत यात्रा, अप्पार की शिव स्तुति की रचना (लगभग 1400 साल पहले)

2. राजा सिल्क रूट पर अपना नियत्रण क्यो कायम करना चाहते थे?

3. व्यापार तथा व्यापारिक रास्तो के बारे मे जानने के लिए इतिहासकार किन-किन साक्ष्यो का उपयोग करते है?

4. भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ क्या थी?

आओ चर्चा करें

5. चीनी तीर्थयात्री भारत क्यो आए? कारण बताओ।

6. साधारण लोगो का भक्ति के प्रति आकर्षित होने का कौन-सा कारण होता है?

आओ करके देखें

7. तुम बाजार से क्या-क्या सामान खरीदती हो उनकी एक सूची बनाओ। बताओ कि तुम जिस शहर या गॉव मे रहती हो, वहॉ इनमे से कौन-कौन सी चीजें बनी थीं और किन चीजो को व्यापारी बाहर से लाए थे?

8. आज भारत मे लोग बहुत तीर्थयात्राएँ करते है। उनमे से एक के विषय मे पता करो और एक सक्षिप्त विवरण दो। (सकेत : तीर्थयात्रा मे स्त्री, पुरुष या बच्चो मे से कौन जा सकते है? इसमें कितना वक्त लगता है? लोग किस तरह यात्रा करते है? वे अपनी यात्रा के दौरान क्या-क्या ले जाते है? तीर्थ स्थानों पर पहुँचकर वे क्या करते है? क्या वे वापस आते समय कुछ लाते है?)

अध्याय 11

नए साम्राज्य और राज्य

अरविन्द राजा बना

अरविन्द अपने स्कूल में खेले जाने वाले नाटक मे राजा की भूमिका अदा करने के लिए चुना गया। उसने सोचा था कि वह शाही वेशभूषा में, मूँछो पर ताव देते हुए, रूपहले कागज़ में लिपटी तलवार को शान से पकड़कर चहलकदमी करेगा। जरा सोचो, उसे कितनी हैरानी हुई जब उसे बताया गया कि उसे बैठकर वीणा भी बजानी होगी और कविता पाठ भी करना होगा। एक सगीतज्ञ राजा? कौन हो सकता है वह? अरविन्द सोचने लगा।

क्या बताती हैं प्रशस्तियाँ

दरअसल अरविन्द गुप्तवंश के प्रसिद्ध राजा समुद्रगुप्त की भूमिका अदा करने जा रहा था। समुद्रगुप्त के बारे में हमे एक लंबे अभिलेख से पता चलता है। वास्तव में यह उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा सस्कृत में लिखी एक कविता है। इसे करीब 1700 साल पहले लिखा गया। इलाहाबाद में अशोक-स्तम्भ पर इसकी खुदाई की गई थी।

यह एक विशेष किस्म का अभिलेख है, जिसे *प्रशस्ति* कहते है। यह एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ 'प्रशसा' होता है। प्रशस्तियाँ लिखने का प्रचलन पहले भी था। जैसे तुमने अध्याय 10 में गौतमी-पुत्र श्री सातकर्णी की प्रशस्ति के बारे मे पढ़ा। परन्तु गुप्तकाल मे इनका महत्त्व और बढ़ गया।

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

आओ देखें, समुद्रगुप्त की प्रशस्ति हमे क्या बताती है। कवि ने इसमें राजा की एक योद्धा, युद्धो को जीतने वाले राजा, विद्वान तथा एक उत्कृष्ट कवि के रूप में भरपूर प्रशंसा की है। यहाँ तक कि उसे ईश्वर के बराबर बताया गया है। प्रशस्ति में लबे-लबे वाक्य दिए गए हैं। यहाँ वैसे ही एक वाक्य का अश दिया गया है:

योद्धा समुद्रगुप्त

जिनका शरीर युद्ध मैदान में कुठारो, कुल्हाड़ियों, तीरो, भालो, बर्छो, तलवारों, लोहे की गदाओ, नुकीले तीरो तथा अन्य सैकड़ो हथियारो से लगे घावो के दाग से भरे होने के कारण अत्यंत सुदर दिखता है।

यह वर्णन तुम्हे उस राजा के बारे में क्या बताता है? राजा किस प्रकार युद्ध लडते थे?

वीणा बजाने वाला राजा। समुद्रगुप्त के कुछ अन्य गुणो को सिक्को पर दिखाया गया है जैसे इस सिक्के मे उन्हे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

अगर तुम मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) को गौर से देखो तो पाओगे कि एक क्षेत्र को हरे रग से रंगा गया है। तुम्हे पूर्वी समुद्र तट के साथ-साथ एक क्रम मे लाल बिंदु दिखेंगे। उसी तरह कुछ क्षेत्र बैगनी और नीले रंग के भी मिलेगे।

यह मानचित्र इस प्रशस्ति मे प्राप्त जानकारियों के आधार पर बनाया गया है। हरिषेण चार विभिन्न प्रकार के राजाओ और उनके प्रति समुद्रगुप्त की नीतियो का वर्णन करते है।

1. मानचित्र मे हरे रग का क्षेत्र *आर्यवर्त्त* के उन नौ शासको का है, जिन्हे समुद्रगुप्त ने हराकर उनके राज्यो को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

2. इसके बाद *दक्षिणापथ* के बारह शासक आते है। इनमें से कुछ की राजधानियो को दिखाने के लिए मानचित्र पर लाल बिंदु दिए गए है। इन सब ने हार जाने पर समुद्रगुप्त के सामने समर्पण किया था। समुद्रगुप्त ने उन्हें फिर से शासन करने की अनुमति दे दी।

3. पडोसी देशो का आतरिक घेरा बैगनी रग से रगा गया है। इसमे असम, तटीय बंगाल, नेपाल और उत्तर-पश्चिम के कई गण या संघ (अध्याय 6 याद करो) आते थे। ये समुद्रगुप्त के लिए उपहार लाते थे, उनकी आज्ञाओ का पालन करते थे तथा उनके दरबार में उपस्थित हुआ करते थे।

4. बाह्य इलाके के शासक, जिन्हें नीले रग से रंगा गया है संभवत: कुषाण तथा शक वंश के थे। इसमें श्रीलंका के शासक भी थे। इन्होने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्रियो का विवाह उससे किया।

मानचित्र मे प्रयाग (इलाहाबाद का पुराना नाम), उज्जैन तथा पाटलिपुत्र (पटना) ढूँढ़ो। ये गुप्त शासन के महत्वपूर्ण केंद्र थे।

आर्यावर्त्त तथा दक्षिणापथ के राज्यों के साथ समुद्रगुप्त के व्यवहार में क्या अतर था?

क्या इस अंतर के पीछे तुम्हे कोई कारण दिखाई देता है?
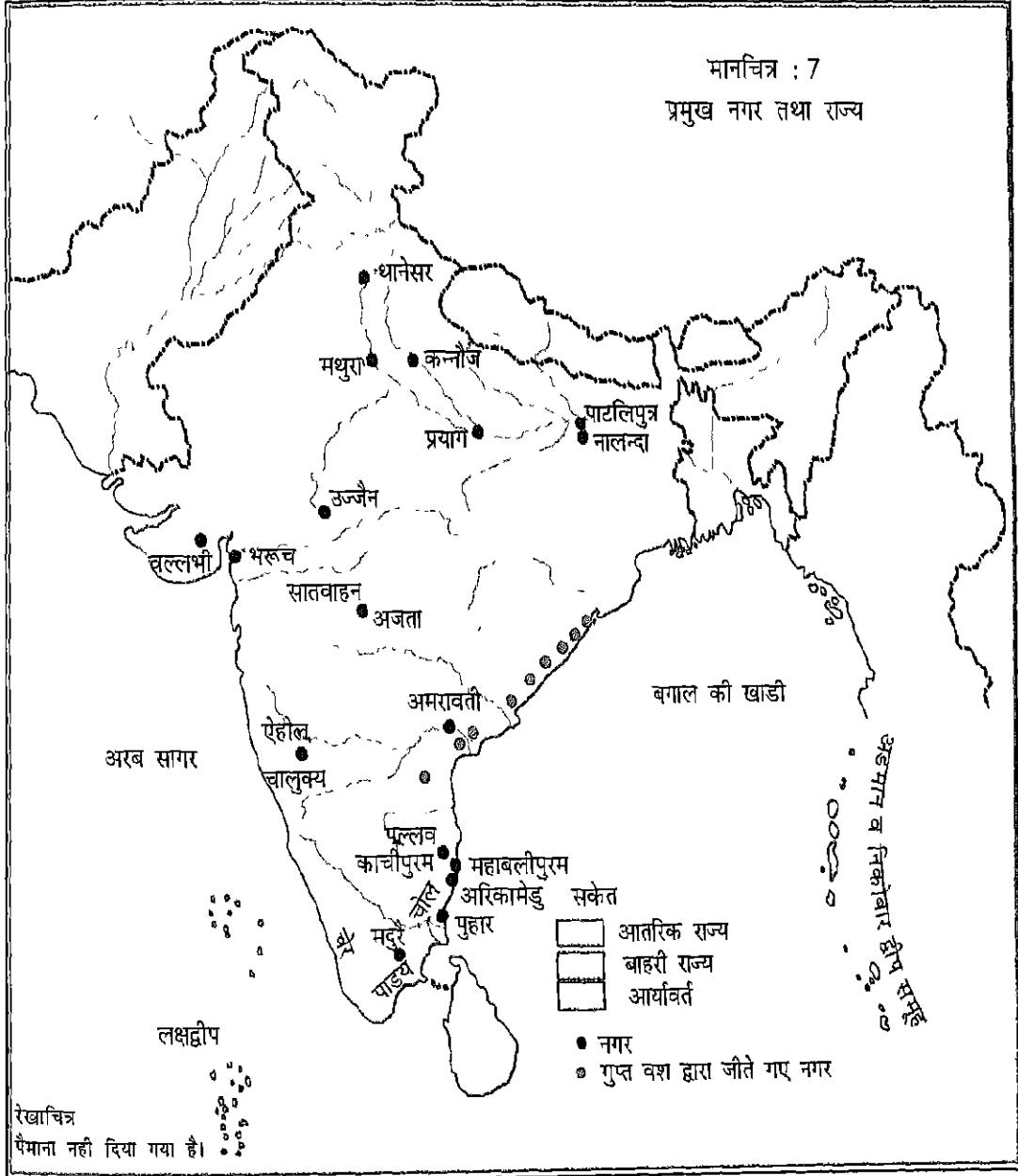
वंशावलियाँ

अधिकांश प्रशस्तियाँ शासको के पूर्वजो के बारे मे भी बताती हैं। यह प्रशस्ति भी समुद्रगुप्त के प्रपितामह, पितामह यानी कि परदादा, दादा, पिता और माता के बारे मे बताती है। उनकी माँ कुमार देवी, लिच्छवि गण की थी और पिता चन्द्रगुप्त गुप्तवश के पहले शासक थे, जिन्होने महाराजाधिराज जैसी बड़ी उपाधि धारण की। समुद्रगुप्त ने भी यह उपाधि धारण की। उनके दादा और परदादा का महाराजा के रूप मे ही उल्लेख है। इससे यह आभास मिलता है कि धीरे-धीरे इस वंश का महत्त्व बढ़ता गया।

इन उपाधियों को महत्त्व के हिसाब से सजाओ। राजा, महाराज-अधिराज, महा-राजा।

समुद्रगुप्त के बारे मे हमे उनके बाद के शासकों, जैसे उनके बेटे चन्द्रगुप्त द्वितीय की *वंशावली* (पूर्वजो की सूची) से भी जानकारी मिलती है। उनके बारे मे अभिलेखों तथा सिक्को से पता चलता है। उन्होंने पश्चिम भारत मे सैन्य अभियान में अंतिम शक शासक को परास्त किया। बाद में ऐसा विश्वास किया जाने लगा कि उनका दरबार विद्वानो से भरा था। कवि कालिदास और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट उनके दरबार मे थे। इनके विषय में और जानकारी अध्याय 12 मे मिलेगी।

हर्षवर्धन तथा हर्षचरित

जिस तरह गुप्त वश के शासकों के बारे मे अभिलेखों तथा सिक्को से पता चलता है, उसी तरह कुछ अन्य शासकों के बारे में उनकी जीवनी से पता चलता है। ऐसे ही एक राजा हर्षवर्धन थे, जिन्होंने करीब 1400 साल पहले शासन किया। उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत मे उनकी जीवनी *हर्षचरित* लिखी है। इसमे हर्षवर्धन की वशावली देते हुए उनके राजा बनने तक का वर्णन है। चीनी तीर्थयात्री श्वैन त्सांग, जिनके बारे में तुमने अध्याय 10 में पढ़ा है, काफी समय के लिए हर्ष के दरबार में रहे। उन्होने वहाँ जो कुछ देखा, उसका विस्तृत विवरण दिया है।

के सबसे बड़े बेटे नही थे पर अपने पिता और बड़े
ने पर थानेसर के राजा बने। उनके बहनोई कन्नौज
3) के शासक थे। जब बंगाल के शासक ने उन्हे मार
न्नौज को अपने अधीन कर लिया और बगाल पर

को जीतकर उन्हें पूर्व मे जितनी सफलता मिली थी,
जगहो पर नहीं मिली। जब उन्होंने नर्मदा नदी को पार
र आगे बढ़ने की कोशिश की तब चालुक्य नरेश,
उन्हें रोक दिया।

5 136) देखो और सूची बनाओ कि जब हर्षवर्धन
त्र) नर्मदा तक गए होंगे तो आज के किन-किन राज्यों

और पुलकेशिन द्वितीय की प्रशस्तियाँ

और चालुक्य दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण राजवश
उनकी राजधानी काँचीपुरम के आस-पास के क्षेत्रों से
क डेल्टा तक फैला था, जबकि चालुक्यों का राज्य
नदियो के बीच स्थित था।

धानी ऐहोल थी। यह एक प्रमुख व्यापारिक केद्र था
13)। धीरे-धीरे यह एक धार्मिक केंद्र भी बन गया
पल्लव और चालुक्य एक-दूसरे की सीमाओ का
मुख्य रूप से राजधानियों को निशाना बनाया जाता था

सबसे प्रसिद्ध चालुक्य राजा थे। उनके बारे मे हमे
रविकीर्ति द्वारा रचित प्रशस्ति से पता चलता है। इसमें
र से पिछली चार पीढ़ियों के बारे में बताया गया है।
ो अपने चाचा से यह राज्य मिला था।

रविकीर्ति के अनुसार उन्होने पूर्व तथा पश्चिम दोनों समुद्रतटीय इलाकों मे अपने अभियान चलाए। इसके अतिरिक्त उन्होने हर्ष को भी आगे बढ़ने से रोका। हर्ष का अर्थ 'आनद' होता है। कवि का कहना है कि इस पराजय के बाद हर्ष अब 'हर्ष' नही रहा। पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लव राजा के ऊपर भी आक्रमण किया, जिसे काँचीपुरम की दीवार के पीछे शरण लेनी पड़ी।

पर चालुक्यों की विजय अल्पकालीन थी। लड़ाई से दोनों वश दुर्बल होते गए। पल्लवो और चालुक्यों को अन्ततः राष्ट्रकूट तथा चोलवशों ने समाप्त कर दिया। इनके बारे मे तुम कक्षा सात मे पढ़ोगे।

वे कौन-से अन्य शासक थे जो तटो पर अपना नियंत्रण करना चाहते थे? (अध्याय 10 देखो)

इन राज्यों का प्रशासन कैसे चलता था?

पहले के राजाओ की तरह इन राजाओं के लिए भूमि कर सबसे महत्वपूर्ण बना रहा।

प्रशासन की प्राथमिक इकाई गाँव होते थे। लेकिन धीरे-धीरे कई नए बदलाव आए। राजाओं ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक या सैन्य शक्ति रखने वाले लोगों का समर्थन जुटाने के लिए कई कदम उठाए। उदाहरण के तौर पर :

- कुछ महत्वपूर्ण प्रशासकीय पद *आनुवंशिक* बन गए अर्थात् बेटे अपने पिता का पद पाते थे जैसे कि कवि हरिषेण अपने पिता की तरह महादडनायक अर्थात् मुख्य न्याय अधिकारी थे।
- कभी-कभी, एक ही व्यक्ति कई पदो पर कार्य करता था जैसे कि हरिषेण एक महादडनायक होने के साथ-साथ कुमारामात्य अर्थात् एक महत्वपूर्ण मंत्री तथा एक सधि-विग्रहिक अर्थात् युद्ध और शाति के विषयो का भी मंत्री था।
- सभवतः वहॉ के स्थानीय प्रशासन मे प्रमुख व्यक्तियों का बहुत बोलबाला था। इनमे नगर-श्रेष्ठी यानी मुख्य बैंकर या शहर का व्यापारी, सार्थवाह यानी व्यापारियों के काफ़िले का नेता, प्रथम-कुलिक अर्थात् मुख्य शिल्पकार तथा कायस्थो यानी लिपिको के प्रधान जैसे लोग होते थे।

इस तरह की नीतियाँ कुछ हद तक प्रभावशाली होती थी, पर समय के साथ-साथ इनमें से कुछ व्यक्ति इतने अधिक शक्तिशाली हो जाते थे कि अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेते थे।

सोचकर बताओ कि अफसरों का पद आनुवंशिक कर देने से क्या क्या फायदे और क्या क्या नुकसान हो सकते थे?

एक नए प्रकार की सेना

कुछ राजा अभी भी पुराने राजाओं की तरह एक सुसगठित सेना रखते थे, जिसमे हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल सिपाही होते थे पर इसके साथ-साथ कुछ सेनानायक भी होते थे, जो आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनिक सहायता दिया करते थे। इन सेनानायको को कोई नियमित वेतन नही दिया जाता था। बदले में इनमे से कुछ को भूमिदान दिया जाता था। दी गई भूमि से ये कर वसूलते थे जिससे वे सेना तथा घोड़ो की देखभाल करते थे। साथ ही वे इससे युद्ध के लिए हथियार जुटाते थे। इस तरह के व्यक्ति *सामंत* कहलाते थे। जहाँ कही भी शासक दुर्बल होते थे, ये सामत स्वतंत्र होने की कोशिश करते थे।

दक्षिण के राज्यों में सभाएँ

पल्लवों के अभिलेखो में कई स्थानीय सभाओं की चर्चा है। इनमे से एक था ब्राह्मण भूस्वामियों का संगठन जिसे *सभा* कहते थे। ये सभाएँ उप-समितियों के जरिए सिचाई, खेतीबाड़ी से जुड़े विभिन्न काम, सड़क निर्माण, स्थानीय मदिरो की देखरेख आदि का काम करती थी। जिन इलाकों के भूस्वामी ब्राह्मण नहीं थे वहाँ उर नामक ग्राम सभा के होने की बात कही गई है। *नगरम* व्यापारियो के एक सगठन का नाम था। संभवत: इन सभाओ पर धनी तथा शक्तिशाली भूस्वामियों और व्यापारियों का नियत्रण था। इनमें से बहुत-सी स्थानीय सभाएँ शताब्दियों तक काम करती रही।

उस ज़माने में आम लोग

जनसाधारण के जीवन की थोड़ी बहुत झलक हमे नाटकों तथा कुछ अन्य स्रोतो से मिलती है। चलो, इसके कुछ उदाहरण देखते हैं।

कालिदास अपने नाटकों मे राज-दरबार के जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इन नाटको में एक रोचक बात यह है कि राजा और अधिकाश ब्राह्मणो को संस्कृत बोलते हुए दिखाया गया है जबकि अन्य लोग तथा महिलाएँ प्राकृत बोलते हुए दिखाए गए हैं। उनका सबसे प्रसिद्ध नाटक *अभिज्ञान-शाकुन्तलम्* दुष्यत नामक एक राजा और शकुन्तला नाम की एक युवती की प्रेम कहानी है। इस नाटक में एक गरीब मछुआरे के साथ राजकर्मचारियो के दुर्व्यवहार की बात कही गई है।

एक मछुआरे को एक अंगूठी मिली

एक मछुआरे को एक कीमती अंगूठी मिली। यह अंगूठी राजा ने शकुन्तला को भेट की थी, पर दुर्घटनावश उसे एक मछली निगल गई। जब मछुआरा इस अगूठी को लेकर राजमहल पहुँचा तो द्वारपाल ने उस पर चोरी का आरोप लगाया और मुख्य पुलिस अधिकारी भी बहुत बुरी तरह से पेश आया। राजा उस अगूठी को देखकर बहुत खुश हुए और उन्होने मछुआरे को इनाम दिया। पुलिसवाला और द्वारपाल मछुआरे से इनाम का कुछ हिस्सा हड़पने के लिए उसके साथ शराबखाने चल पड़े।

आज अगर किसी गरीब आदमी को कुछ मिलता है और वह पुलिस में खबर करता है तो क्या उसके साथ इसी तरह का बर्ताव किया जाएगा?

एक प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम बताओ, जिसने प्राकृत मे उपदेश दिए और एक राजा का नाम बताओ, जिसने प्राकृत में अपने अभिलेख लिखवाए। (अध्याय 7 तथा 8 देखो।)

चीनी तीर्थयात्री फा-शिएन का ध्यान उन लोगों की दुर्गति पर भी गया, जिन्हें ऊँचे और शक्तिशाली लोग अछूत मानते थे। इन्हें शहरो के बाहर रहना पड़ता था। वे लिखते हैं - "अगर इन लोगों को शहर या बाज़ार के भीतर आना होता था तो सभी को आगाह करने के लिए ये लकड़ी के एक टुकड़े पर चोट करते रहते थे। यह आवाज़ सुनकर लोग सतर्क होकर अपने को, छू जाने से या किसी भी प्रकार के सपर्क से बचाते थे।"

एक जगह बाणभट्ट द्वारा अभियान पर निकली राजा की सेना का बड़ा सजीव चित्रण किया गया है।

राजा की सेना

राजा बड़ी मात्रा में साज़ो-सामान लेकर यात्रा करते थे। इनमें हथियारो के अतिरिक्त, रोज़मर्रा के उपयोग में आने वाली चीजें, जैसे बर्तन, असबाब (जिसमे सोने के पायदान भी शामिल थे), खाने-पीने का सामान (बकरी, हिरण, खरगोश, सब्ज़ियाँ, मसाले) आदि, विभिन्न प्रकार की चीजें शामिल होती थी। ये सारी चीजे ठेलेगाडियो पर या ऊँटो तथा हाथियो जैसे सामान ढोने वाले जानवरो की पीठ पर लादकर ले जायी जाती थी। इस विशाल सेना के साथ-साथ संगीतकार नगाड़े, बिगुल तथा तुरही बजाते हुए चलते रहते थे।

रास्ते मे पडने वाले गाँव वालो को उनका सत्कार करना पड़ता था। वे दही, गुड तथा फूलो का उपहार लाते थे तथा जानवरों को चारा भी देते थे। वे राजा से भी मिलना चाहते थे, ताकि अपनी शिकायत या कोई अनुरोध उनके सामने रख सकें।

पर ये सेनाएँ अपने पीछे विनाश और विध्वंस की निशानी छोड़ जाती थी। अक्सर गॉव वालो की झोपड़ियाँ हाथी कुचल डालते थे और व्यापारियों के काफ़िलों मे जुते बैल, इस हलचल भरे माहौल से डरकर भाग खड़े होते थे। बाणभट्ट लिखते हैं - "पूरी दुनिया धूल के गर्त मे डूब जाती थी।"

सेना के साथ ले जाई जाने वाली चीजों की सूची बनाओ।

ग्रामवासी राजा के लिए क्या क्या लेकर आते थे?

अन्यत्र

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) मे अरब ढूँढ़ो। मरुभूमि होते हुए भी सदियों से अरब, यातायात का एक बड़ा केंद्र था। दरअसल, अरब व्यापारी तथा नाविकों ने भारत और यूरोप (देखो पृष्ठ स. 100) के बीच समुद्री व्यापार बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अरब मे रहने वाले अन्य लोगो मे बेदुइन थे, जो घुमक्कड़ कबीले होते थे। ये मुख्य रूप से ऊँटो पर आश्रित होते थे, क्योंकि यह एक ऐसा मज़बूत जानवर है, जो मरुभूमि में भी स्वस्थ रह सकता है।

लगभग 1400 साल पहले पैगम्बर मुहम्मद ने अरब मे इस्लाम नामक एक नए धर्म की शुरुआत की। ईसाई धर्म की तरह इस्लाम ने भी अल्लाह को सर्वोपरि माना है, उनके बाद सभी को समान माना गया है। यहाँ इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रंथ *कुरान* का एक अश दिया गया है :

"मुसलमान स्त्रियो और पुरुषों के लिए, विश्वास रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए, भक्त स्त्रियों और पुरुषो के लिए, सच्चे स्त्रियों और पुरुषो के लिए, धैर्यवान और स्थिर मन के स्त्रियों और पुरुषो के लिए, दान देने वाले स्त्रियो और पुरुषो के लिए, उपवास रखने वाले स्त्रियो और पुरुषो के लिए, अपनी पवित्रता बनाए रखने वाले स्त्रियों और पुरुषो के लिए, अल्लाह को हमेशा याद करने वाले स्त्रियों और पुरुषो के लिए- अल्लाह ने इन सब के लिए ही क्षमा और पुरस्कार रखा है।" अगले सौ सालो के दौरान इस्लाम उत्तरी अफ्रीका, स्पेन, ईरान और भारत मे फैल गया। अरब नाविक, जो इस उपमहाद्वीप की तटीय बस्तियों से पहले से ही परिचित थे, अब अपने साथ इस नए धर्म को भी ले आए। अरब के सिपाहियों ने करीब 1300 साल पहले सिंध (आज के पाकिस्तान में) को जीत लिया था।

मानचित्र 6 म उन रास्तो को ढूंढो जिनसे नाविक तथा सिपाही इस उपमहाद्वीप मे आए होंगे।

उपयोगी शब्द

प्रशस्ति
आर्यावर्त्त
दक्षिणापथ
वशावली
आनुवशिक पदाधिकारी
सामंत
सभा
नगरम

कल्पना करो

[illegible] की सेना अगले हफ्ते तुम्हारे गाँव आने वाली है। [illegible] लिए तैयारी कर रहे है। वर्णन करो कि वे क्या-क्या [illegible] रहे हो।

आओ याद करें

1. सही या गलत बताओ:

(क) हरिषेण ने गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी की प्रशंसा मे प्रशस्ति लिखी।

(ख) आर्यावर्त्त के शासक समुद्रगुप्त के लिए भेंट लाते थे।

(ग) दक्षिणापथ में बारह शासक थे।

(घ) गुप्त शासकों के नियंत्रण में दो महत्वपूर्ण केन्द्र तक्षशिला और मदुरै थे।

(ड) ऐहोल पल्लवो की राजधानी थी।

(च) दक्षिण भारत में स्थानीय सभाएँ सदियों तक काम करती रही।

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- गुप्त वश की शुरुआत (1700 साल पहले)
- हर्षवर्धन का शासन (1400 साल पहले)

2. ऐसे तीन लेखकों के नाम बताओ, जिन्होंने हर्षवर्धन के बारे में लिखा।

3. इस युग में सैन्य संगठन मे क्या बदलाव आए?

4. इस काल की प्रशासनिक व्यवस्था में तुम्हें क्या-क्या नई चीज़े दिखती हैं?

आओ चर्चा करें

5. तुम्हें क्या लगता है कि समुद्रगुप्त की भूमिका अदा करने के लिए अरविन्द को क्या-क्या करना पडेगा?

6. क्या प्रशस्तियों को पढ़कर आम लोग समझ लेते होंगे? अपने उत्तर के कारण बताओ।

आओ करके देखें

7. अगर तुम्हे अपनी वशावली बनानी हो, तो तुम उसमे किन लोगो को शामिल करोगे? कितनी पीढियो को तुम इसमे शामिल करना चाहोगे? एक चार्ट बनाओ और उसे भरो।

8. आज युद्ध का असर जनसाधारण पर किस तरह पड़ता है?
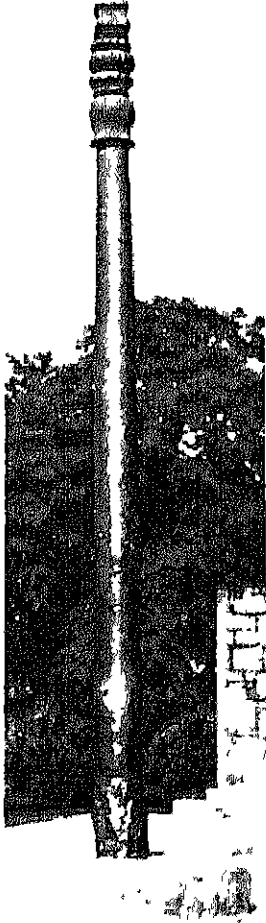
मरुतसामि और लौह स्तंभ

मरुतसामि आज बहुत खुश था। पहिएदार कुर्सी मे बिठाकर उसका भाई उसे कुतुबमीनार दिखाता हुआ प्रसिद्ध लौह स्तभ के सामने ले आया। धूल भरे, पथरीले रास्तों से रैम्प के सहारे यहाँ तक आना काफी मुश्किल था। अपने इस अनुभव को मरुतसामि कभी नही भूल पाएगा।

लौह-स्तभ

लौह स्तंभ

महरौली (दिल्ली) में कुतुबमीनार के परिसर में खड़ा यह लौह स्तंभ भारतीय शिल्पकारों की कुशलता का एक अद्‌भुत उदाहरण है। इसकी ऊँचाई 7.2 मीटर और वज़न 3 टन से भी ज़्यादा है। इसका निर्माण लगभग 1500 साल पहले हुआ। इसके बनने के समय की जानकारी हमे इस पर खुदे अभिलेख से मिलती है। इसमें 'चन्द्र' नाम के एक शासक का ज़िक्र है जो सभवतः गुप्त वश (अध्याय 11) के थे। आश्चर्य की बात यह है कि इतने वर्षो के बाद भी इसमे जंग नही लगा है।

ईंटों और पत्थरों की इमारतें

हमारे शिल्पकारो की कुशलता के नमूने स्तूपों जैसी कुछ इमारतो में देखने को मिलते हैं। स्तूप का शाब्दिक अर्थ *टीला* होता है हालांकि स्तूप विभिन्न आकार के थे - कभी गोल या लंबे तो कभी बड़े या छोटे। उन सब में एक समानता है। प्रायः सभी स्तूपों के भीतर एक छोटा-सा डिब्बा रखा रहता है। इन डिब्बों मे बुद्ध या उनके अनुयायियों के शरीर के अवशेष (जैसे दाँत, हड्डी या राख) या उनके द्वारा प्रयुक्त कोई चीज़ या कोई कीमती पत्थर अथवा सिक्के रखे रहते है।

इसे धातु-मंजूषा कहते है। प्रारभिक स्तूप, धातु-मंजूषा के ऊपर रखा मिट्टी का टीला होता था। बाद मे टीले को ईटो से ढक दिया गया और बाद के काल मे उस गुम्बदनुमा ढाँचे को तराशे हुए पत्थरों से ढक दिया गया।

प्राय: स्तूपों के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए एक वृत्ताकार पथ बना होता था, जिसे *प्रदक्षिणा पथ* कहते है। इस रास्ते को रेलिंग से घेर दिया जाता था जिसे वेदिका कहते हैं। वेदिका में प्रवेशद्वार बने होते थे। रेलिंग तथा तोरण प्राय: मूर्तिकला की सुंदर कलाकृतियों से सजे होते थे।

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) मे अमरावती ढूँढ़ो। यहाँ कभी एक भव्य स्तूप हुआ करता था। लगभग 2000 साल पहले इस स्तूप को सजाने के लिए शिलाओं पर चित्र उकेरे गए।

ऊपर: साँची का महान स्तूप (मध्य प्रदेश)।
इस तरह के स्तूपो का निर्माण कई सौ सालो तक चलता रहा। इस स्तूप में ईंटो का प्रयोग सभवत: अशोक (अध्याय 8) के जमाने का है, जबकि रेलिंग और प्रवेशद्वार बाद के शासको के काल मे जोड़े गए।

बाएँ: अमरावती की एक शिल्पकृति।
इस चित्र को देखकर इसका वर्णन करो।

कई बार पहाड़ियों को काट कर बनावटी गुफाएँ बनाई जाती थीं। इस तरह की कई गुफाओ को मूर्त्तियों तथा चित्रों द्वारा सजाया जाता था।

इस काल मे कुछ आरंभिक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण किया गया। इन मंदिरों में विष्णु, शिव तथा दुर्गा जैसे देवी-देवताओं की पूजा होती थी। मंदिरों का सबसे महत्वपूर्ण भाग *गर्भगृह* होता था, जहाँ मुख्य देवी या देवता की मूर्ति को रखा जाता था। इसी स्थान पर पुरोहित धार्मिक अनुष्ठान करते थे और भक्त पूजा करते थे। अक्सर गर्भगृह को एक पवित्र स्थान के रूप में दिखाने के लिए, भितरगाँव जैसे मंदिरों में उसके ऊपर काफी ऊँचाई तक निर्माण किया जाता था, जिसे शिखर कहते थे। शिखर निर्माण के कठिन कार्य के लिए सावधानी
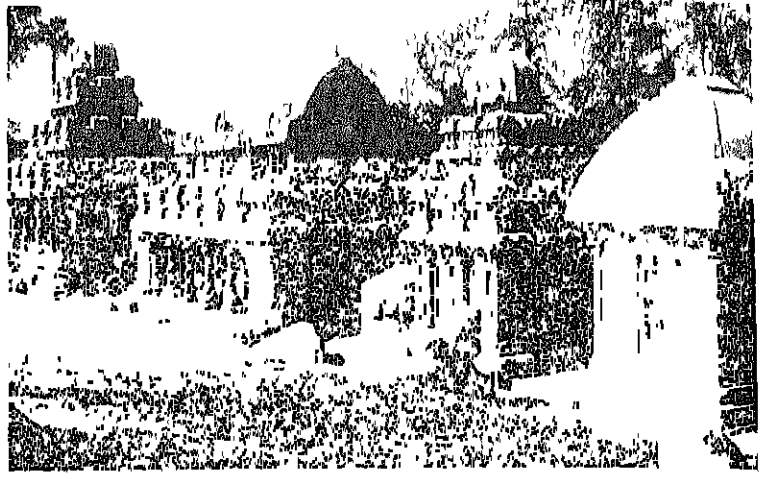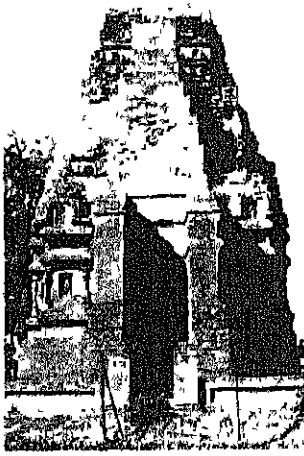
बाएँ ऊपर: उत्तर प्रदेश के भितरगाँव का एक आरंभिक मंदिर। यह लगभग 1500 साल पहले पकी ईंट और पत्थरों से बनाया गया था।

दाएँ ऊपर: महाबलिपुरम के एकाश्मिक मंदिर।

इनमें से प्रत्येक मंदिर एक ही विशाल पहाड़ी को तराश कर बनाया गया है। इसीलिए इन्हे एकाश्म (monolith) कहा गया है। ईंटो से बनाए जाने वाले मंदिरो से यह बिल्कुल भिन्न होते थे। ईंट से बनी इमारतों मे नीचे से ईंटो की एक-एक तह जोड़ते हुए उसे ऊपर की ओर ले जाते है, जबकि चट्टान तराश कर बनाए जाने वाले मंदिरो को पत्थर काटने वाले ऊपर से नीचे के क्रम से बनाते हैं।

इन मंदिरो को बनाते समय पत्थर काटने वालो को किन समस्याओ का सामना करना पड़ता होगा, इसकी सूची बनाओ।

से योजना बनानी पड़ती थी। अधिकतर मंदिरो में *मण्डप* नाम की एक जगह होती थी। यह एक सभागार होता था, जहाँ लोग इकट्ठा होते थे।

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) मे महाबलिपुरम और ऐहोल को ढूँढो। इन शहरो मे पत्थरो से बने कुछ उत्कृष्ट मंदिर है। उनमें से कुछ यहाँ दिखाए गए हैं।

दाएँ: ऐहोल का दुर्गा मंदिर। यह लगभग 1400 साल पहले बनाया गया था।
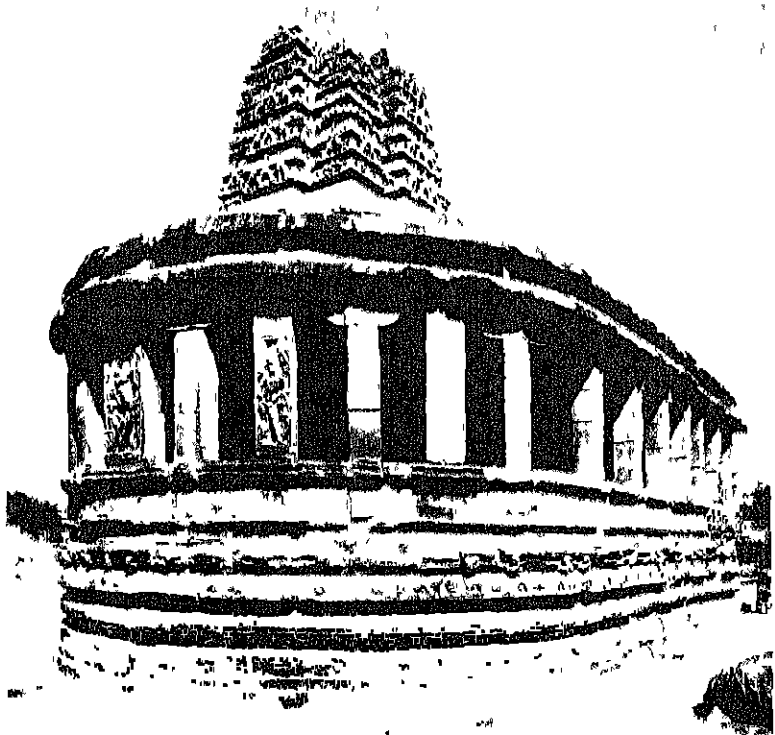
तथा मंदिर किस तरह बनाए जाते थे?

तथा मंदिरो को बनाने की प्रक्रिया मे कई अवस्थाएँ आती थीं। इसके काफी धन खर्च होता था। इसलिए आमतौर पर राजा या रानी ही इन्हें का निश्चय करते थे। पहला काम, अच्छे किस्म के पत्थर ढूँढ़कर खंडो को खोदकर निकालना होता था। फिर मंदिर या स्तूप के लिए विचार कर तय किए गए स्थान पर शिलाखडों को पहुँचाना होता था। पत्थरो को काट-छाँटकर तराशने के बाद खंभों, दीवारो की चौखटो, फ़र्शों ...न्तों का आकार दिया जाता था। इन सबके तैयार हो जाने पर सही जगहों हें लगाना काफी मुश्किल का काम था।
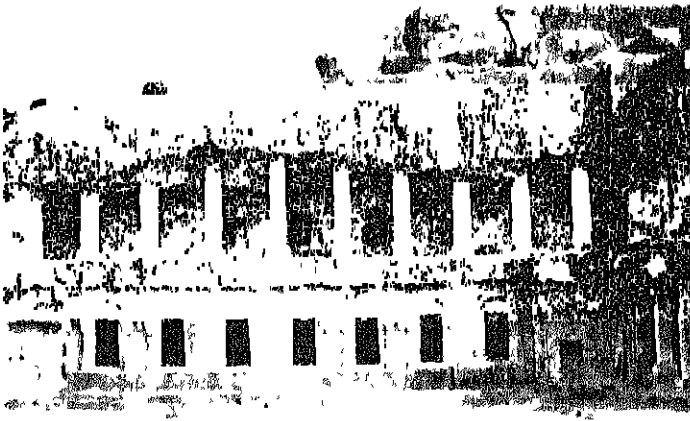
बाएँ: उड़ीसा का जैन मठ। एक पहाड़ी को खोद कर इस दो मंजिली इमारत को बनाया गया है। कमरों के प्रवेशद्वारों को ध्यान मे देखो। इनमे जैन भिक्षु रहते और ध्यान करते थे। *पृष्ठ 15 पर दिए चित्र (अध्याय 2) और यहाँ दिखाई गई गुफाओं में क्या अंतर है?*

नीचे: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से एक मूर्ति का चित्र। *क्या तुम यहाँ देख पा रहे हो कि किस प्रकार गुफाओ की खुदाई की गई होगी?*

...स तरह के शानदार ढाँचों का निर्माण करने वाले शिल्पकारों ...ारा खर्च संभवत: राजा-रानी ही देते थे। इसके ...क्त इन स्तूपो या मदिरों में आने वाले भक्त जो ... अपने साथ लाते थे उनसे इमारत की सजावट ...ाती थी। जैसे हाथी दांत का काम करने वाले ...ों के संघ ने साँची के एक अलंकृत प्रवेशद्वार ...ा) को बनाने का खर्च दिया था।

...नकी सजावट के लिए पैसे देने वालों मे व्यापारी, ..., माला बनाने वाले, इत्र बनाने वाले, लोहार-सुनार,
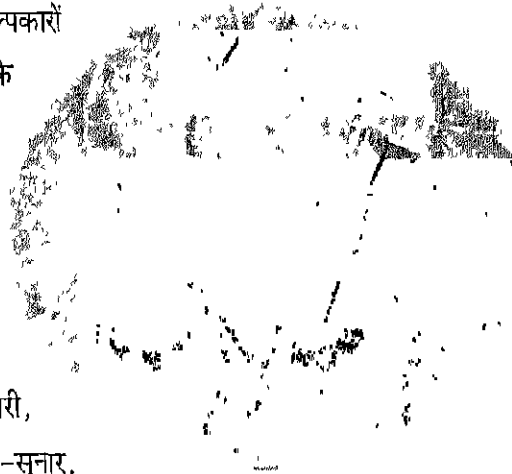
तथा ऐसे कई स्त्री-पुरुष शामिल थे जिनके नाम खंभों, रेलिंगों तथा दीवारों पर खुदे हैं, इसलिए जब तुम इन स्थानों को देखने जाओ तो याद रखना कि कितने सारे लोगों ने इन्हें बनाने और सजाने मे अपना योगदान दिया था।

अध्याय 9 के पृष्ठ 91 पर दिए चित्र की तरह तुम भी मंदिरों तथा स्तूपों के निर्माण के दौरान आने वाले विभिन्न चरणों का चित्र बनाओ।

चित्रकला

मानचित्र 7 मे अजंता को ढूँढ़ो। यह वह जगह है, जहाँ के पहाड़ों मे सैकड़ो सालों के दौरान कई गुफाएँ खोदी गईं। इनमें से ज़्यादातर बौद्ध भिक्षुओ के लिए बनाए गए विहार थे। इनमें से कुछ को चित्रो द्वारा सजाया गया था। यहाँ इनके कुछ उदाहरण दिए गए है। गुफाओ के अंदर अंधेरा होने की वजह से, अधिकांश चित्र मशालों की रोशनी में बनाए गए थे। इन चित्रो के रंग 1500 साल बाद भी चमकदार हैं। ये रंग पौधों तथा खनिजों से बनाए गए थे। इन महान कृतियों को बनाने वाले कलाकार अज्ञात हैं।

अजंता के चित्र

तुम्हें इनमें से प्रत्येक चित्र में जो दिखता है उसका वर्णन करो।

युग में कई प्रसिद्ध *महाकाव्यों* की रचना की गई। इन उत्कृष्ट रचनाओं में पुरुषों की वीरगाथाएँ तथा देवताओं से जुड़ी कथाएँ है।

क़रीब 1800 साल पहले एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य *सिलप्पदिकारम* रचना इलांगो नामक कवि ने की। इसमें कोवलन् नाम के एक व्यापारी कहानी है। वह पुहार में रहता था। अपनी पत्नी कन्नगी की उपेक्षा कर एक नर्तकी माधवी से प्रेम करने लगा। बाद मे, वह और कन्नगी पुहार कर मदुरै चले गए। वहाँ पांड्य राजा के दरबारी जौहरी ने कोवलन् पर का झूठा आरोप लगाया जिस पर राजा ने उसे प्राणदंड दे दिया। कन्नगी मभी भी उससे प्रेम करती थी, इस अन्याय के कारण दु:ख और रोष से गई। उसने मदुरै शहर का विनाश कर डाला।

सिलप्पदिकारम से लिया गया एक वर्णन

हाँ कवि ने कन्नगी के दु:ख का इस तरह वर्णन किया है :

"ओ मेरा दु:ख तो देखो, तुम मुझे साँत्वना तक नही दे सकते। क्या यह सही है कि विशुद्ध सोने से भी दर तुम्हारा शरीर बिना धुला, धूल से सना यूँ ही पड़ा है? यह कहाँ का न्याय है कि गोधूलि की इस स्वर्णिम ाभा में फूलमाला से ढके सुन्दर वक्ष:स्थल वाले तुम जमीन पर गिरे पड़े हो। मै अकेली, असहाय और हताश ाकर खड़ी हूँ। क्या ईश्वर नहीं है? क्या इस देश मे ईश्वर नहीं है? पर क्या उस स्थान पर ईश्वर रह सकते जहाँ के राजा की तलवार निर्दोष नवागन्तुक के प्राण ले लेती है? क्या ईश्वर नही है? नहीं है?"

एक और तमिल महाकाव्य, *मणिमेखलई* को करीब 1400 साल पहले ार द्वारा लिखा गया। इसमें कोवलन् तथा माधवी की बेटी की कहानी है। चनाएँ कई सदियों पहले ही खो गई थीं। उनकी पाण्डुलिपियाँ दोबारा भग एक सौ साल पहले मिलीं।

अन्य लेखक, जैसे कालिदास (जिनके बारे में तुमने अध्याय 11 में पढ़ा संस्कृत में लिखते थे।

मेघदूत का एक श्लोक

यहाँ उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना *मेघदूत* से एक अश दिया गया है। यहाँ एक विरही प्रेमी बरसात के बादल को अपना संदेशवाहक बनाने की कल्पना करता है।

देखो इसमे किस तरह कवि ने बादलो को उत्तर की ओर ले जाती ठंडी हवा का वर्णन किया है :

"तुम्हारे बौछारो से मुलायम हो उठी मिट्टी की भीनी खुशबू से भरे,

हाथियो की सास मे बसी

जगली गूलर को पकाने वाली,

शीतल बयार तुम्हारे साथ धीरे-धीरे बहेगी।"

क्या तुम्हे लगता है कि कालिदास को प्रकृतिप्रेमी कहा जा सकता है?

पुरानी कहानियों का संकलन तथा संरक्षण

हिंदू धर्म से जुड़ी कई कहानियाँ जो बहुत पहले से प्रचलित थीं, इसी काल मे लिखी गई। इनमें *पुराण* भी शामिल हैं। पुराण का शब्दिक अर्थ है प्राचीन या पुराण। पुराणो मे विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसे देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियाँ है। इनमे इन देवी-देवताओं की पूजा की विधियाँ दी गई हैं। इसके अतिरिक्त इनमें संसार की सृष्टि तथा राजाओ के बारे में भी कहानियाँ है।

अधिकतर पुराण *सरल संस्कृत श्लोक* मे लिखे गए हैं, जिससे सब उन्हें सुन और समझ सकें। स्त्रियाँ तथा शूद्र जिन्हे वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी वे भी इसे सुन सकते थे। पुराणो का पाठ पुजारी मंदिरों में किया करते थे जिसे लोग सुनने आते थे।

दो संस्कृत महाकाव्य *महाभारत* और *रामायण* लबे अर्से से लोकप्रिय रहे हैं। तुममें से भी कुछ बच्चे इन कहानियों से परिचित होगे। महाभारत कौरवों

और पाडवो के बीच युद्ध की कहानी है। इस युद्ध का उद्देश्य पुरु-वंश की राजधानी हस्तिनापुर की गद्दी प्राप्त करना था। यह कहानी तो बहुत ही पुरानी है, पर आज इसे हम जिस रूप में जानते हैं, वह करीब 1500 साल पहले लिखी गई। माना जाता है कि पुराणो और महाभारत दोनो को ही व्यास नाम के ऋषि ने सकलित किया था। महाभारत में ही *भगवद् गीता* भी है, जिसके बारे में तुमने अध्याय 10 मे पढ़ा था।

रामायण की कथा कोसल के राजकुमार राम के बारे में है। उनके पिता ने उन्हें वनवास दे दिया था। वन मे उनकी पत्नी सीता का लंका के राजा रावण ने अपहरण कर लिया था। सीता को वापस पाने के लिए राम को लड़ाई लड़नी पड़ी। वे विजयी होकर कोसल की राजधानी अयोध्या लौटे। महाभारत की तरह ही रामायण भी एक प्राचीन कहानी है, जिसे बाद में लिखित रूप दिया गया। सस्कृत रामायण के लेखक वाल्मीकि माने जाते हैं।

इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागो मे महाभारत और रामायण के भिन्न-भिन्न रूपातर लोकप्रिय हैं। इनके आधार पर नाटक, गीत और नृत्य परपराएँ भी उभरीं। पता करो तुम्हारे राज्य मे कौन-सा रूपातर प्रचलित है।

आम लोगों द्वारा कही जाने वाली कहानियाँ

आम लोग भी कहानियाँ कहते थे, कविताओ और गीतो की रचना करते थे, गाने गाते थे, नाचते थे और नाटकों को खेलते थे। इनमे से कुछ तो इस समय के आस-पास जातक और पचतंत्र की कहानियों के रूप मे लिखकर सुरक्षित कर लिए गए। जातक कथाएँ तो अक्सर स्तूपो की रेलिंगों तथा अजंता के चित्रों मे दर्शायी जाती थीं।

इनमें से एक कहानी अगले पृष्ठ पर दी गई है :

बंदर राजा की कहानी

एक समय बदरो का एक महान राजा हुआ। वह हिमालय पर गगा के किनारे अपने 80,000 अनुयायियो के साथ रहता था। इन सारे बदरों को एक खास आम के पेड़ के फल बहुत प्रिय थे। ये आम बड़े मीठे होते थे। इतने स्वादिष्ट आम धरातल पर नही उगते थे।

एक दिन एक पका हुआ आम गगा नदी में गिर कर बहते-बहते वाराणसी पहुँच गया। उस वक्त नदी मे वहाँ का राजा नहा रहा था। उसे वह आम मिला, उसे चखकर वह हैरान रह गया। उसने अपने राज्य के जगलो की देखभाल करने वालो से पूछा कि क्या वे इस आम के पेड़ को ढूँढ़ सकते है या नहीं। वे राजा को हिमालय की पहाडी पर ले गए।

वहाँ पहुँचकर राजा तथा उसके दरबारियों ने खूब आम खाए। रात मे राजा ने देखा कि बंदर भी पके आमो का मज़ा ले रहे हैं। राजा को यह बात बुरी लगी और उसने उन्हे मार डालने का फ़ैसला किया। बदरो के राजा ने अपनी प्रजा को बचाने की एक योजना बनाई। उसने आम के पेड की टहनियों को तोडकर, उन्हे आपस मे बाधकर, नदी पर एक पुल बनाया। इसके एक छोर को वह तब तक पकड़े रहा जब तक उसकी सारी प्रजा ने नदी को पार न कर लिया। पर इस प्रयास से वह इतना थक गया कि मरणासन्न होकर गिर गड़ा।

राजा ने जब यह सब देखा तो उसने बदर राजा का बचाने की काफी कोशिश की। पर वह सफल न हुआ। बदर राजा की मृत्यु पर उसे शोक हुआ और राजा ने उसे पूरा सम्मान दिया।

मध्यभारत मे भरहुत के एक स्तूप से मिले एक पत्थर पर उकेरे गए चित्र में इसे दिखाया गया है।

क्या तुम बता सकते हो कि इसमें कहानी का कौन-सा हिस्सा दिखाया गया है? यह हिस्सा क्यों चुना गया होगा?

विज्ञान की प्रगति

इसी समय गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने संस्कृत में *आर्यभट्टीयम* नामक पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने लिखा कि दिन और रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर काटने की वजह से होते है, जबकि लगता है कि रोज़ सूर्य निकलता है और डूबता है। उन्होने ग्रहण के बारे में भी एक वैज्ञानिक तर्क दिया। उन्होंने वृत्त की परिधि को मापने की भी विधि ढूँढ़ निकाली, जो लगभग उतनी ही सही है, जितनी कि आज प्रयुक्त होने वाली विधि।

शून्य

अकों का प्रयोग पहले से होता रहा था, पर अब भारत के गणितज्ञो ने शून्य के लिए एक नए चिह्न का आविष्कार किया। गिनती की यह पद्धति अरबो द्वारा अपनाई गई और तब यूरोप मे भी फैल गई। आज भी यह पूरी दुनिया मे प्रयोग की जाती है।

[illegible]

कागज

कागज आज हमारे रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा बन गया है। जो किताबे हम पढ़ते है वे कागज पर छपी होती हैं, उसी तरह लिखने के लिए भी हम कागज का ही उपयोग करते है। कागज का आविष्कार करीब 1900 साल पहले काई लून नाम के व्यक्ति ने चीन में किया। उसने पौधो के रेशो, कपड़ो, रस्सियो और पेड की छालो को पीट-पीट कर लुगदी बनाकर उसे पानी मे भिगो दिया। फिर उस लुगदी को दबाकर उसका पानी निचोड़ा और तब सुखा कर कागज़ बनाया। आज भी हाथ से कागज बनाने के लिए इसी विधि को अपनाया जाता है।

कागज़ बनाने की तकनीक को सदियो तक गुप्त रखा गया। करीब 1400 साल पहले यह कोरिया तक पहुँची।

इसके तुरत बाद ही यह जापान तक फैल गई। करीब 1800 साल पहले यह बगदाद मे पहुँची। फिर बगदाद से यह यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अन्य भागो में फैली। इस उपमहाद्वीप मे भी कागज की जानकारी बगदाद से ही आई।

[illegible]

उपयोगी शब्द

स्तूप
मदिर
चित्रकला
महाकाव्य
कहानी
पुराण
गणित
विज्ञान

कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

- स्तूप निर्माण की शुरुआत (2300 साल पहले)
- अमरावती (2000 साल पहले)
- कालिदास (1600 साल पहले)
- लौह स्तभ, भितरगाँव का मदिर, अजता की चित्रकारी, आर्यभट्ट (1500 साल पहले)
- दुर्गा मदिर (1400 साल पहले)

आओ याद करें

1. निम्नलिखित का सुमेल करो।

स्तूप	देवी-देवता की मूर्ति स्थापित करने की जगह
शिखर	टीला
मण्डप	स्तूप के चारों तरफ़ वृत्ताकार पथ
गर्भगृह	मदिर में लोगो के इकट्ठा होने की जगह
प्रदक्षिणापथ	गर्भगृह के ऊपर लबाई मे निर्माण

2. खाली जगहो को भरो :

(क) ———— एक बड़े गणितज्ञ थे।

(ख) ———— मे देवी-देवताओ की कहानियाँ मिलती हैं।

(ग) ———— को संस्कृत रामायण का लेखक माना जाता है।

(घ) ———— और ———— दो तमिल महाकाव्य हैं।

आओ चर्चा करें

3. धातुओं के प्रयोग पर जिन अध्यायो मे चर्चा हुई है, उनकी सूची बनाओ। धातु से बनी किन-किन चीजों के बारे मे चर्चा हुई है या उन्हे दिखाया गया है?

4. पृष्ठ 130 पर लिखी कहानी को पढ़ो। जिन राजाओ के बारे में तुमने अध्याय 6 और 11 मे पढ़ा है उनसे यह बदर राजा कैसे भिन्न या समान था?

5. और भी जानकारी इकट्ठी कर किसी महाकाव्य से एक कहानी सुनाओ।

आओ करके देखें

6. इमारतो तथा स्मारको को अन्य प्रकार से सक्षम व्यक्तियो (विकलाग) के लिए और अधिक प्रवेश योग्य कैसे बनाया जाए? इसके लिए सुझावो की एक सूची बनाओ।

7 कागज़ के अधिक से अधिक उपयोगो की एक सूची बनाओ।

8. इस अध्याय में बताए गए स्थानो मे से तुम्हे किसी एक को देखने का मौका मिले तो किसे चुनोगे और क्यों?

तिथियों पर एक नज़र

इस पूरी पुस्तक मे हमने वर्ष 2000 को शुरुआती बिदु के रूप मे रखकर घटनाओ/प्रक्रियाओं के होने की अनुमानित तिथियों की जानकारी दी है। इसलिए इन तिथियों के पहले करीब या लगभग लिखा गया है।

पर अन्य पुस्तके, जो तुम पढ़ते होगे, उनमे तिथियाँ अलग तरह से लिखी होगी।

- जैसे कि पुरापाषाण युग (अध्याय 2) के लिए तिथियाँ लाखों वर्ष पहले के रूप मे लिखी गई होगी।
- मेहरगढ़ (अध्याय 3) मे कृषि तथा पशुपालन की शुरुआत की तिथि लगभग 6000 ई॰पू॰ दी गई होगी।
- हड़प्पा के नगरो का विकास लगभग 2700 से 1900 ई॰पू॰ के बीच
- ऋग्वेद की रचना का काल लगभग 1500 से 1000 ई॰पू॰ के बीच
- महाजनपदो तथा गगा के मैदानी इलाको मे नगरो का विकास तथा उपनिषद्, जैनधर्म तथा बौद्धधर्म से जुड़े विचारो का उदय, लगभग 500 ई॰पू॰
- पश्चिमोत्तर मे सिकन्दर का आक्रमण, लगभग 327-325 ई॰पू॰
- चन्द्रगुप्त मौर्य का राजा बनना लगभग 321 ई॰पू॰
- अशोक का शासन काल लगभग 272/268 ई॰पू॰ से 231 ई॰पू॰ के बीच
- सगम साहित्य की रचना लगभग 300 ई॰पू॰—300 ई॰
- कनिष्क का शासन लगभग 78-100 ई॰
- गुप्त साम्राज्य की स्थापना लगभग 320 ई॰
- वल्लभी के परिषद् में जैन साहित्य का सकलन, लगभग 512/521 ई॰
- हर्षवर्धन का शासन 606-647 ई॰
- चीनी यात्री श्वैन त्सांग का भारत आगमन 630-643 ई॰
- पुलकेशिन II का शासन, 609-642 ई॰

कुछ घटनाओ के लिए, जैसे कि अशोक के शासन की शुरुआत की तिथि के रूप में तुम्हें एक से अधिक तिथियाँ देखने को मिल सकती हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इतिहासकार इस बात पर एकमत नही हो पाए है कि सही तिथि क्या है।

अगले साल

अगले साल हमारे अतीत के बारे में तुम और अधिक पढ़ोगे। इसमें तुम अगले हजार साल के इतिहास के बारे मे पढ़ोगे, जिसकी शुरुआत आठवी सदी से होगी। इसमें तुम :

- देखोगे कि पाण्डुलिपियों, अभिलेखो तथा पुरातात्त्विक वस्तुओं, मुख्यतः इमारतो के अवशेषों के अलावा, इतिहास जानने के और भी स्रोत होते हैं।
- नए राजाओं तथा राज्यों के बारे में पढ़ोगे, जिसमें मुगल साम्राज्य शामिल होगा।
- स्थापत्य-कला के बारे में और भी जानोगे, जिसमें मंदिरो, मस्जिदों, बगीचो, किलों तथा अन्य इमारतों के बारे में जानकारी होगी।
- शहरों के बारे में पढ़ोगे, जिसमें शिल्पकारो, व्यापारियों तथा नगरीय-संस्कृति के विषय में जानकारी होगी।
- शिकारी-संग्राहकों, पशुपालकों तथा कृषकों के बारे में पढ़ोगे।
- तुम यह भी पढ़ोगे कि किस प्रकार धार्मिक-आस्थाओं तथा उनके व्यवहारिक स्वरूपों मे परिवर्तन आए।
- संगीत, कविता तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं के लिए किस तरह नई भाषाओ का प्रयोग हुआ।

ये सब पढ़ने के दौरान तुम पाओगे कि इतने सारे नए परिवर्तनों के बावजूद अतीत के साथ सम्पर्क का सूत्र निरतर बना रहा। ध्यान दो क्या बदला और क्या अपने पुराने स्वरूप मे रह गया।

मानचित्र: 8
भारत का राजनीतिक मानचित्र
जम्मू व
कश्मीर
हिमाचल
प्रदेश
पजाब
चीन
उत्तराँचल
हरियाणा
दिल्ली
नेपाल
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
असम
बिहार
मणिपुर
गुजरात
मध्य प्रदेश
झारखड
पश्चिम
बगाल
बाग्लादेश
मिजोरम
उड़ीसा
महाराष्ट्र
अरब सागर
आंध्र प्रदेश
बगाल
की खाड़ी
गोवा
कर्नाटक
तमिलनाडु
लक्षद्वीप
श्री लका
रेखाचित्र
पैमाना नही दिया गया है।
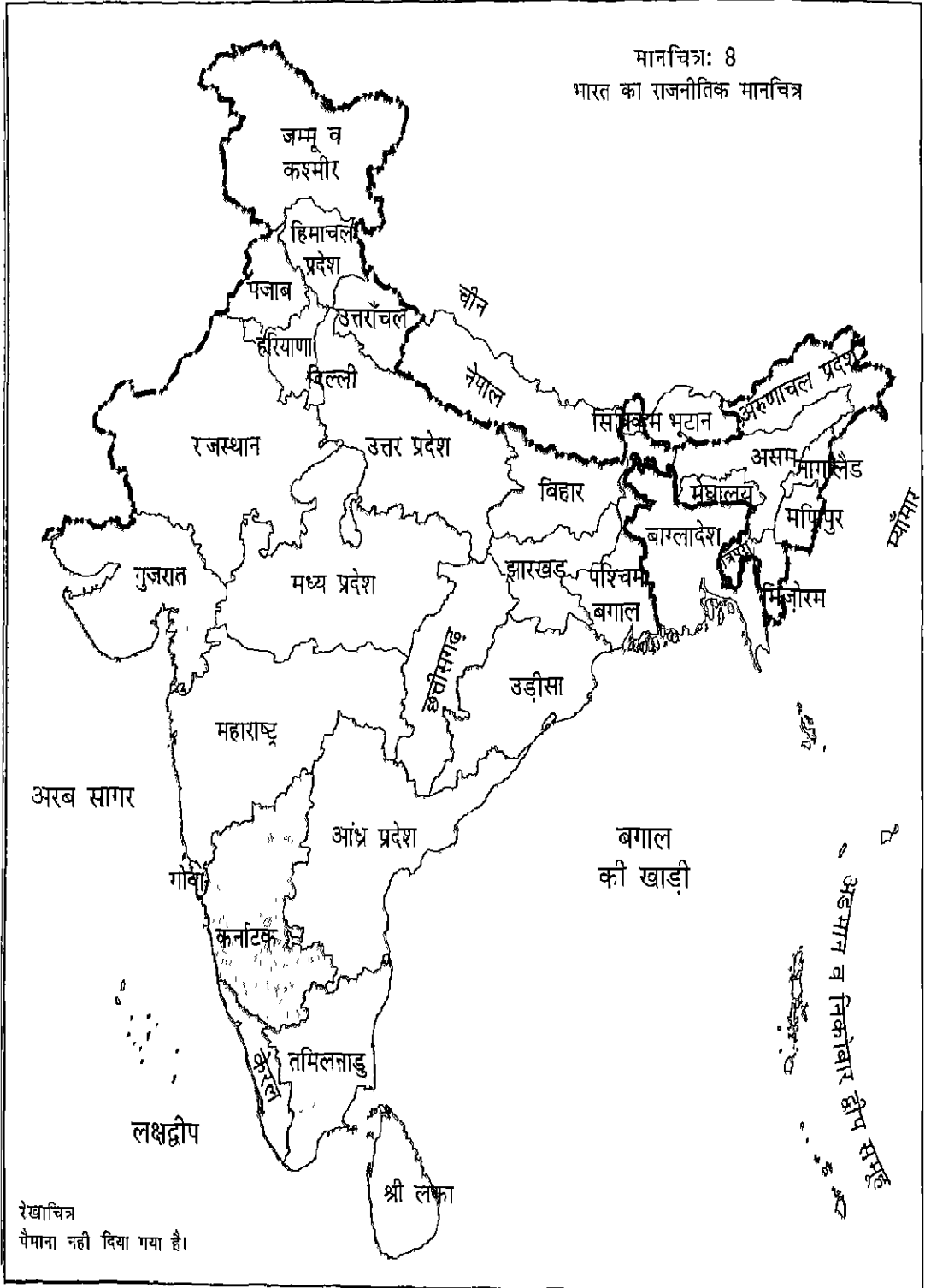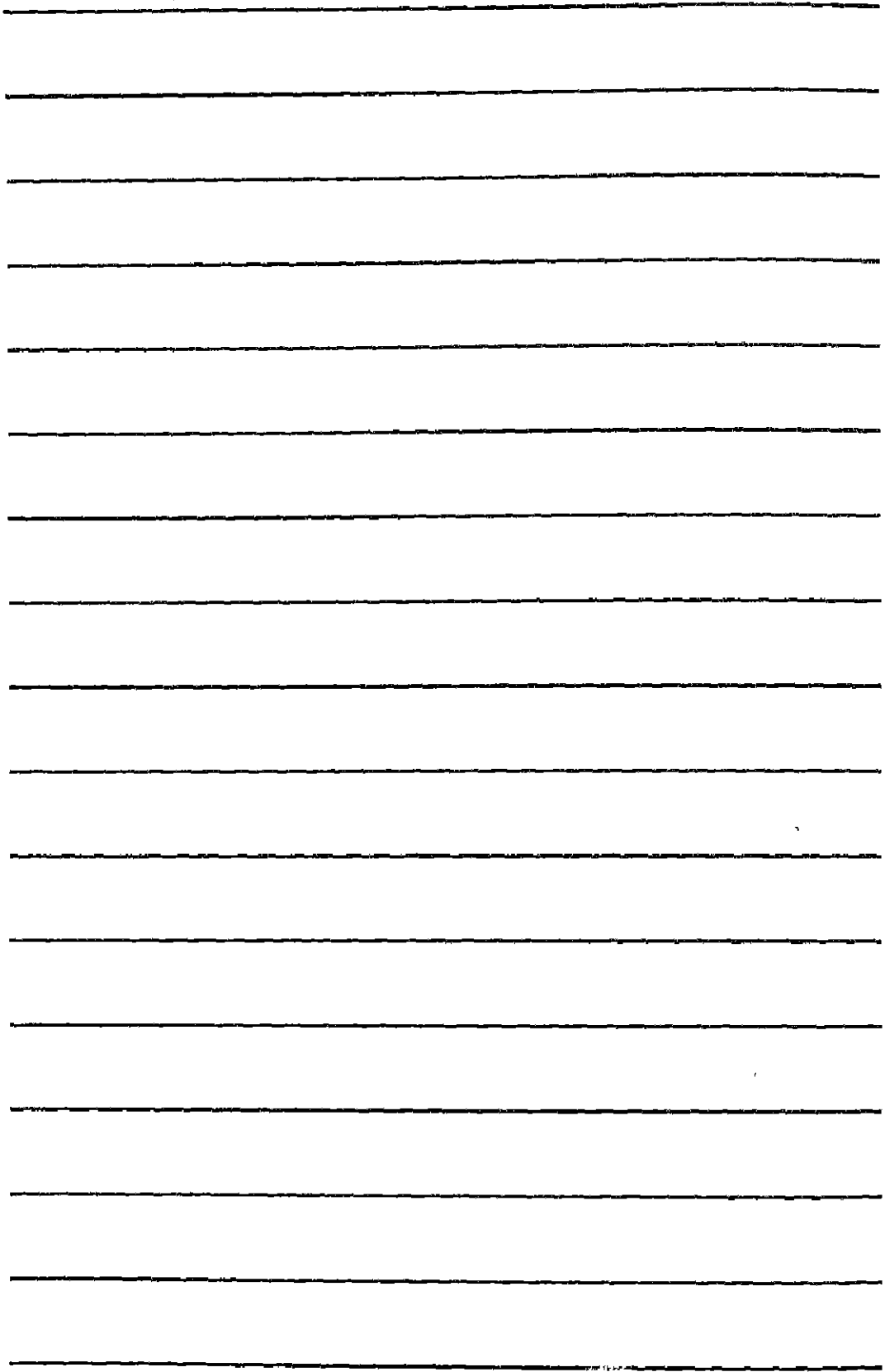
degree of hearing loss), previous language development was an important factor affecting the achievement. This factor called as ' cognitive entry behaviour ' needed to be partialled out, hence " Analysis of Covariance " was used to find out the significance of the difference between the post tests for the different groups.

By the application of ANACOVA, the influence of the uncontrolled variable is usually removed by a simple linear regression method. ANACOVA represents an extension of analysis of variance to allow for the correlation between initial and final score. It is useful for various reasons, (1) it is quite difficult though not impossible to equate the groups at the beginning. (2) Through covariance, one is able to do adjustments in final or in terminal scores which will allow for differences in initial variable.

4.9.1 Significance of the difference between the means of post tests for the speech reading test.

: The scores of the pre test were denoted by 'x' and that of the post tests by 'y'. The product was denoted by ' xy '. For the analysis of co-variance among the group mean sum of the squares was denoted by SS. Within the groups sum of the squares (SS) for the x test, y test and for the products xy were

calculated. Similarly the adjusted sum of squares for the ' y ' test $SS_{y,x}$ were also calculated.

Table 6.a and 6.b revealed the details of the ANACOVA.

SUMMARY OF ANALYSIS OF COVARIANCES

Table 6.a Speech reading Group

Source of variance	dt.	SS_x	SS_y	SS_{xy}	SS_{y-x}	$M.S_{y-x}$ (Vy-x)	SD_{y-x}
Among the means	2	476.43	5443.71	1248.70	3366.36	1683.18	-
Within the group	25	2829.02	6963.12	2570.82	4626.73	185.08	13.60
Total	27	3305.45	12406.83	3819.52	7993.29	-	-

Table 6-b Auditory Training Group

Source of variance	df.	SS_x	SS_y	SS_{xy}	SS_{y-x}	$M.S_{y-x}$ (V-y-x)	$S D_{y-x}$
Among the means	2	1576.73	12473.7	3701.13	3346.22	1673.11	-
Within the groups	23	3551.12	5934.03	1322.39	5441.59	236.59	15.38
Total	25	5127.85	18407.79	7023.52	8787.81	-	-

The ' F ratio was calculated using the following formula.

$$F_{y.x} = \frac{\text{Among the means variance}}{\text{Within the groups' variance}}$$

$$F_{y.x} = \frac{1683.18}{185.08} = 9.09$$

$F_{y.x}$ = 9.09 for speech reading group.

This obtained 'F' ratio was compared with the **limits** of significance of the 'F' ratio (20), The following table indicates the details.

The significance of the f ratio for the degree of freedom dt 2/25

Table 7.a — Speech Reading Group

Obtained f ratio	Limits of significance 0.05 level	Limits of significance 0.01 level	Significance
9.09	3.38	5.57	Highly significant at 0.01 level

Similarly the f ratio was calculated for the auditory group; using the same formula.

Exm. $F_{y.x} = \frac{\text{Among the means variance}}{\text{Within the groups variance}}$

$$F_{y.x} = \frac{1673.11}{236.59} = 7.072$$

$$F_{y.x} = 7.072$$

The obtained ' f ratio ' was compared with the limits of significance of the ' f ratio ' (20)

The significance of the ' f ratio ' for the degrees of freedom (df) 2/25.

Table 7.b — Auditory Group

Obtained f ratio	Limits of significance 0.05 level	Limits of signifi- 0.01 level	Significance
7.072	3.42	5.66	Highly significant at 0.01 level

'f' ratio values appeared to be highly significant, at 0.01 level for the speech reading group as well as for the auditory training group, which can be concluded that some differences between the means of the post tests were significant. To decide which difference between the means appeared to be significant, the means of the post test were adjusted. For such adjustment the regression coefficient for within the groups was to be calculated by using following formula.

$$\text{'b within'} = \frac{(xxy)^2}{(xx2)} = \frac{\text{Within the groups SS for xy}}{\text{Within the groups SS for x}}$$

'b within '

$$\text{for speech reading group} = \frac{2570.82}{2829.02} = 0.909$$

'b within '

$$\text{for auditory training group} = \frac{1322.39}{3551.12} = 0.37$$

With the help of 'b within' the adjusted means for y (post test) were calculated, by using the formula.

$$M\ adj = My - b\ (Mx - Gmx)$$

Where m_y & m_x, and G_{mx} were means for the post test (y), pre test (x) and the general mean for x.

Table 8 a and 8b will show the adjusted means for the post test (y)

After adjusting the means for the post test (y) the standard errors of the differences between the adjusted means of the post tests (y) were calculated using the formula

$$SE_{D_m} = SD_{y-x} \sqrt{\frac{1}{X_1} + \frac{1}{X_2}}$$

From these standard errors of the differences between the adjusted means the 't' values were calculated by using the formula.

$$t \text{ value} = \frac{\text{Difference between the means}}{\text{standard error of the difference between the means.}}$$

These obtained 't' values were compared with the limits of significance of the t values, for df 25.

The table 9a and 9 b gives the details.

Adjusted Means for the post tests (y)

Table 8-a — Speech Reading Group

Groups	N	Mx	My	Adjusted mean
Control	10	4.40	6.00	9.40
Experimental Nasik	10	13.40	37.10	32.32
Experimental Kolhapur	9	6.44	31.44	32.99
General Mean	-	8.14	24.62	24.62

Table 8-b — Auditory Training Group

Groups	N	Mx	My	Adjusted Mean
Control	10	7.10	8.00	10.54
Experimental Nasik	9	24.56	57.22	53.26
Experimental Kolhapur	8	10.50	44.63	45.90
General Means	-	13.93	35.26	35.26

Significance of the differences between adjusted means.

Table 9.a — Speech reading Group

Difference of means between the groups	Difference between the adjusted mean	SE Dm	df.	Obtained t values	Limits of significance 0.05 level	0.01 level
Kolhapur Pune	23.59	6.25	25	3.77 +	2.06	2.79
Nasik Pune	23.12	6.08	25	3.80 +	2.06	2.79
Nasik Kolhapur	0.47	6.25	25	0.08 □	2.06	2.79

Table 9. b — Auditory Training Group

Difference of means between the groups	Difference between the adjusted mean	SE Dm	df.	Obtained t values	Limits of significance 0.05 level	0.01 level
Kolhapur Pune	35.36	7.30	23	4.84 +	2.07	2.81
Nasik Pune	42.72	7.07	23	6.04 +	2.07	2.81
Nasik Kolhapur	7.36	7.47	23	0.99 □	2.07	2.81

\+ Highly significant at 0.01 level

□ Not significant at 0.05 level.

Above tables revealed that the difference between the adjusted means of the post tests of Kolhapur and Pune and Nasik- Pune were highly significant at 0.01 level which indicated that single modality approach worked effectively over multisensory approach. The difference between the adjusted means of the post test of Nasik- Kolhapur was nonsignificant at 0.05 level; that means experimental group performed equally well and the built in differences between the schools did not affect on the language development scores.

CHAPTER - V

Summary, Conclusions and Recommendations

Effect of single modality stimulation upon speech and language development of hard of hearing individuals was studied on forty subjects. This chapter highlights following points on this topic.

1) Need and significance of the present study,
2) Statement of the problem,
3) Objectives of the study,
4) Procedure,
5) Major findings,
6) Conclusions,
7) Recommendations.
8) Suggestions for further research.

5.1 Need and significance of the present study : There have been very few research activities in the field of special education. Hence the progress of handicapped children is often measured on the relative terms. Although, individual differences due to onset of handicap; degree of handicap and environmental factors make any handicap category as a heterogenous group; there have been very few attempts to study these factors. Similarly, special school curriculum has never been made compatible with normal

school curriculum. Hearing impaired children significantly lag behind in their functional language development by two to three years (1,2), but the informal survey revealed the lag is more than three years. There does not exist any language skill norm developed for these children, hence children are often underestimated. Similarly, individual hearing aid is considered as an integral part of language development by the teachers and by the parents and they also feel that " significant language development is only achieved by the good hearing aid ". There are good number of hearing impaired individuals who are poor candidate for amplification; and those children can do without the hearing aid. The present study has demonstrated that children can be taught without any auditory gadget. Profound hearing loss individuals can do significantly well without hearing aids, on language development skills. Spending minimal amount on various electronic gadgets will bring a cost effectiveness in school management. Children need a structured programme and a good follow up can bring desired effect in hearing impaired children, from special schools. Children can learn language skills effectively and in comparatively short duration, if proper modality stimulation programme is implemented.

Statement of the problem : single modality (visual or auditory) stimulation to its maximum capacity should reflect positively upon speech and language performance of hearing impaired individuals.

Objectives of the study : (1) To measure hearing loss of children participated in the project.

(2) To form a homogeneous group in the classroom with reference to hearing sensitivity along with chronological age.

(3) To evolve a scale for measurement of language skills.

(4) To find out individual needs of the student and to plan an individualized programme of language development.

(5) To identify speech problems and to grade quality of speech and voice.

PROCEDURE : This project aimed at a comparative study of single modality stimulation (visual or auditory) vs multimodality stimulation for language development of hearing impaired individuals. 10 children for auditory training group as well as for speech reading group were selected from Mai Lele Shravan Vikas Vidyalay, Nasik and Vinaykumar Lohia Muk Badhir Vidyalay, Kolhapur. Children from Chinchwad Muk Badhir Vidyalay, Nigadi, Pune were treated as a control group. These children were selected and were matched with the experiemental

group. A self evolved tool for language assessment was used in this project.

The language development of each hearing impaired child was assessed prior to the project and after the completion of the project; in order to judge the improvement in language skills and usage.

Formal training programme of language stimulation was implemented during the period of December 1989 to August 1990. A combined approach (structured approach + natural approach). with heavy emphasis on structured approach, was used for language stimulation programme. The outcome of the project was treated qualitatively and quantitatively. Quantiative evaluation was done using 't' test as well as ANACOVA test.

5.5 MAJOR FINDINGS : Children demonstrated significant language development under this project. Their sponteneous language improved remarkably. They started using complete sentence form and also started using enriched vocabulary. Children learnt to comprehend who? What?When?Whom? questions and also learnt to respond appropriate to questions asked Children from speech reading group and children from auditory training group did equally well on

the language test. Their language development was significant. All the special schools have a claim of adopting " natural approach " for language stimulation; but it seems that structured approach or combined approach (structured approach natural approach) works better than natural approach; however, comparative study of two approaches was not the scope of this project.

Single modality stimulation for language development works effectively and it appears to be superior to multimodality approach. In multimodality approach a weightage needs to be defined for tactile, visual and auditory stimulation (TVA approach) as per the requirements of a child; but it is seldom defined. Single modality approach concentrates on only one channel and is used to its maximum capacity to elicit positive responses. Similarly children do have modality preference and that needs to be identified. It can be assumed that children having residual hearing can be taught to use auditory channel to its maximum capacity, since, our language is an auditory phenomenon, one designed for hearing and not for viewing (5). Children with profound hearing loss are better candidates for speech reading. But there are few children with good amount of residual hearing, who exhibited poor candidacy for

amplification due to some physiological factors, such as poor dynamic range, recruitment, persistant discharging ears. These children were considered for visual modality stimulation.

5.6 Conclusions : The project has demonstrated that hearing impaired children can be taught using single modality stimulation approach. Single modality stimulation can elicit good amount of language development. Auditory modality and visual modality stimulation have similar type of language development. If individualized approach is used in modality stimulation as well as in structured language stimulation programme a positive result could be achieved in a short duration. There are good number of hard of hearing individuals in India, who are without hearing aids, they can be taught effectively with speech reading approach.

Gajendragadkar, S.N. (21) report revealed that there are about 2.5 million deaf people in India. The total number of handicapped persons is about 10% of the population and this increases by about 40,000 persons every year. The facilities for deaf include 117 special schools, 18 speech and hearing center, 13 special employment exchanges

and six vocational rehabilitation centers. The recent report on " Education of the deaf in India " by Roy R (3) has also highlighted similar information. Although, ' early identification and early intervention programme " is emphasized in the literature, it is far from reality. So the children are deprived from language stimulation programme for good number of years. In present situation, when special schools have poor funding, and intervention programme begins at the age of six and above single modality stimulation may be considered as a recommended approach for language stimulation.

Recommendations : (1) Hearing impaired children have modality preference, and the same can be identified. (2) Children who have profound hearing loss can be considered for speech reading stimulation. (3) Children who have dislikes towards amplification due to poor dynamic range, recruitment, discharging ears need to be identified. (4) Good amount of residual hearing may not contribute to language development due to reduction in ganglion cells (12), And as Daniel Ling (9) has stated that audiogram provides no information on the quality of audition present
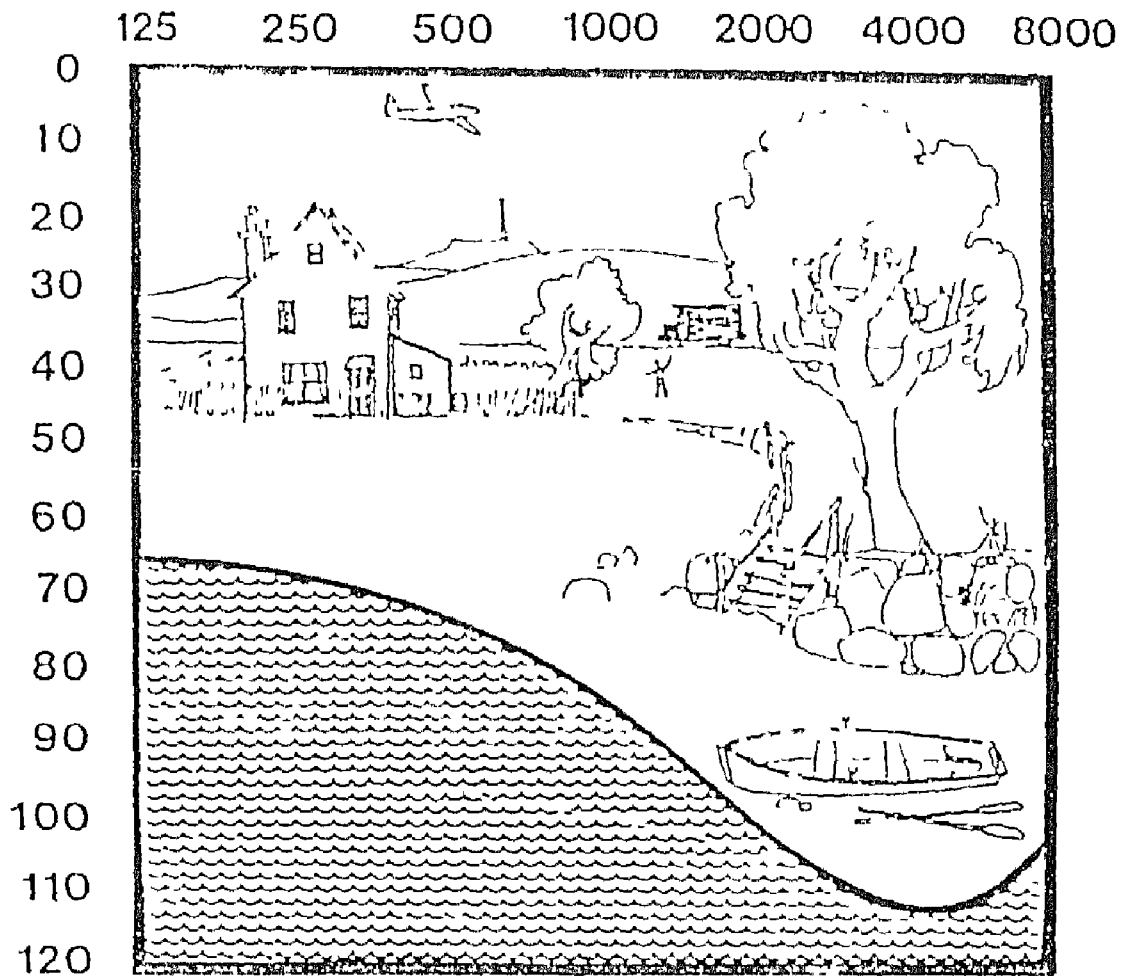
An audiogram in which the threshold is compared to a shoreline. The contour of the shoreline tells nothing about the quality of water; similarly, the threshold curve yields no information about the quality of hearing present at suprathreshold levels. (Daniel Ling, 1972)

at these levels. Some children may not benefit with hearing aids, if so, they should be recommended not to use hearing aid.

(5) At the time of intervention programme, multi-sensory approach can be implemeted but after a year of training, the cases need to be reevaluated and child's modality preference should be identified.

(6) This approach is not applicable to the hearing impaired children, identified prior to the critical age of language learning. For these children multisensory approach is strongly recommended, however, if the child fails to demonstrate language development then he should be subject to single modality stimulation.

Formation of homogenous group with reference to hearing loss along with chronological age, in the classroom is strongly recommended.

Suggestions for further research

(1) Present project was designed for one academic year, a longitudinal study on measurement of effect of single modality stimulation is recommended.

(2) The study did not take into account development of speech and correction of speech by single modality, further research on speech is also

recommended.

(3) A comparative study of natural approach and structural approach for language and training is essential.

(4) A comparative study of language development of hearing impaired children in mainstream programme and in special school is recommended.

(5) Development of a standardized language evaluation test is also recommended.

REFERENCES :

1. Webster, Alec; Wood, David. Children with hearing difficulties. Pub : Cassell Educational Ltd., London, 1989.

2. Ross, Mark. Hard of hearing children in regular schools; Pub : Printice Hall Inc. 1982.

3. Roy, Rekha, Education of the deaf in India. J. of Indian Speech and hearing association, 1990, 7, 7-12.

4. Davis, Hallowell; Silverman, Richard. Hearing and Deafness. Pub : Holt, Rinehavt and Winston, 1970.

5. Pollack, Michael. Amplification for the hearing impaired. 2 nd Ed. Pub : Grune and Stratton, New York, London. 1980.

6. Katz, Jack. Handbook of clinical audiology. Ed. Pub : William and Wilkins, Baltimore, 2 nd Ed. 1979.

7. Katz, Jack. The effect of conductive hearing loss on auditory function. Asha, 1978, 879-885.

8. Alpiner, Jerome, G. Handbook of Rehabilitative Audiology. Pub : Williams and Wilkins. 2 nd Ed. Baltimore 1982.

9. McAnally, Patricia L; Rose, Susan; Quigley, Stephen P. Language learning practices with deaf children. Pub : College Hill Pub. Little Brown Company. Boston 1987.

10. Jeffers, Janet; Barley, Margaret. Speech reading, Pub : Charles C Thomas. Spring field 1978.

11. Sanders, Derek. Aural Rehabilitation. Pub : Prentice Hall Inc. 1971.

12. Shucknecht, O. J.: Ganglion cell populations in normal and pathological human cochleae, Implication for cochlear implantation.
Laryngoscope, 1978, 88 :8, 1231- 1246.

13. Sims. Donald G. Walter, Gerald.G. Whitchead, Robert O. L. Deafness and Communication. Assessment and Training, ed. Williams and Wilkins, Baltimore 1982.

14. Proctor A; Goldstein M.H. Development of lexical comprehension in a profoundly deaf child using a vibrotactile communication aid. Language, speech and hearing services in schools, 1983, 14, 138-149.

15. Ling, Daniel, Speech and the hearing impaired child: Theory and practice. The Alexander Graham Bell Association for the Deaf, Inc. 1 st Ed. 1976.

16. Lahey, Margaret, Language disorders and language development. Williams and Wilkins, Baltimore, 1988.

17. King C.H. National Survey of language methods used with hearing- impaired students in the United States. American Annals of the deaf, 1984, 129, 311-316.

18. Goldstein, Dan. The Hearing impaired child, NFER, Nelson, England, 1989.

19. Northern, Jerry ; Downs, Marion P. Hearing in Children 2 nd Ed. Publ Williams and Wilkins, Baltimore, 1978.

20. Garrette, Henry E. Statistics in Psychology and Education. Pub : Vakils, Fetter and Simon Ltd., Bombay 1966.

21. Gajendragadkar, S. N. (Ed.) Disabled in India : Research and Documentation center in social Welfare and Development, New Delhi, 1983.

22. Myklebust, Helmer R. The psychology of deafness. Grune and stratton, New York, 1960.

23. Best, Rohn W; Kahn, James V. Research in Education 6 th Ed. Prentice- Hall of India. 1989.

24. Lynch, Mervin D. Huntsberger, David V. Elements of statistical Inference for education and Psychology. Pub. Allyn and Bacon Inc. Boston. 1976.